नील गगन के प्रांगण से

लोक संस्कृति और साहित्य

प्राचीन भारत के मिथ एवं किंवदंतियां

नील गगन के प्रांगण से

मायाक्षी चट्टोपाध्याय

अनुवाद

विपिन कुमार

चित्रांकन

तापसी घोषाल

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

अनुक्रम

लेखक की कलम से

तारों भरी शांत शाम में दादी मां के चरणों में बैठकर बचपन में मैं प्रतिदिन उनकी अद्भुत कहानियां सुना करती थी। उनकी कहानियां जीवन की गौरवगाथा, समय की लीला एवं प्रकृति की लयात्मकता का बखान करतीं। आशा, विश्वास एवं साहस से भरी वे कहानियां नई ऊंचाइयों को छूने एवं अथाह गहराइयों में डुबकी लगाने को प्रेरित करतीं। वह भी खतरा एवं मृत्यु के भय से परे होकर, क्योंकि रात की कालिमा भले ही भयंकर हो, सुबह का उजाला होता ही है। सूरज सुनहली छटा के साथ उभरता है और एक नए दिन का जन्म होता है।

समय बीतता रहा पर मेरी इन कहानियों के प्रति उत्सुकता बनी रही। इनका एक-एक क्षण स्पंदन करता रहा, मैं मुग्ध हो सुनती रही, मानो किसी ने जादू कर दिया हो। ऊंचाइयों को छूने को आतुर मेरा दिल स्वर्ग के अद्भुत वैभवपूर्ण दुनिया में पहुंच जाता। छोटे-छोटे चकेवा की तरह चहकती मैं अपने सोच में मग्न, आसमान की गहराइयों में उतर जाती, खुशी के एक ऐसे धरातल पर जहां खिले फूल के लिए मधुमक्खियों का प्यार तपकर चमक उठता है।

परंतु एक मनहूस दिन आया और मेरी दादी मां अलग दुनिया में चली गई, जहां से कोई वापस नहीं आता। उसके साथ ही मेरे परियों वाला स्वप्न धुंधला पड़ गया, मेरी मन की आशाओं का अंत हो गया और दुनिया की कठोर सचाइयों से दो चार होने को मैं अकेली रह गई।

समय बीता, जिंदगी बदली और मैं पहुंच गई दूर एक ऐसी अलग दुनिया में जहां से घर उतना ही दूर था, जितना वो सब जो मुझे प्यारा था, जिसकी मुझे चाहत थी। अकेली खोई-सी, जाड़े के एक दिन जब मैंने खिड़की से बाहर झांका तो सामने थी बर्फ एवं उसी की तरह जमा अंधेरा। मेरे अंदर भी उतने ही जमे हुए, ठहरे हुए दृश्य थे। खिड़की के पास बैठी शून्यभाव से दिन का बीतना देखती रही। किसी भिन्नता अथवा नएपन की उम्मीद न रही। एक दिन यकायक मैंने बर्फीली

झाड़ियों से एक हरी लता को निकलते देखा। अंधकार से प्रकाश में आने का अथक संघर्ष करता हुई।

दादी मां की भूली-बिसरी कहानियां बिजलोका की तरह मेरे जेहन में कौंध गई। आशा एवं साहस का संदेश लिए उसने मेरे हृदय को उजाला से भर दिया। ऐसा प्रतीत हुआ मानो मैं वर्षों पीछे चली गई तथा समय ठहर गया...दादी मां के चरणों में...फिर वही सितारों भरी शांत शाम और अद्‌भुत कहानियां।

मैं अपने नन्हें दोस्तों के लिए इन कहानियों को लिखने खिड़की के पास बैठ गई, मानो यह सब एक स्वप्न हो। इस उम्मीद से कि सपनों के ये बीज उनके अंदर अंकुरित होंगे और पनपेंगे ताकि ये बच्चे सपनों का आनंद ले सकें—साथ ही यथार्थ का आनंद भी ले सकें, जो जीवन के रहस्यों को छिपाए बैठे हैं।

इन कहानियों की बाहरी सादगी को यदि खुले दिल से परखें, तो पाएंगे कि हम वर्तमान के समान युवा एवं अतीत के समान पुरातन हैं। और यदि जिंदगी के रहस्यों एवं विचित्रताओं को मानें तो सब कुछ संभव है—बशर्ते कि हम में विश्वास, आशा एवं साहस हो।

अम्मा, हमारी दादी मां, हमारा जीवन-प्रकाश थीं। सूर्य के सुनहले किरण की तरह हमारी जिंदगी में उन्होंने जीवंतता एवं खुशियां बिखेरीं।

अम्मा ने हमें प्यार दिया। हमने भी उन्हें चाहा। आखिर क्यों...? मोहक आंखों वाला हिरण—'मृगा', चटकीले रंग के पंखों वाला इतराता 'मयूर', कोयले की तरह काला मुंह लिए चतुर बंदर 'काजल'

तथा चमकीले लाल चोंच वाला रट्टू 'तोता' ...सब चाहते थे अम्मा को। उनकी झुर्रीदार हाथों से ही तो खाना लेते थे सब के सब।

अम्मा सुबह से शाम तक व्यस्त रहतीं। गेहूं को झाड़-झटककर साफ कर पीसना होता। पीतल के लैंप को साफकर उसमें शाम की आरती के लिए मीठे सुगंध वाला चंदन का तेल भरना होता। कुल देवता की सुनहली मूर्ति पर चढ़ाने के लिए ताजा-सुगंधित फूलों की माला बनती। परंतु प्रतिदिन गोधूलि की शांत बेला में, जब दिन रात का स्वागत करता, जस्मिन के पेड़ वाले आंगन में हरी घास पर फूस की चटाई बिछाकर अम्मा मौन ध्यान करने बैठ जाती। यही अवसर होता जब अम्मा की सबसे छोटी पोती रुपु खिसककर अम्मा के घुटने तक आती और झुर्रियों से भरी उनकी गर्दन अपनी छोटी- छोटी बाहों में भर लेती। फिर फुसफुसाकर कहती, 'अम्मा, कोई ऐसी कहानी सुनाओ जिसे बचपन में आपकी अम्मा ने सुनाया हो।'

दूर निहारती आंखों में याद की चमक लिए अम्मा मुस्कुरातीं और रुपु चौड़ी आंखें लिए इंतजार करती। उसकी टांगें अंदर की ओर मुड़ी होतीं, दोनों हाथ जुड़े होते, मानो प्रार्थना कर रही हो तथा हृदय परीलोक की कल्पना से भरा होता।

अम्मा कुछ सोचती हुई चांदी की पनबट्टी खोलती, उसमें से पान-तंबाकू खाती। पान चबाते ही उसका चेहरा कुछ गंभीर-सा हो जाता, आंखें गहरा जातीं एवं स्वप्निल अवस्था में पुचकारते हुए शुरू हो जातीं,

'अब सुनो, मेरे बच्चो, ***नील गगन के प्रांगण से*** कहानी'

– मायाक्षी चट्टोपाध्याय

नील गगन के प्रांगण से

लहराते-बलखाते, मुड़ते-मुड़ाते नीले पर्वत के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते रहस्यमयी राहों पर चलकर तुम नील गगन की राजधानी पहुंचोगे। यहीं पहाड़ नीले आसमान को चूमते हैं और घुमड़ते हुए मोतियों से भरे बादल बूंद बनकर लहराते हुए गिरते हैं। धरती पर हरियाली छाई है तथा ठंडी हवा चल रही है। हनी-ब्लूम अपनी कोमल पंखुरियां खोले इतराती तितलियों तथा नीले चमकते मधुमक्खियों का स्वागत कर रही है। स्वप्निल आनंद में झूमते पेड़, चहकते-फुदकते पंछियों को प्रेम संदेश दे रहे हैं और यहीं चिर बसंत का स्वागत होता है।

इतने में आसमान के उस पार से जादुई आवाज आती है। पर्वतों पर गूंजती हुई यह दिलों में उतर जाती है, "वा-प-स--आ-ओ! वा-प-स आ-ओ!-व-ा-प-स आ-ओ!"

गूंज के आकर्षण से खिंचे तुम नील गगन के राजमहल में पहुंचोगे। रास्ते में होंगे झुके हुए मीनार और स्वप्निल गुंबदें। परंतु, यह क्या...? राजमहल तो खाली है। नील गगन के राज्य का राजा कहां गया? और यह अशांत हवा किसके लिए रो रही है?

युगों पहले, जब पहाड़ युवावस्था में था और धरती पर जीवन का प्रस्फुटन हुआ था, एक बलशाली विचित्र पुरुष नीले आकाश की धरती पर उतरा। उसके ललाट पर तारा था। सौंदर्य के इस सितारे को उसने अपना लिया, प्रतीक चिह्न बना लिया। साथ ही खूबसूरत इस धरती को भी उसने अपना बना लिया।

गिरते हुए तारों से उसने आसमान में एक तारा-महल बना लिया। सरिता की सुरमई ध्वनि को उत्कृष्ट संगीत में ढाल दिया। इंद्रधनुष से रंग चुराकर उन्हें उजाले में नहाकर जीवन को शानदार एवं चमत्कारपूर्ण बना दिया। और इस तरह वह नील गगन के राज्य का राजा बन बैठा।

सुंदरता एवं चमत्कार से भरी इस जिंदगी को अपनों के साथ बांटने को वह

आतुर रहता। और एक दिन वह काले आंधी वाले मोती-से बादल पर सवार हवा के संग उड़ चला। नीले पर्वत के ऊपर से नील गगन को पार कर सितारों से भरी दूधिया राह पर चलता रहा जो दरअसल चांद तक जाती है।

चांद के रुपहले किनारे पहुंचते ही उसे चंद्रपरी चंद्रिका, चांदनी रात में अठखेलियां करती मिली। उसके बालों में चंद्रमुखी फूल चमक रहे थे तथा चांदनी उसकी आंखों में टिमटिमा रही थी। राजा के मार्ग में सितारों की चमकीली धूल बिखेरती उसने राजा का मन मोह लिया। राजा ने उसके अधरों एवं हाथों को चूमकर उसे अपनी दुलहन बना ली। अब दोनों लालिमापूर्ण आकाश में सूर्य की तरफ जाती लपट भरी राह पर उड़ चले।

सूर्यदेव के राज्य के सुनहले द्वार पर सूरजपरी सूर्यकी खड़ी थी। दोनों के स्वागत में, रास्ते पर सूर्य-किरण बिखेरती सूर्यकी की आंखों में रश्मिपुंज तैर रही थी तथा बालों में एक सूर्यमुखी फूल चमक रहा था। सूर्यकी की अपूर्व सुंदरता पर मुग्ध राजा ने उसके सुनहले होठों तथा हाथों को चूमा और उसे भी अपनी दुलहन बना ली। अब तीनों एकसाथ नील गगन के राज्य वापस आ गए। राजधानी शान से चमक उठी।

सौंदर्य का सितारा राजा की ललाट पर चमकता रहा। और नील गगन के महल में राजा सुखपूर्वक दोनों सुंदर रानियों के साथ रहने लगा।

कुछ दिनों बाद जब सूर्य की छाया चांद पर पड़ी तो चंद्रिका ने जुड़वे लड़कों को जन्म दिया। उसकी आंखों में खुशी के तारे चमक उठे। दोनों नवजात बच्चों के ललाट पर भी दो छोटे-छोटे तारे चमकते रहते। राजा उन्हें अपनी बांहों में भरे उस दिन की कल्पना करता जिस दिन जवान होकर वे सौंदर्य तथा चमत्कार की नई दुनिया जीतने को जाते।

परंतु सूर्यकी दुःखी हो जल-भुन रही थी। उसे डर था कि कहीं राजा अपना सारा प्यार तथा धन चंद्रिका एवं उसके बच्चों पर न उड़ेल दे।

समय के साथ नवागंतुक सुंदर-सबल बच्चे के रूप में विकसित हुए। अधिक सुंदरता एवं खुशी की तलाश में दोनों एक दिन इंद्रधनुष पर सवार राजा के साथ निकल पड़े।

उस दिन आखिरकार सूर्यकी महल में चंद्रिका के साथ अकेली रह गई। उसने

दौड़कर बागीचे से एक सुगंधित फूल तोड़ उसके हृदय में जादुई चूर्ण मिला दिया। चंद्रिका को फूल देते हुए उसने कहा, "बहन, यह सुगंधित फूल आपके लिए है। इसके मनमोहक सुगंध लीजिए तथा इसे अपने बालों में संवार लीजिए।"

चंद्रिका का फूल सूंघना क्या था, वह तो क्षण में भड़कीले हरे रंग का तोता बन टें-टें-टें, टें-टें...टें करते हुए महल से उड़ गई।"

लौटकर आने पर, राजा और उसके बच्चों ने सूर्यकी को रोते हुए देखा। रोते-रोते उसने कहा कि चंद्रिका पहाड़ पर गिर गई और लहराती नदी ने उसे बहा लिया। राजा की छाती में अजीब वेदना हुई मानो किसी ने तलवार चुभा दिया हो। नील गगन का राज्य दुःखों में डूब गया। उमड़ते बादलों ने दुःख के आंसू टपकाए। गम में पेड़ों ने पत्ते गिराए और फूलों ने पंखुड़ियां मूंद लीं।

इस बीच भयभीत तोता नीले आसमान को पारकर नीले पर्वतों में एक मरकत मणि की तरह चमकता हुआ मंडराता रहा। उसके पंख थक गए और सांसें कमजोर पड़ गईं और अंततः राजमहल के विशाल बागीचे में फलों से लदे एक पेड़ पर वह फड़फड़ाकर बैठ गया। भूख से अधमरे तोते ने जैसे ही एक पके फल पर चोंच मारी, फल गिर पड़ा। उसी वृक्ष के नीचे दो राजकुमारियां खेल रही थीं। उनकी नजर ऊपर वृक्ष पर बैठे हरे तोते पर गई और वे 'पिताजी, पिताजी' कहते राजा की तरफ भागे। उन्होंने कहा, 'लाल आंखों वाला एक हरा तोता हमारे उद्यान में आया है। इतना सुंदर तोता हमने कभी नहीं देखा है।'

राजा ने तुरंत सबसे अच्छे बहेलिये को बुलवाया, जिसने भयाक्रांत पक्षी को फंसाकर एक सुनहले पिंजड़े में कैद कर दिया।

उधर नील गगन के राज्य के राजा का दिन दुःखों से भरा था। उसकी प्रियतमा चंद्रिका खो गई थी। दुःख की इस घड़ी में वह जुड़वां बच्चों पर केंद्रित हो चुका था। उन पर पूरा प्यार उड़ेलता रहा। उनकी देखभाल करता रहा।

सूर्यकी क्रोधाग्नि में पुनः जलती रही। अब उसने दोनों बच्चों को खत्म करने का मन बना लिया। सुनहले रश्मि किरणों एवं सुबह के कुहासे से बने अपने वस्त्रों को उसने फाड़ लिया। उसने तो खाना-पीना भी बंद कर लिया। इस पर राजा ने एक दिन पूछा, 'मेरी सुंदर रानी, तुम क्यों दुःखी हो? अपनी इच्छा व्यक्त करो, उसकी पूर्ति की जाएगी।'

आंखों में दहकते अंगारे लिए उसने जवाब

दिया, 'मैं आपके बेटों के खून में नहाना चाहती हूं।' रानी के क्रूर शब्द सुन राजा दुःख से बेहोश हो गया।

सौंदर्य एवं सुख के उपभोग में मग्न राजा इन शब्दों को नहीं झेल सका। किंतु रानी ने राजा के नौकरों को बुलवाया और उन्हें आदेश दिया, 'दोनों बच्चों को दूर जंगल में ले जाकर मौत के घाट उतार दो और इस सुनहले पात्र में उनके लहू ले आओ।'

अंधेरी रात में दोनों छोटे बच्चों को जंगल की ओर ले जाया गया। रात की शांति में दोनों हाथ में हाथ डाले बढ़ रहे थे कि नौकर की आवाज ठनका की तरह उनके कानों पर गिरी, 'भागो, घने जंगल की गहराइयों में भाग जाओ।' उन्हें परे धकेलता हुआ वह चिल्लाया।

अंधेरे में भयभीत पदचाप की आवाज क्षीण पड़ती गई, परंतु नौकर तो जैसे पथरा गया था। वह अचानक मुड़ा और नदी में छलांग लगा दी और बहती धारा में गायब हो गया।

परंतु राजा एक बार बेहोशी की नींद जो सोया फिर कभी न जागा। सूर्यकी अंदर ही अंदर दुःख से जलती रही और सुलगती अंगार का एक ढेर बनकर रह गई। नील गगन के राज्य में शोक के काले बादल उमड़ पड़े और खाली महल में हवा भांय-भांय रोती रही।

घने जंगल के अंधियारे में दोनों राजकुमारों ने एक पेड़ के नीचे शरण ली। टप टप गिरते उनके आंसू ओस की बूंदों के साथ जा मिले और जंगल की छाया उनकी चारों तरफ मखमली आवरण की तरह घिर गए।

सवेरा होने को आया तो एक राजकुमार ने कहा, 'भइया, मैं प्यासा हूं, मेरे लिए पानी ला दो!' पानी लेने जैसे ही दूसरा राजकुमार सरिता के तट पर पहुंचा एक काला बलशाली हाथी अपनी पीठ पर सुनहला राज-सिंहासन लिए उसकी तरफ चिंघाड़ता हुआ लपका। हाथी ने राजकुमार को उठाकर सीधे सिंहासन पर बिठा दिया। और फिर आंधी की तरह जंगलों को चीरता हुआ दूसरी ओर चला गया।

दरअसल यह शाही हाथी एक ऐसे राजा का था जिसका देहांत उत्तराधिकारी के अभाव में ही हो गया था। इसीलिए राज्य के लोगों ने इस निर्णय के साथ हाथी को खुला छोड़ दिया कि जिसे भी यह अपनी पीठ पर बिठा लाएगा उसे राजा का

मुकुट पहनाया जाएगा। इस प्रकार भयाक्रांत राजकुमार एक अपरिचित राज्य का राजा बन गया।

उधर प्रतीक्षारत प्यासा राजकुमार एक पेड़ के नीचे सो गया। पास से गुजरते एक साधु उसे उठाकर अपनी छोटी-सी कुटिया में ले गया।

दिन, महीना और साल बीतते रहे। अब दोनों राजकुमार युवा एवं शक्तिशाली हो चुके थे। एक राजमहल में रहता तो दूसरा कुटिया में। पर दोनों मिलने के लिए प्रार्थना करते रहते।

एक रात जब जंगल की छांव गहराई, चांद मंद पड़ने लगा और तारे विश्राम को जाने लगे तो उल्लू का एक जोड़ा अपने में बातें कर रहा था। जंगल की झोपड़ी में लेटा राजकुमार उनकी बातें सुनने लगा। नर उल्लू ने अपनी मादा से कहा, 'प्रिये, क्या तुम जानती हो कि फूलों की घाटियों की राजकुमारियां जुड़वां भाइयों से विवाह करना चाहती हैं ताकि दोनों सदैव साथ रह सकें।'

मादा उल्लू ने कहा, 'हां, मैं जानती हूं और यह भी पता है कि वे उन्हीं जुड़वा भाइयों से शादी करेंगी जो हस्तिराज के मस्तक पर चमकते मणि को ले आएंगे।

इस पर चकित हो नर उल्लू ने कहा, ''परंतु हस्तिराज कहां छिपता है इसका तो किसी को नहीं पता है। मुझ ज्ञानी को भी नहीं जो अन्य सभी पक्षियों से ज्ञानी है।''

इस पर करीब आकर मादा उल्लू ने फुसफुसाकर कहा, 'मैं जानती हूं। दुनियां के अंतिम छोड़ पर दूधिया पर्वत की तराई में दूध की एक नदी बहती है। उसमें हजारों कमल खिलते हैं। उन्हीं के बीच मस्तक के केंद्र में चमकते मणि वाला छोटा उजला हाथी खेलता है।''

राजकुमार सहज ही अपने कानों पर विश्वास नहीं कर सका सो उसने साधु को उठाकर सारी बात बताई। साधु ने राजकुमार के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, ''हस्तिराज की खोज में जाओ, मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।''

राजकुमार जंगल में भटकता रहा। पर दुनियां के दूसरे छोर पर कैसे पहुंचेगा, इसका कोई ज्ञान उसे नहीं था।

इतने में बर्फ-से सफेद घोड़े पर सवार रुपहले कवच में दूसरा राजकुमार उधर से गुजरा। दोनों एक पल को रुके एवं एक-दूसरे को निहारा। दोनों के ललाटों पर सौंदर्य का तारा दमक उठा और एकबारगी ही उन्होंने एक दूसरे को पहचान लिया।

खुशी के मारे दोनों एक दूसरे से लिपट गए तथा बारी-बारी से बिछुड़ने से लेकर अब तक की कहानी सुनाई। तब साधु राजकुमार ने फूलों की घाटियों वाली, राजकुमारियों वाली बात सुनाई तथा दोनों हस्तिराज की तलाश में अंतहीन जंगल में निकल पड़े।

रात के गहराते ही बादलों के बीच से चांद उभरा। शांत एवं निर्मल। उसकी सौम्य सुंदरता के वशीभूत दोनों राजकुमार उसके रुपहले मार्ग पर खिंचते चले गए। यह रास्ता दुनियां के दूसरे छोड़ तक जाता था। वहां दूधिया पहाड़ के चरणों को पखाड़ती दूध की नदी बह रही थी। उसी में कुमुदिनी के हजारों फूलों के बीच चमकते मणि वाला छोटा सफेद हाथी खेल रहा था।

राजकुमारों के ललाटों पर सौंदर्य का सितारा देखते ही हाथी नदी के दूधिया जल से बाहर आया और झुककर मणि उनके चरणों में अर्पित कर दिया। एक जादुई किरण फूटी जिसने उन्हें सीधे फूलों की घाटियों के राजा के महल में पहुंचा दिया।

वहां स्वाभिमान से भरे राजकुमारों ने राजा का झुककर अभिवादन किया तथा उन्हें गज-मणि सौंप दिया। इतने में ही हरे तोते ने अपने पंख जोर से फड़फड़ाए तथा सुनहले पिंजरे को तोड़ दिया। आश्चर्य... घोर आश्चर्य। जैसे ही तोते ने राजकुमारों को हरे पंखों से गले लगाया वह रानी के रूप में बदल गई। उसकी आंखों में चांदनी की चमक थी एवं बालों में चंद्रमुखी फूल की। उसने लोगों को नील गगन के राज्य की कथा बताई। उसे किस तरह तोता बनाया गया एवं दोनों राजकुमारों को क्यों जंगल भेजा गया, अब रहस्य नहीं रहा। नील गगन के राज्य के राजकुमारों की शादी फूलों की घाटियों के राजकुमारियों के साथ हुई।

धरती एवं आकाश खुशी में झूम उठे। उसके बाद नील गगन के राज्य की खोज में सभी निकल पड़े। जैसे ही वे लहराते-बलखाते मुड़ते-मुड़ाते नीले पर्वत के गिर्द चक्कर लगाते रहस्यमयी राहों के पास पहुंचे नील गगन के उस पार से पर्वतों में गूंजती आवाज आई!

लौट-आ-ओ! ल-ौ-ट अ-ा-अ-ो! ल--ौ--ट अ--ा--अ--ो!

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल
मुंद गई फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।

एक कमल का जन्म

सदानीरा पवित्र गंगा विशाल पर्वतों से गिरती है। ऊंची चट्टानों से टकराकर गुफाओं में घुसती फिर बाहर निकलकर घने जंगलों एवं उर्वर घाटियों को पारकर सदैव बहती रहती है। युगों पहले जब से इस नदी का पवित्र जल धरती पर कल-कल करती बह रही है, तब से ही दूर-पास से आकर संत एवं श्रद्धालु इसमें स्नान कर अपने पापों को धोते आ रहे हैं।

सूर्य की रोशनी में नहाए नदी के एक तट पर सफेद बाल एवं लहराती हुई बड़ी दाढ़ी वाला एक गरीब वृद्ध ब्राह्मण बैठा करता था। सूर्योदय से सूर्यास्त तक रेतीले तट पर बैठा वह ब्राह्मण प्रार्थना एवं मनन करते रहता। शाम ढलते ही वह नदी तट पर बने ताड़ के पत्ते से बनी झोपड़ी में चला जाता। उस ब्राह्मण की न तो पत्नी थी और न ही कोई बच्चा था। उसके पास दुनियांदारी का सामान भी नहीं था। राह गुजरते श्रद्धालुओं द्वारा दिए गए दान से ही वह अपना काम चलाता था।

उस ब्राह्मण की झोपड़ी के निकट एक बिल में छोटा-सा भूरा चूहा रहता था। रात को जैसे ही ब्राह्मण वापस आता वह चूहा बिल से बाहर निकल आता। ब्राह्मण के पैरों के पास बैठ वह चूहा उसके ही रूखे-सूखे भोजन पर हाथ साफ करता। इस प्रकार हरेक रात दोनों मिलते और उनमें गहरी दोस्ती हो गई।

एक दिन भावावेश में ब्राह्मण ने चूहे को बोलने की शक्ति दे दी ताकि रात के वीरान पहर में अपने दोस्त चूहे के साथ बात कर वह समय बिता सके।

उसी रात ब्राह्मण के लौटते ही चूहा बिल से निकलकर अपनी पूंछ के बल खड़ा हो गया। फिर उसने अपने छोटे पंजों को जोड़कर चमकीली काली आंखों में आंसू लिए प्रार्थना की, "हे भगवन्, आपने मुझे बोलने की शक्ति दी है। अब मेरी व्यथा की कथा सुनने की कृपा करें।"

'व्यथा' शब्द मात्र ही ब्राह्मण को चौंकाने वाला था। उसके अनुसार तो मनुष्यों की तरह बोलकर उस चूहे को अति प्रसन्न होना चाहिए था। फिर भी
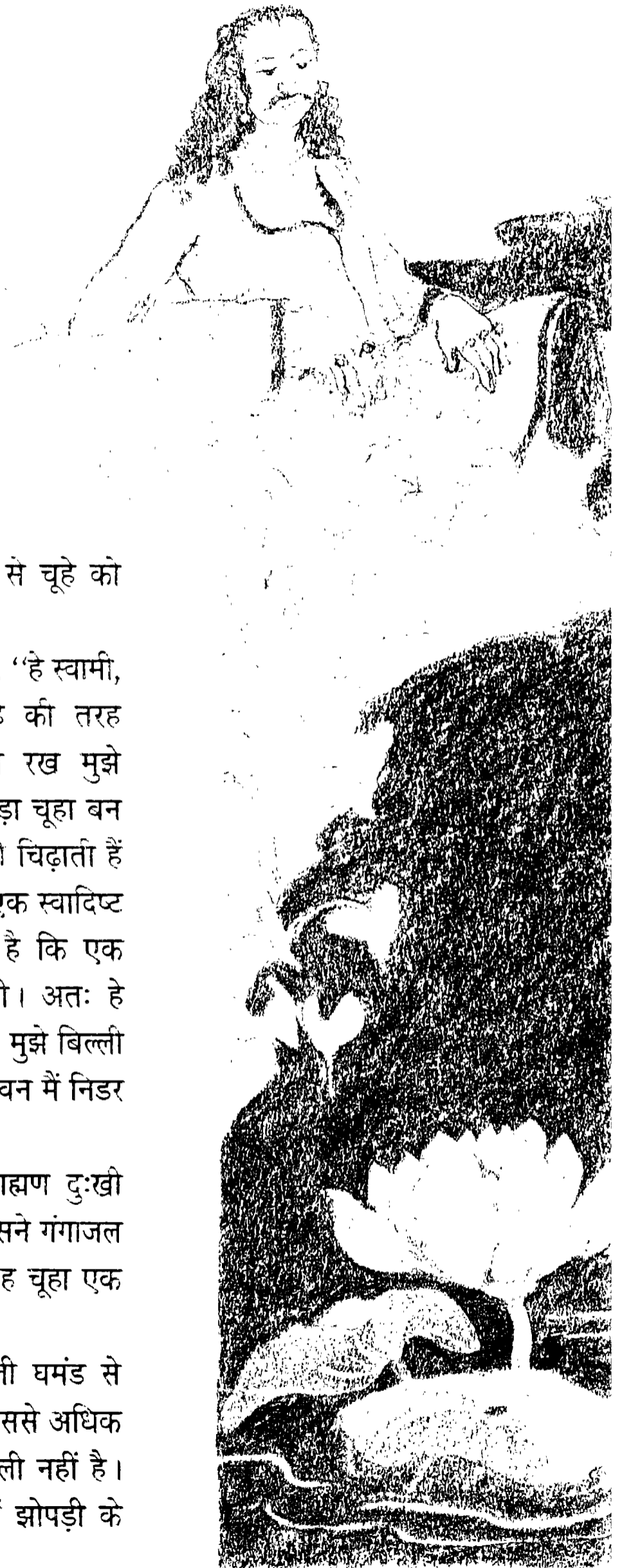
उसने धीरे से पूछा, "एक छोटे से चूहे को भला क्या दुःख हो सकता है?"

इस पर चूहे ने याचना की, "हे स्वामी, मैं आपके पास एक भूखे चूहे की तरह आया। आपने खुद को भूखा रख मुझे खिलाया। अब मैं एक मोटा-तगड़ा चूहा बन गया हूं। बिल्लियां, मुझे देखते ही चिढ़ाती हैं और खदेड़ती हैं। मैं उनके लिए एक स्वादिष्ट भोजन बन चुका हूं। मुझे डर है कि एक दिन वे मुझे पकड़कर मार देंगी। अतः हे स्वामी, मेरी आपसे याचना है कि मुझे बिल्ली बना दीजिए, ताकि बाकी का जीवन मैं निडर होकर बिता सकूं।"

यह सुनते ही दयालु ब्राह्मण दुःखी हो गया। और चूहे के माथे पर उसने गंगाजल छिड़क दिया। देखते ही देखते वह चूहा एक सुंदर बिल्ली बन गया।

खुशी के मारे वह बिल्ली घमंड से गुर्राई। उसे पता था कि गांव में उससे अधिक ज्ञानी एवं शक्तिशाली कोई बिल्ली नहीं है। पूरे दिन वह शिकार की टोह में झोपड़ी के

इर्द-गिर्द टहलती रहती। रास्ते में आने वाले हरेक चूहे को दौड़ाती रहती, मारती रहती। उसे अब न किसी तरह का खतरा था और न ही मृत्यु का भय।

कुछ दिनों तक उस बिल्ली के दिन सुखपूर्वक बीतते रहे। पर एक रात जब ब्राह्मण वापस आया तो बिल्ली एक कोने में दुबकी दुःखी हो म्याऊं-म्याऊं कर रही थी। ब्राह्मण ने पूछा, ''मेरी छोटी बिल्ली, क्या बात है? बिल्ली की जिंदगी से तुम खुश नहीं हो क्या?''

दुःखी बिल्ली ने जवाब दिया, ''बिल्कुल नहीं।''

ब्राह्मण ने पूछा, ''क्यों? क्या तुम आसपास के अन्य बिल्लियों से अधिक ज्ञानी एवं शक्तिशाली नहीं हो? मेरे दोस्त, तुम बिल्ली की इस जिंदगी से दुःखी क्यों हो?''

इस प्रश्न के जवाब में चूहे ने कहा, ''मैं निस्संदेह बिल्लियों में ज्ञानी एवं शक्तिशाली हूं। पर अब कुत्ते मेरे अधिक खतरनाक दुश्मन हो गए हैं। मुझे देखते ही ये भौंकते एवं गुर्राते हैं तथा एक झुंड में मेरे पीछे पड़ जाते हैं। डर से मेरे दिल की धड़कन तेज हो जाती है। मेरे पांव शिथिल पड़ जाते हैं। और मुझे डर है कि एक दिन वे मुझे पकड़कर मार डालेंगे। अतएव हे प्रभु, दया कर मुझे कुत्ता बना डालिए, ताकि गांव के अन्य कुत्तों से मैं खुद निबट सकूं।''

उस बिल्ली से ब्राह्मण को इतना लगाव था कि गंगाजल छिड़ककर आनन-फानन में उसे कुत्ते में परिणत कर दिया।

खुशी के मारे वह कुत्ता छलांग लगाता रहा और पूंछ हिलाता रहा। अब स्वतंत्र एवं निर्भीक होकर वह अपने मालिक की झोपड़ी की रखवाली करता। शाम ढलते ही झोपड़ी के द्वार पर बैठ मालिक की प्रतीक्षा करता। रात में दोनों साथ-साथ खाते।

कुछ ही दिनों बाद एक तूफानी, अंधेरी रात में जब ब्राह्मण वापस आया तो उसे अपना वफादार कुत्ता दरवाजे पर नहीं मिला। चिंतित ब्राह्मण ने उसकी तलाश पूरे गांव एवं नदी के वीरान पड़े किनारे पर की। किंतु व्यर्थ...! अकेला, खोया-खोया अपनी सुनसान झोपड़ी में वापस आकर जब ब्राह्मण ने लालटेन जलाई तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। टिमटिमाती रोशनी में उसने कुत्ते को एक अंधेरे कोने में दुबका हुआ देखा। वह दुःख से सुबक रहा था। उसे पुचकारते हुए ब्राह्मण ने पूछा, ''मेरे वफादार दोस्त, तुम स्वस्थ तो हो। आओ मेरे पास बैठकर खाना खाओ और अपने सारे दुःख मुझे बताओ।''

अब अनुनय-विनय करते हुए कुत्ते ने कहा, ''इस जीवन से मुझे कोई शिकायत नहीं है। किंतु अब मेरी भूख बहुत बढ़ गई है। आपके सामान्य भोजन

में से जो टुकड़े मुझे मिलते हैं मैं उनसे कतई संतुष्ट नहीं हो पाता हूं। अतः हे स्वामी, अगर मैं बंदर होता तो सारा दिन ताजे एवं रसीले फल खाता। फिर मुझे कभी भूख नहीं सताती।" यह सब कहते-कहते दुःखी कुत्ता बूढ़े ब्राह्मण के चरणों में लेटकर सुबकता रहा।

आंखें मूंदे हुए ब्राह्मण चुपचाप सोचता रहा, "मैं तो एक बूढ़ा गरीब ब्राह्मण हूं। मुझे तो भूखे एवं अभाव में रहने की आदत है। परंतु मेरे साथ यह क्यों भूखा रहकर कष्ट झेले।" यह सोचते-सोचते उसका कोमल हृदय दया से भर गया और मंत्रोच्चार करते हुए उसने प्रार्थना की। ठीक उसी जादुई समय में वह कुत्ता बंदर के मनवांछित स्वरूप में आ गया।

खुशी से पागल बंदर छलांग लगाता झोपड़ी से बाहर निकल गया और दूर जंगल में चला [illegible]। जंगल की स्वच्छ एवं फूलों से सुगंधित हवा में चैन की सांस लेते हुए वह सोच रहा था, "वाह! भरे-पूरे इस जंगल में कितनी स्वतंत्रता है।" आनंद की इस घड़ी में वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर पूंछ की सहायता से झूलता रहा तथा मीठे रसीले फल तब तक खाता रहा जब तक उसकी खाने की इच्छा मर नहीं गई। जब जंगल में अंधेरा छा गया, तो वह बंदर आंखें मूंदे सुखमय नींद में डूब गया।

धीरे-धीरे गरमी का मौसम आया। दिन तपने लगा। पेड़ों ने पत्ते गिराए। नदियां सूख गईं। बेचारे बंदर का शरीर गर्मी से झुलसने लगा। उसकी जीभ एवं गला प्यास से सूख गया। दुःखी होकर उसने पेड़ से नीचे देखा, जहां भैंसों का एक झुंड ठंडे कीचड़ भरे एक तालाब में लोट रहा था। बंदर पुनः सोच में पड़ गया, "ओह, ये कितने भाग्यशाली हैं। मैं यहां गरमी में जल रहा हूं, प्यास से मर रहा हूं और ठंडे तालाब में ये कितने आराम से हैं।"

सूरज ढलते ही बंदर ब्राह्मण की झोपड़ी की ओर लपका और दरवाजे पर बेचैनी से इंतजार करता रहा। वापस आते ही ब्राह्मण ने बंदर को देखा और मुस्कुराते हुए कहा, "दोस्त, तुम्हें इस गरीब बूढ़े दोस्त की याद आ ही गई। आओ, बैठो, बंदर के रूप में जंगल में अपने बीते सुखी जीवन की कहानी सुनाओ।"

परंतु बंदर तो दुःखी था। शिकायत भरे स्वर में उसने कहा, "मैं जंगल में ताजे एवं रसीले फल खाकर खुश हूं, किंतु मुझे गरमी में बंदर की इस जिंदगी से घृणा है। सूरज की तीखी किरणें मेरी पीठ को झुलसा देती हैं। घने, छांव-भरे पेड़ों की पत्तियां गिर जाती हैं तथा सरिता का पानी सूख जाता है। मेरा बदन ऐंठ जाता है। जीभ सूख जाती है। मुझे लगता है, मैं प्यास से मर जाऊंगा। अतः हे स्वामी!

मैं भैंस बनने के लिए कुछ भी त्यागने को तैयार हूं। भैंस बनकर मैं कीचड़ भरे तालाब में लेटा रहूंगा और ग्रीष्मकाल की गरमी मुझे तनिक भी सता नहीं सकेगी।''

एक बार फिर वह भद्र बूढ़ा ब्राह्मण उस निरीह प्राणी के लिए दुःखी हो गया। ब्राह्मण ने कहा, ''मेरे बच्चे, झोपड़ी के अंदर आओ। मैं तुम्हें कष्ट निवारक गंगाजल से नहा देता हूं। फिर तुम्हारी इच्छा-पूर्ति के लिए प्रार्थना करता हूं।'' यह सब करते ही एक विशालकाय भैंस झोंपड़ी से बाहर निकली और शीघ्र ही जंगल में ओझल हो गई।

गरमी के सारे दिन उस भैंस ने ठंडे गंदले तालाब में लेटकर बिताया। उसका शरीर शीतल था और चित्त प्रसन्न। अब वह निश्चिंत थी। अंततः उसने खुशी पा ली थी।

जल्द ही वर्षा का आगमन हुआ। सूखी धरती की प्यास बुझी। भूरे नग्न वृक्षों को नया जीवन मिला। सूखी नदियों को पानी। पेड़ों पर नए हरे पत्ते उग आए। उनकी शाखाओं पर बैठे पक्षियों ने चहकना शुरू कर दिया। खुशी से पागल मोरों ने रंगीन, भड़कीले पंखों को फैलाकर नाचना शुरू कर दिया।

बसंत के नए खुशहाली भरे दिनों में राजा अपने मित्रों के साथ एक बलशाली हाथी पर सवार जंगल की सैर को निकला। हाथी की गरदन में लटकी सुनहली कड़ी से बंधी घंटियां झूल रही थीं। गंदले तालाब में अलसाए भैंसों को देखते ही राजा ने अपनी धनुष से जहर-बुझा एक तीर उन पर चला दिया। बिजली की तरह जंगलों को चीरता यह तीर सीधे किसी भैंस के दिल में जा चुभा। और भैंस तुरंत ढेर हो गया।

इस पर आतंकित वह भैंस फटाफट पानी से बाहर आई तथा ब्राह्मण की

झोपड़ी की तरफ सरपट भागी। उस शाम जैसे ही ब्राह्मण वापस आया, भैंस घुटनों के बल होकर अपना सिर ब्राह्मण के चरणों में रख फूट-फूटकर रोने लगी।

भैंस अनुनय-विनय करते हुए पुनः बोली, ''हे भगवन्! यह तो आपके आशीर्वाद का ही फल है कि मैं बच गई, वरना जहर-बुझे उस तीर से मेरी भी तो मृत्यु हो सकती थी। उस तीर ने तो मेरी सहचरी भैंस का अंत एक
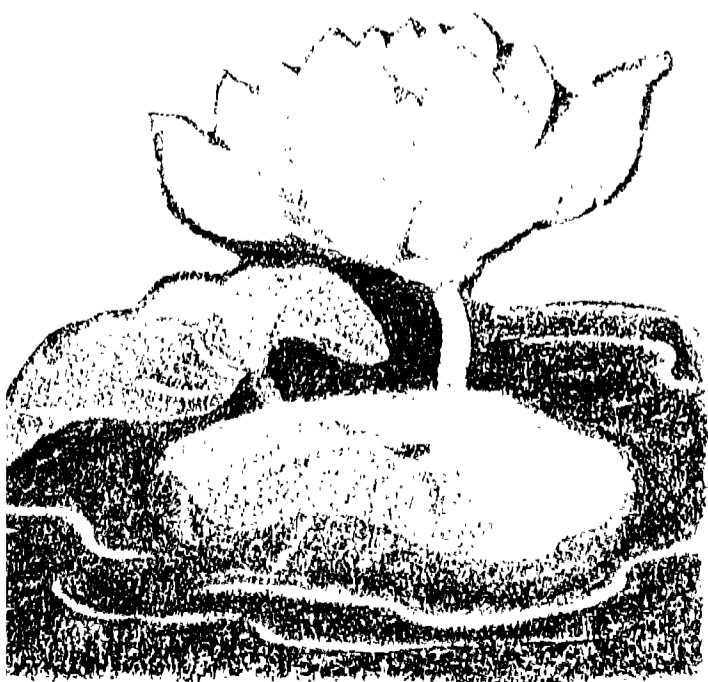
झटके से कर दिया। अतः मुझे भैंस के दुर्भाग्य से बचा लीजिए। मुझे हाथी बना दीजिए ताकि मेरी गर्दन में सुनहली घंटियां झूलती रहें और मैं राजा को अपनी पीठ पर बिठाकर घुमाने का सौभाग्य प्राप्त कर सकूं।"

हमेशा की तरह ब्राह्मण ने उसे वरदान दे दिया। अब वहां आबनूस की तरह काली चमड़ी एवं चमचमाते दांत लिए एक राजसी हाथी था, जो घमंड से चिंघाड़ते हुए, मदमस्त हो जंगल की ओर चला गया।

बसंत के एक सुखद दिन पुनः राजा अपने हाथी पर सवार जंगल में आया। उसके पास चमचमाती गहनों में सजी सुंदर रानी बैठी थी। रानी को देखते ही उस हाथी की आंखें चुंधिया गई। ईर्ष्यालु हाथी सोचने लगा, 'रानी बनकर राजा के साथ राजसी हाथी की सवारी में कितना आनंद आएगा? हाथी बन लोगों को पीठ पर ढोने में भला क्या सौभाग्य है? भले ही वे राजा-रानी क्यों न हों? मैं तो रानी बनकर राजा के साथ शाही हाथी
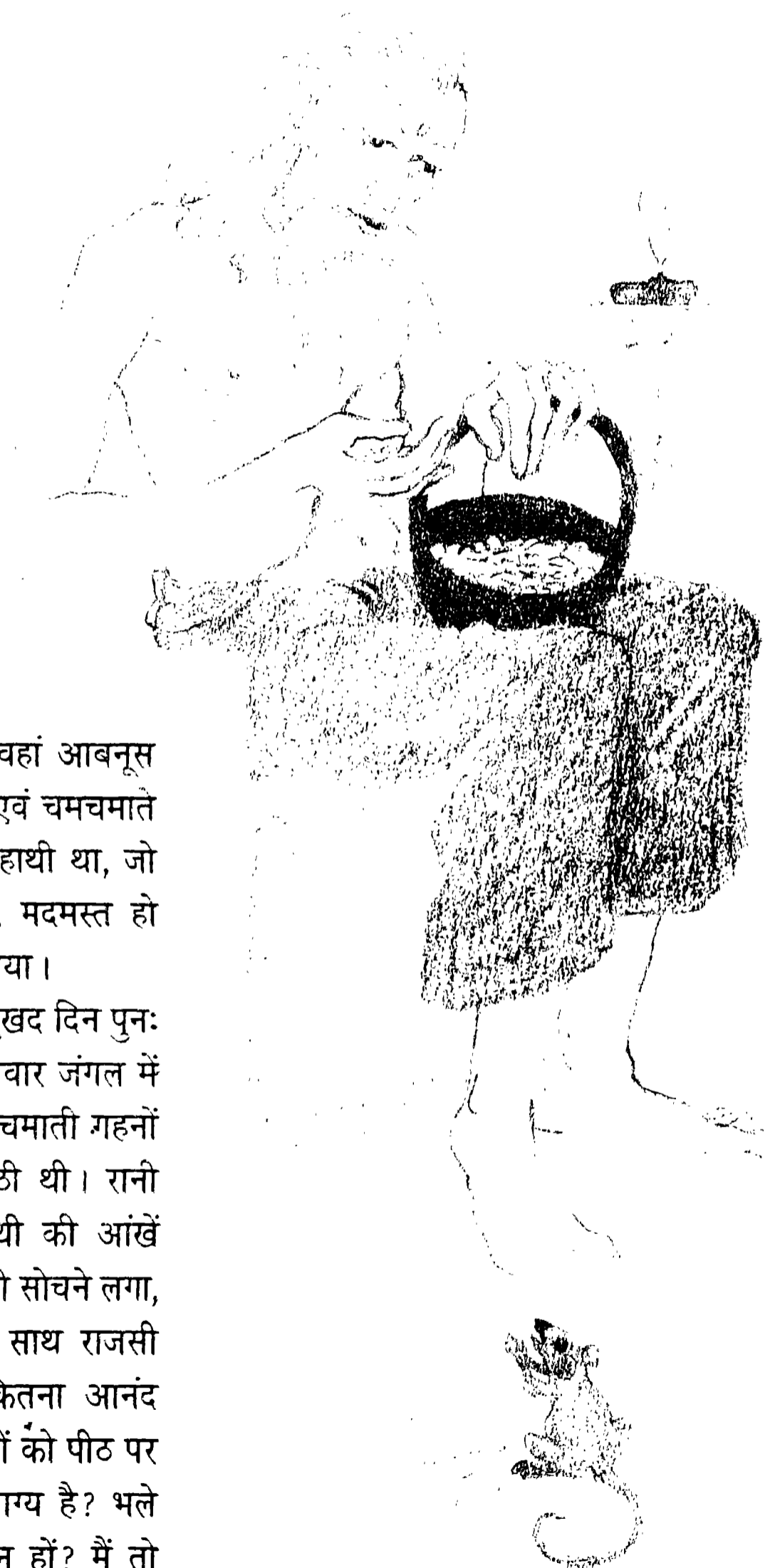
की सवारी पसंद करूंगी।'

उस शाम जब ब्राह्मण वापस आ रहा था तो उसने हाथी को झोपड़ी की तरफ भागते हुए देखा। परंतु इस बार ब्राह्मण ने निर्णय लिया कि उस जानवर की अंतहीन कामनाओं की पूर्ति के लिए अब जो धार्मिक शक्ति का प्रयोग वह करेगा, अंतिम होगा।

हाथी के गाल पर आंसू की बूंदें लुढ़क रही थीं। वह सुबकते हुए बोला, "हे भगवन्! मेरी एक अंतिम मनोकामना है। दरअसल लोगों को पीठ पर बिठाकर घुमाने में किंचित सम्मान है--भले ही वे राजा एवं रानी क्यों न हो। अतएव कृपाकर मुझे रानी बना दीजिए ताकि राजा के साथ मैं शाही हाथी की सवारी कर सकूं।"

"मूर्ख बच्चे, मैं तुम्हें रानी में कैसे बदल सकता हूं? मैं तुम्हारे लिए राजा एवं उसके लिए राज्य कहां से लाऊंगा?" यह प्रत्युत्तर था उस ब्राह्मण का। फिर उसने कहा, "मैं अधिक से अधिक तुम्हें एक सुंदर कन्या बना सकता हूं। शायद तुम किसी राजा का मन मोहकर उसकी रानी बन सको।" इतना कहकर उस ब्राह्मण ने मंत्रोच्चार के साथ प्रार्थना की और हाथी को एक सुंदर कन्या में बदल दिया। उसकी आंखें गहरी एवं काली थीं। और काले बाल चमक रहे थे।

शस्य-पूर्णिमा के त्योहार के दिन मंदिरों की हजारों घंटियों की आवाज पहाड़ों एवं नदियों के पार से आ रही थी। सूर्योदय के साथ ही वह सुंदर कन्या जग गई। अपने बदन पर सुगंधित तेल लगाया। फूलों की माला से खुद को सजाकर प्रार्थना करने मंदिर की ओर भागी।

मंदिर के द्वार पर पहुंचते ही उसने राजा को हाथी पर से उतरते देखा। वह फटाफट नदी की ओर भागी। वहां से पानी लाकर सावधानीपूर्वक राजा का पैर प्रक्षालित कर दिया। उसकी सुंदरता पर मोहित राजा ने पूछा, "तुम कौन हो सुंदर कन्या? कहां रहती हो?" लजाते हुए उस कन्या ने कहा, "मैं एक गरीब ब्राह्मण की बेटी हूं। और नदी किनारे एक झोपड़ी में रहती हूं।"

इस पर राजा ने कहा, "मुझे अपने पिता की झोपड़ी में ले चलो। मैं तुमसे विवाह कर तुम्हें अपनी रानी बनाना चाहता हूं।" सुंदर कन्या तो फूली न समाई। और वे ब्राह्मण की झोपड़ी पर पहुंचे। वहां ब्राह्मण ने राजा को विवाह की अनुमति दे दी तथा दोनों को आशीर्वाद दिया।

विवाह के दिन तो राजधानी में खुशी की लहर दौड़ गई। रानी ने सुनहले धागे से बुना परिधान धारण कर लिया। उसने पन्ना-जड़ित एक मुकुट पहन

लिया। अनमोल मोतियों की माला उसकी गरदन में चमक रही थी और वह शाही अंदाज में सुनहले सिंहासन पर राजा के समीप बैठी थी। महल की महिलाएं सुगंधित गुलाब की पंखुड़ियां एवं केसर-युक्त चावल के दाने राजसी जोड़े पर बरसा रही थीं। प्रेम एवं आनंद के गीत गाए गए। संगीत की ध्वनि एवं ढोल की आनंददायक थाप हवा में गूंज रही थी। छतों एवं ऊंचे पेड़ों पर बच्चे-बूढ़े-जवान सभी खड़े थे। उन्हें राजधानी से राजा एवं रानी के गुजरने का बेसब्री से इंतजार था। यह राजसी सवारी हरी-भरी घाटी के पार हाथी दांत से बनी महल को चली गई।

रानी की खुशी की सीमा नहीं थी। उसके सारे सपने सच हो चुके थे। पर एक रात जब राजा अपने बिस्तर में नींद में लेटा था तो वह दबे पांव महल से निकल कर राज उद्यान में पहुंच गई। वहां चांदनी झील के स्वच्छ पानी में अपनी सुंदरता निहारने लगी। परंतु दुर्भाग्य से उसका पैर फिसला और वह पानी में डूब गई। और वह सदा के लिए चली गई। राजधानी में शोक का माहौल बन गया। हताश राजा हवा से बात करने वाले घोड़े पर सवार ब्राह्मण की झोपड़ी की ओर भागा।

राजा को समीप आते देख ब्राह्मण ने सब कुछ भांप लिया और मंद-मंद मुस्कराता रहा। उसने राजा से कहा, "हे राजन! मैं तुम्हारे यहां आने का कारण जानता हूं।" तुम्हारी प्रिय रानी, जिसे तुम खो चुके हो, वस्तुतः मेरी झोपड़ी के एक बिल में रहने वाला निरीह चूहा था। दयावश मैंने अपने आशीर्वाद से उसे बारी-बारी से बिल्ली, कुत्ता, बंदर, भैंस, हाथी और अंत में एक सुंदर कन्या बना दिया। वही कन्या तुम्हारी रानी बनी। पर अपनी स्थिति से वह सदैव असंतुष्ट रही। उसकी इच्छाओं का अंत नहीं था। चांदनी रात में महल के झील में अपनी परछाईं निहारती हुई वह फिसलकर पानी में डूब गई। इस प्रकार वह इस दुनिया से चली गई। पर हे राजन्, आप दुःखी न हों, मैं उसे अमर बना दूंगा। उसके शरीर से एक सुंदर फूल का जन्म होगा। यह फूल सदैव बरसात के मौसम में खिलेगा। यह सदैव ललायित रहेगा कि सूर्योदय की किरणें चूमकर इसके सुंदर पंखुड़ियों को खोले। इस फूल को लोग 'कमल' के नाम से जानेंगे। और जब भी आप झील के पास रुकेंगे, एक फुसफुसाती आवाज आपके कानों तक आएगी :

"ठहरो, ऐ जाने वाले, सुनो! यदि तुम खुश रहना चाहते हो तो अपनी स्थिति पर संतोष करो। इससे तुम्हारे दुःख उसी तरह दूर होंगे, जिस तरह कमल की पंखुड़ियों से लुढ़ककर ओस की बूंदें।"

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल
मुंद गईं फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।

नागराज का मणि

शांत घाटी से घिरे एक छोटे राज्य में अर्जुन नाम का एक एकाकी राजकुमार रहता था। वहां दूर-दूर तक कोई अन्य राज्य नहीं था। महल के बागीचों के माली का बेटा आनंद, राजकुमार का एक मात्र दोस्त था। वे साथ-साथ हंसते-खेलते और गाते थे। अपने-अपने गुप्त मनोभाव एवं परियों के सपनों की बातों के अलावा वे और भी कई बातें एक दूसरे को कहते-सुनते थे।

एक दिन दूर नीले आकाश में उन्होंने आवारा बादल देखा जो पर्वतों के ऊपर से होता हुआ जा रहा था, मानो इस दुनियां से परे जा रहा हो। सहसा उनके दिलों में एक इच्छा जग गई।

अर्जुन ने आंखों में सपने लिए दिल की बात कही, "आनंद, कितना मजा आता यदि हम आवारा बादलों के साथ बहते पर्वतों के ऊपर से होकर नीले आकाश के पार की दुनियां देख पाते।"

आनंद का जवाब तो मानो पहले ही तैयार था। उसने कहा, "तुम शक्तिशाली हो। मैं भी डरपोक नहीं हूं। चलो हम बादलों के पीछे हो लें। घाटी के उस पार, पर्वतों के ऊपर होते हुए दूसरी दुनियां को देखने चलें।"

अगले ही दिन, जब महल के पहरेदार गहरी नींद में थे, उन्होंने राज अस्तबल से हवा से बातें करने वाले दो घोड़े चुराए। और सूर्योदय से काफी पहले ही घोड़ों पर सवार होकर महल के द्वार से निकलकर, नगर की चारदीवारी से भी दूर चले गए।

हवा से बातें करते घोड़े पथरीली भूमि पर मीलों दूर निकल गए। रास्ते में धूप से तपता रेगिस्तान पड़ा। उसे पार कर वे हरी-भरी घासों वाली घाटी में पहुंचे। अब उनके सामने दूर-दूर तक गगनचुंबी पर्वतों की शृंखला थी। वे उस पर चढ़ने लगे। यह काफी खड़ी चढ़ाई थी। चट्टानों एवं बड़े-बड़े पत्थरों के बीच रास्ता बनाते हुए वे चढ़ते रहे। अचानक यह रास्ता एक गहरे घने जंगल में ढुलक गया।

उस जंगल में बाघ एवं भालू स्वतंत्रतापूर्वक निर्भीक हो विचरण करते थे। और लोग उस तरफ जाने से डरते थे।

जंगल में अर्जुन भयभीत हो गया। आंखों में डर का भाव लिए उसने कहा, "इस अंधेरी रात में यह जंगल भयानक लग रहा है। हम क्यों न अपने घोड़ों को एक पेड़ से बांध दें। और उसकी शाखाओं की छांव में ही रात बिता लें। शीघ्र ही वे एक नीली झील के किनारे उतरे। बड़े-बड़े हरे वृक्षों से घिरी उस झील में ढेर सारे कमल के फूल खिले थे। बिना कोई आवाज किए उन्होंने घोड़ों को विशालतम वृक्ष से बांध दिया। और उसी पेड़ की सबसे ऊपरी शाखा पर चढ़कर शीघ्र ही गहरी नींद से सो गए।

आधी रात गए, दिल दहलाने वाली आवाज से जंगल की शांति अचानक भंग हो गई। ऐसा लगा मानो हजारों सांप क्रुद्ध हो फुफकार रहे हों। आंखों को चुंधियाने वाली रोशनी में जंगल चमक रहा था। ऐसा लगता था मानो मध्य रात्रि में सैकड़ों सूर्य आकाश में चमक रहे हों। इस विचित्र प्रकाश में उनकी आंखें चुंधिया गईं और भयभीत हो दोनों उठकर बैठ गए। डर से सहमे हुए उन्होंने देखा कि एक शक्तिशाली काला सांप झील के पानी से बाहर निकल रहा था। उसके काले, चमकीले फन के बीच में एक चमकता हुआ मणि था।

राजसी स्वाभिमान में वह अपने मणि-युक्त फन इधर-उधर हिलाता रहा। आसपास की छोटी-बड़ी सभी चीजों पर उसकी जहरीली नजर पड़ी। देखते ही देखते उसका चमकता काला शरीर कुंडली मारे पानी से कई गज ऊपर आ गया। अचानक वह सबसे विशाल वृक्ष की ओर लपका और एक के बाद एक दोनों घोड़ों को एक ही बार में निगल गया। फिर उसने धीरे से फन झुकाया और पेड़ के नीचे मणि गिराकर—लहराता, फिसलता जंगल के सुदूर कोने में सरसराकर भागा। रास्ते में आने वाले हरेक जंतु को उसने निगल लिया।

अर्जुन को तो सांप सूंघ गया था। पर आनंद का दिल उत्तेजित था। उत्तेजना उसकी आंखों में साफ चमक रही थी। वह फुसफुसाया, "अर्जुन,देखो! हमारे नीचे धूल में पड़ा चमकता यह नागमणि सात राज्यों एवं सात राजाओं

के धन के बराबर है। हमें हर हाल में इसे पाना है।''

पलक झपकते ही आनंद पेड़ से कूद पड़ा। अपनी तलवार से उसने जल्दी-जल्दी धरती में एक गड्ढा बनाया। मणि को उसमें छिपाकर अपने नंगे पांव से उस पर पुनः मिट्टी डालकर जोरों से दबा दिया। उसके बाद तलवार को अनमोल गड्ढे के पास घोंपकर पेड़ पर आ बैठा।

सूर्यास्त के साथ जिस तरह दिन की रोशनी चली जाती है, उसी प्रकार जंगल का प्रकाश अंधकार बन चुका था। रात की कालिमा से भी ज्यादा घना। इतने में ही क्रुद्ध सांप सरसराता हुआ पेड़ तक आया। फन से पूंछ तक गुस्से में वह तड़प रहा था। उसकी लाल-लाल हिंस्र आंखें अंधेरे में चमक रही थीं। वह अपने मणि की तलाश में छटपटाते हुए उस पेड़ के चारों ओर चकरी मारे लहराता रहा। क्रोध से पागल सांप अपने भयानक पूंछ पेड़ एवं धरती पर फटकारता रहा। अपने शरीर से अनगिनत कुंडलियां बनाई एवं फंदा बनाया। फिर अपने दैत्याकार मुंह खोल अपनी ही पूंछ को निगल लिया। पर जैसे ही उसका फन तलवार से टकराया, उसका शरीर दो भागों में कट गया।

अर्जुन और आनंद एक दूसरे से सटे पत्थर के बुत बने बैठे रहे। सूर्य की पहली किरण फूटने तक वे एक-एक पल गिनते रहे। भयानक रात बीत चुकी थी। सांस थामे हुए आनंद ने नीचे देखा। वहां जहरीले खून में लथपथ, मरा हुआ सांप शिथिल पड़ चुका था।

कुछ क्षणों तक दोनों निःशब्द रहे। फिर खुशी से चिल्लाते आनंद ने पेड़ पर से ही नीचे छलांग लगाई। उसने मणि को धरती से बाहर निकालकर अर्जुन के हाथ पर रख दिया। खुशी से चिल्लाते हुए आनंद ने कहा, ''मेरे दोस्त, तुम सात राज्यों का वैभव अपनी हथेली पर रखो। आओ, हम इस मणि को चमकते झील के पानी में साफ करें। फिर यह मध्याह्न के सूरज की तरह चमकेगा।'' यह कहते हुए वह झील के किनारे भागा।

रात की भयावहता अब भी अर्जुन की आंखों में समाई थी। मणि को हाथ में कसकर पकड़े जैसे ही उसने बंद मुट्ठी पानी में डुबोई, पानी दो भागों में बंट ग[illegible]। अंदर रत्नजड़ित तीर की तरह एक सुनहली सीढ़ी चमकी। और एक अजीब जादुई ताकत के प्रभाव में दोनों दोस्त झील की असीम गहराई में डूबते चले गए। अचानक वे गहरे चमकीले कोहरे की परत में घिर चुके थे। चकित होकर वे कुछ

देर वहीं खड़े रहे। धीरे-धीरे कोहरा छंटा, तो सामने था इंद्रधनुषी रंगों में नहाया एक मोतीमहल।

आश्चर्य एवं उत्तेजना से भरे अर्जुन एवं आनंद मोती-जड़ित दरवाजे से प्रवेश कर मूंगा के बने गलियारे एवं रत्न-जड़ित सभा-भवनों में टहलते रहे। चारों तरफ एक अजीब शांति एवं गम का मौहाल था। वे अचरज में थे कि 'वे कहां हैं? किस झील के तल में? किस दुनियां के अंत में?'

आनंद की नजर अचानक एक छोटे सुनहले द्वार पर पड़ी। उसमें रत्न-जड़ित चाबी भी लटक रही थी। 'क्लिक' की आवाज के साथ जैसे ही उसने चाबी घुमाई, दरवाजा खुल गया। अंदर मोतियों से बने परिधान में एक सुंदर कन्या एक विशाल शंख पर लेटी थी। उसकी आंखों में नींद समाई थी। उसका सुंदर सौम्य चेहरा चमक रहा था। ऐसा लगता था जैसे चांदनी, खिले हुए कमल को चूम रही हो। उसके चमकते बाल मोतियों से लटों में उसके टखनों तक झूल रहे थे। राजहंस की तरह उसकी गर्दन में लिपटा एक सांप सो रहा था।

नींद में लेटी उस कन्या की सुंदरता पर मुग्ध वे चुपचाप उसके समीप पहुंचे। अचानक अर्जुन के हाथ से नागमणि छूटकर उस कन्या की पलकों पर गिरा। लगा, जैसे चौंककर सोया हुआ सांप जग गया हो और चकरी खोलकर वह दूसरी ओर रेंग गया मानों कोई भयाक्रांत कीड़ा हो। अब तक उस कन्या की नींद खुल चुकी थी। सामने अपरिचितों को देख उसकी आंखें फटी रह गईं। डर के मारे वह चिल्लायी, "हे अजनबियों, तुम मृत्यु के द्वार पर क्यों आए हो? भागो, अपनी जान बचाकर भागो। मेरे पिता का मोतीमहल अब नागराज के अधीन है। उसने मेरे माता-पिता एवं भाई-बहनों को निगल लिया है। और अब मेरी बारी है।"

इस पर अर्जुन ने कहा, "हे, नवयुवती! अब डरने की कोई बात नहीं है। हमने नागराज को मारकर उसका मणि-युक्त मुकुट चुरा लिया है।" यह कहते हुए उसने नवयुवती के मोतियों-से सफेद हाथ पर मणि रख दी।
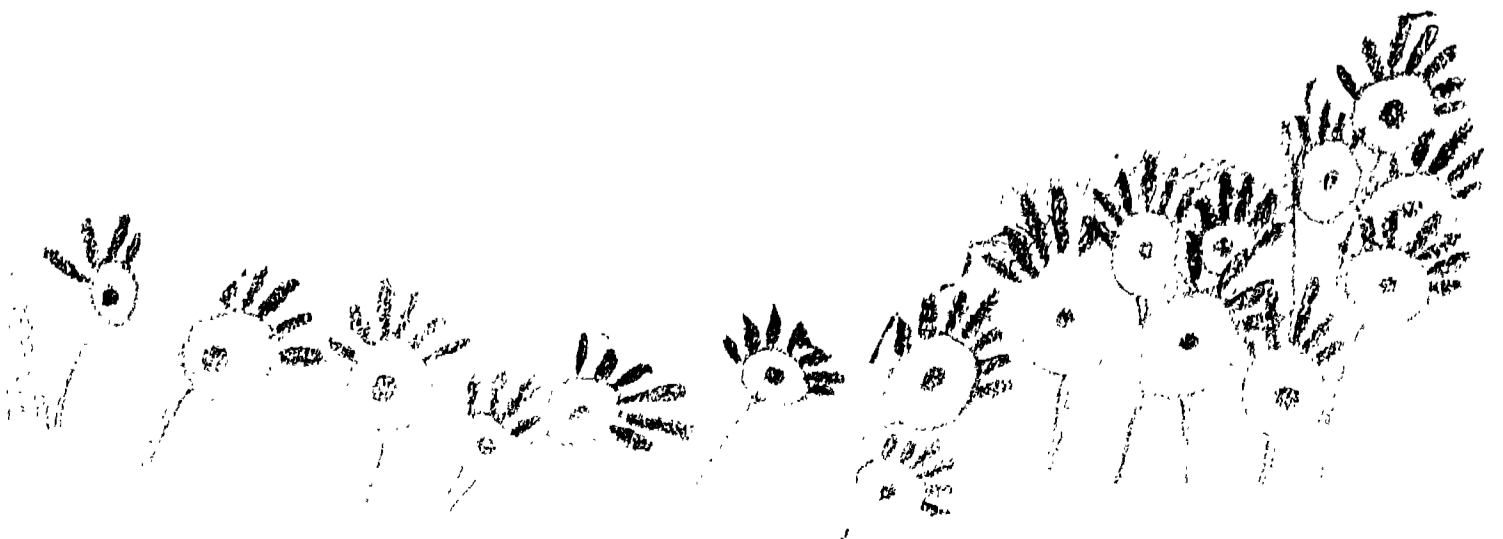
पर वह नवयुवती अर्जुन की बांह पकड़े खड़ी रही। उसे डर था कहीं अर्जुन एक सुंदर सपने की तरह गायब न हो जाए। फिर उसने कहा, "मणि को तुम अपने पास ही रखो। मैं अभी सपनों की दुनियां में खोई हूं। जागते ही मुझे पता चलेगा कि मैं सपना देख रही थी। और तब तक तुम भी जा चुके होंगे।"

अपनी लाल अंगूठी उस नवयुवती की कोमल अंगुली में स्नेहपूर्वक पहनाते हुए अर्जुन ने कहा, "तुम सपने में नहीं हो। मैं सचमुच यहां हूं। मैं तो तुमसे प्रेम करता हूं और विवाह रचाकर तुम्हें अपने पिता के महल ले जाना चाहता हूं। वहां हम दोनों की जिंदगी हमेशा प्यार एवं खुशी से भरी होगी।"

समय, पंख लगाकर उड़ता रहा। सब-के-सब काफी खुश थे। अर्जुन एवं आनंद ने कमल झील के तल में विद्यमान मोतीमहल तक की रहस्यमय यात्रा का वृत्तांत उस नवयुवती को सुनाया। उसने भी अपने पिता, मोतीमहल के राजा के बारे में सब कुछ बताया। कमल-झील की असीम गहराई में छिपी अकूत संपत्ति के संबंध में भी बताया।

तब एक दिन चिंतित होते हुए आनंद ने कहा, "अर्जुन, तुम्हारे पिता एवं उनकी प्रजा दुःखी होगी। उन्हें तुम्हारा कुछ भी पता नहीं है। तुम कब तक लौटोगे ...यह भी नहीं। उनके राज्य तक पहुंचने का रास्ता लंबा एवं खतरों से भरा है। फिर, हमारे पास घोड़े भी नहीं हैं। पर तुम यहीं रुको। मैं वापस जाकर राजा को अपनी रहस्यमयी यात्रा के बारे में बताता हूं। मोतियों वाली सुंदर राजकुमारी से तुम्हारे प्रेम की बात भी बताऊंगा। शीघ्र ही मैं हाथियों एवं घोड़ों के साथ अन्य लोगों को लिए वापस लौटूंगा। फिर तुम्हें एवं राजकुमारी को वापस तुम्हारे महल ले चलूंगा।"

इस तरह आनंद ने वापसी का दिन एवं समय निश्चित कर लिया। अर्जुन ने वादा किया कि वह राजकुमारी के साथ झील के किनारे नियत समय पर उसकी प्रतीक्षा करेगा। राजकुमारी से विदा लेकर आनंद चल पड़ा। अर्जुन हाथ में नागमणि लिए सुनहले सीढ़ी चढ़ते हुए आनंद को झील की सतह पर छोड़ गया।

एक क्षण दोनों मौन रहे। फिर दोनों अलग हो गए। दो चार कदम आगे बढ़ आनंद ठिठका, पीछे मुड़कर देखा और फिर दौड़ना शुरू कर दिया। अर्जुन वहीं खड़ा देखता रहा। धीरे-धीरे आनंद उसकी आंखों से ओझल हो गया।

कमल-झील के नीचे महल में अर्जुन एवं राजकुमारी का समय प्रेम का पंख लगाए उड़ता रहा। पर एक दिन, न जाने क्यों राजकुमारी ने अर्जुन की स्वर्ण मंजूषा

से नागमणि चुराकर उसके सहारे झील के सतह पर आ पहुंची।

ऊपर उसे सब कुछ प्रकाशित एवं जलता हुआ लगा। उसने तो पहले कभी दिन का प्रकाश देखा ही नहीं था। सूर्य की सुनहली किरण भी वह पहली बार देख रही थी। धरती एवं आकश की छटा पर मुग्ध वह झील के किनारे बैठ गई। सूरज की रोशनी में नहाए पहाड़ों एवं फूलों से भरे बागों को निहारती रही। चिड़ियों के मधुर संगीत में डूबी राजकुमारी उन्हें नाचते, फड़फड़ाते, उड़ते देखती रही। उनके छोटे-छोटे पदचिह्न रेत पर बनते रहे। अब राजकुमारी धीरे-धीरे दबे पांव बाग में टहलने लगी। सुगंधित फूलों के रंगों को निहारती वह अचानक ठिठक गई।

पेड़ों के नीचे से एक बूढ़ी कर्कश आवाज आई, "यह क्या है तुम्हारे हाथ में? इसकी चमक मेरी आंखों को चुंधिया रही है।"

राजकुमारी सकते में आ गई। इधर-उधर देखते उसकी नजर पेड़ के नीचे बैठी झुर्रियों वाली बूढ़ी महिला पर पड़ी। वह हरे एवं बैगनी रंग का शानदार परिधान बना रही थी, जो बिल्कुल मोर-पंख की तरह दिखता था।

बूढ़ी महिला के समीप जाकर राजकुमारी ने पूछा, "मोती जड़े मेरे इस परिधान के बदले जो पोशाक तुम बना रही हो वह दोगी।"

बुढ़िया ने जवाब दिया, "मैं जब तक इसमें किनारी नहीं लगा लेती तुम्हें रुकना होगा। हां, तब तक तुम झील के निर्मल जल में नहा सकती हो। नीले मोती से आकाश में सूर्य की नाचती किरणों को देख सकती हो।"

राजकुमारी ने बिना कुछ सोचे-समझे उस मणि को पेड़ के नीचे रख दिया। फिर झील की ओर बढ़ते हुए जैसे ही एक बार पीछे मुड़कर देखा, बुढ़िया मणि के साथ गायब हो चुकी थी। राजकुमारी बुढ़िया को पेड़ों के नीचे एवं झील के चारों ओर ढूंढती रही, चिल्लाती रही। पर सब व्यर्थ...। डर से बदहवास वह झील की ओर भागी। झील का पानी अब अथाह एवं काला दिख रहा था। वह झील के किनारे सिर पकड़े बैठी रही, सुबकती रही। उसके गोरे गालों पर आंसू की बूंदें लुढ़क गईं।

उसी समय फूलों वाले बाग का राजा वहां से गुजरा। उसने घोड़ा रोककर राजकुमारी से पूछा, "हे सुंदरी, तुम क्यों रो रही हो?" राजकुमारी ने सिर उठाकर डबडबाई आंखों से उसकी ओर देखा। फिर उसने बुढ़िया द्वारा उस मणि चोरी की बात सुनाई, जिसके बिना झील के नीचे अपने महल में उसका वापस जाना असंभव था।

इस पर राजा ने कहा, "अपने आंसू पोंछ लो। फिर मेरे महल चलो। मेरे
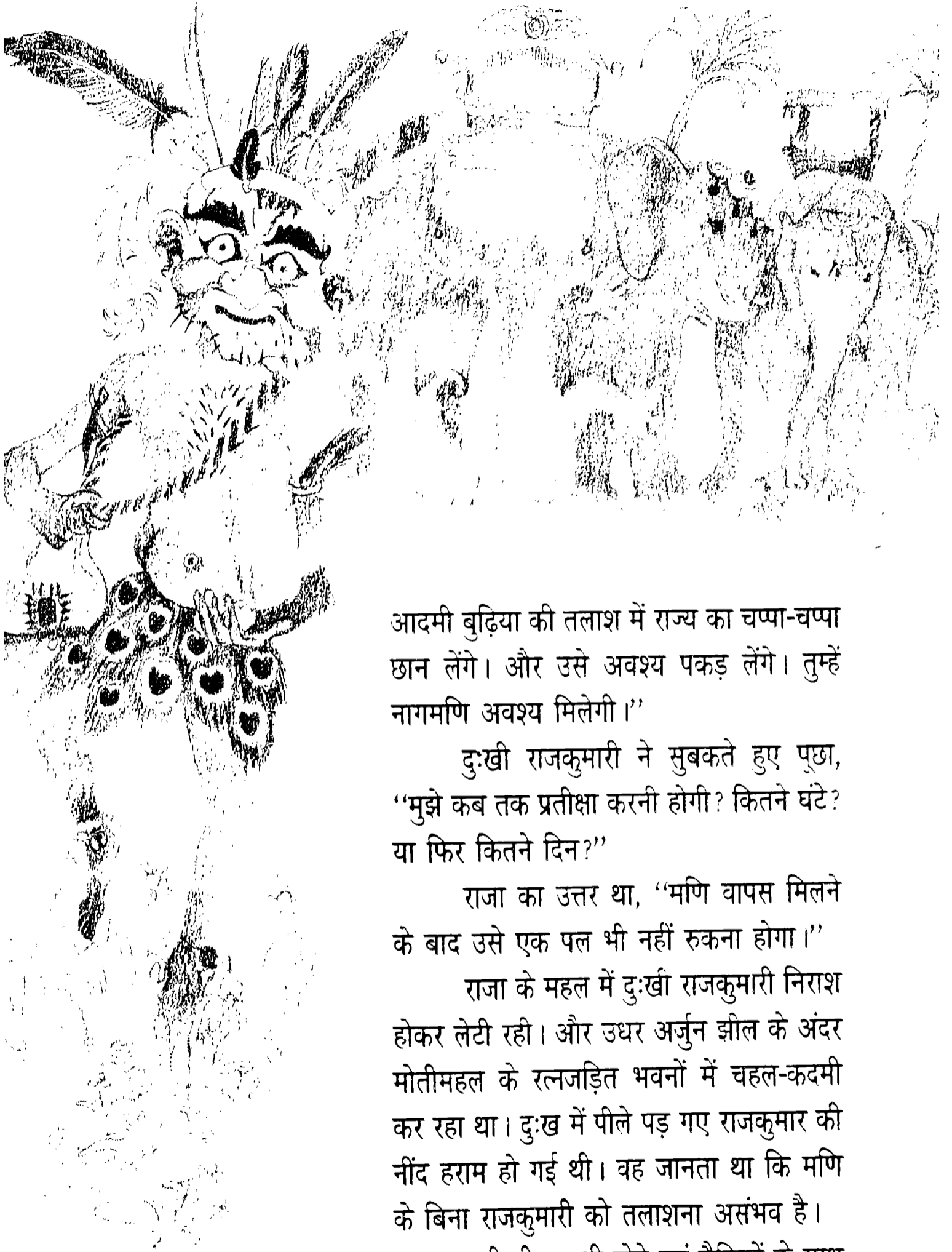
आदमी बुढ़िया की तलाश में राज्य का चप्पा-चप्पा छान लेंगे। और उसे अवश्य पकड़ लेंगे। तुम्हें नागमणि अवश्य मिलेगी।''

दुःखी राजकुमारी ने सुबकते हुए पूछा, ''मुझे कब तक प्रतीक्षा करनी होगी? कितने घंटे? या फिर कितने दिन?''

राजा का उत्तर था, ''मणि वापस मिलने के बाद उसे एक पल भी नहीं रुकना होगा।''

राजा के महल में दुःखी राजकुमारी निराश होकर लेटी रही। और उधर अर्जुन झील के अंदर मोतीमहल के रत्नजड़ित भवनों में चहल-कदमी कर रहा था। दुःख में पीले पड़ गए राजकुमार की नींद हराम हो गई थी। वह जानता था कि मणि के बिना राजकुमारी को तलाशना असंभव है।

इसी बीच हाथी-घोड़े एवं सैनिकों के साथ नियत समय पर आनंद झील के पास पहुंचा। पानी पर टकटकी लगाए वह इंतजार करता रहा। उसे हर पल लगता कि अर्जुन एवं राजकुमारी प्रकट होंगे। इंतजार

करते-करते वह झल्ला गया। चिंता की रेखा उसके माथे पर झलकने लगी। वह चकित था, आखिर वादा कर दोनों क्यों नहीं आए।

अचानक बाग के दूसरी तरफ से हंसने की आवाज आई। हवा में उसकी खनक देर तक लहराती रही। साथ ही हवा के झोंके से टनटनाती घंटियों की आवाज बाग के ऊपर गूंजती रही। अब घोड़ों ने हिनहिनाना शुरू कर दिया। और हाथियों ने चिंघाड़ना...। उपस्थित लोगों ने आवाज की दिशा में देखा। उधर से एक मसखरा दिखने वाला आदमी आ रहा था। मोर के पंखों से बना एक घाघरा पहने उस आदमी के सिर पर रंग-बिरंगे पंखों से बना मुकुट था। उसके पांवों में घुंघरुओं का गुच्छा बंधा था। और फूलों वाले बाग में वह झूमता हुआ नाच रहा था और चक्कर लगा रहा था।

अचानक वहां चुप्पी छा गई। वह अजीब इंसान बिल्कुल स्थिर हो गया था। वह खड़े-खड़े उन घोड़ों एवं हाथियों को देख रहा था। फिर चक्कर लगाकर वह उछलने लगा और चिल्लाया, "हीरा है, मेरे पास एक बड़ा हीरा है। मुझे एक हाथी दो मैं यह हीरा दे दूंगा।" इसके साथ ही वह अपनी फटी-पुरानी थैली से एक चमकता हीरा निकाल लिया।

आनंद को नागमणि पहचानते देर नहीं लगी। उस मसखरे के हाथ से मणि झपटते हुए आनंद ने पूछा, "यह हीरा तुम्हें कहां मिला?"

"मेरी मा ने मुझे दिया" अपनी खीसें नीपोड़ते हुए उसने कहा।

फिर बेचैनी से आनंद ने पूछा, "तुम्हारी मां कहां है?"

इतना सुनना था कि वह इंसान खुशी से ताली पीटने लगा। फिर बेवकूफों की तरह हंसते हुए कहा, "मेरी मां? ओ...मेरी मां? वह तो मर गई। मर गई, मर...गई।"

अब आनंद ने चिल्लाते हुए कहा, "अब यह हाथी लो और जाओ।"

खुशी से चिल्लाता वह सनकी मसखरा हवा में उछला और चकरघिन्नी की तरह घूमता हुआ हाथी की पीठ पर धम्म से जा बैठा। फिर गाते हुए चल पड़ा :

मैं राजा, एक राजा, बलशाली राजा।
मूर्खों एवं मसखरों के राज्य का मैं राजा,
आसमान के धुंधलाते ही, भाग्य देवी के झुंझलाते ही!
हंसूं, खुश हो मैं गाऊं गीत, और बजाऊं बाजा।

मैं राजा, एक राजा, बलशाली राजा।
अपने गुलाबी हाथी पर मैं सवार,

गाते, झूलते जैसे मदमस्त बयार।
छोटे गोरैये की मुझे तलाश, दुल्हन बनाता उसे मैं काश!
साथ-साथ हम गाते-नाचते, आता खूब मजा,
मैं राजा, एक राजा, बलशाली राजा।

आनंद के दिमाग में हजारों शंकाएं उठ रही थीं। एक क्षण के लिए वह रुका ... बिल्कुल शांत। दरअसल वह दिमाग शांत करना चाहता था ताकि कुछ निर्णय ले सके।

सैनिकों को अपने वापसी तक झील के किनारे रुकने का आदेश देते हुए वह नागमणि हाथ में लिए घुटनों के बल बैठ गया। मणि वाले हाथ को पानी के अंदर ले जाते ही पानी पुनः अलग हो गया एवं रत्नजड़ित सुनहली सीढ़ी उभर आई। आनंद नीचे उतरता चला गया। पानी ने एक रेशमी लबादे की तरह उसे ढंक दिया।

शंकाओं से घिरा आनंद, दम साधे, मोतीजड़ित दरवाजे को पार कर मूंगा से बने गलियारे में पहुंचा। उसे रत्नजड़ित भवन में बदहवास, चहल-कदमी करता अर्जुन मिला।

आनंद ने हांफते हुए पूछा, "अर्जुन, तुम राजकुमारी के संग झील के किनारे क्यों नहीं आए? राजकुमारी कहां है?" अर्जुन ने सब कुछ बता दिया। पर उसे राजकुमारी एवं नागमणि के बारे में कुछ भी पता नहीं था।

फिर एक पल भी गंवाए बिना वे उस मणि के साथ सीढ़ी चढ़कर ऊपर आ गए। झील के किनारे पहुंचते ही उन्होंने लोगों की एक भीड़ देखी। उसमें सेवक, संतरी, सैनिक एवं अन्य लोग खड़े थे और चिल्ला रहे थे :

"मोतीमहल की राजकुमारी की एक मणि खो गई है। आपने देखी है...?"

उत्तेजित आनंद ने उनसे पूछा, "कहां है कमलझील की राजकुमारी?"

"मेरे राजा की मेहमान है, उनके महल में रहती है" एक सैनिक ने कहा।

"चलो, महल की ओर चलें" कहता हुआ आनंद
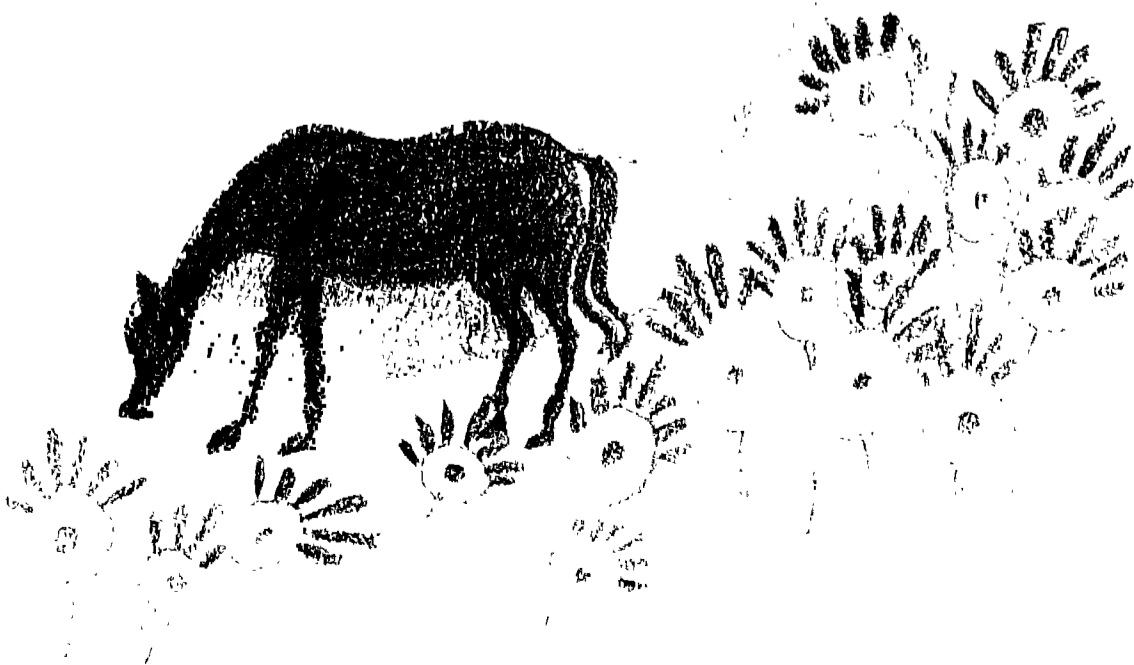
एक घोड़े पर सवार होकर सरपट भागा। पीछे हाथी पर सवार अर्जुन था। और लोग भी चल पड़े।

हाथियों, घोड़ों एवं लोगों का जुलूस अपने महल की ओर आते देख फूलों वाले बाग के राजा ने पूछा, "यह कौन शाही मेहमान है, जो मुझसे मिलने आ रहा है?"

तभी आनंद घोड़े पर से उतरा। और राजा के सामने झुकते हुए निवेदन किया, "हे दयालु राजा! मेरे राजकुमार मोतीमहल की राजकुमारी को लेने आए हैं। दयालुता के लिए वे आपको धन्यवाद देना चाहते हैं।"

राजा ने अर्जुन का स्वागत कर तुरंत राजकुमारी को उसके आने का संदेश भिजवाया।

दुःख से सिर झुकाए राजकुमारी धीरे-धीरे राजा के समीप पहुंची। आंखें ऊपर उठाते ही वह धीमे स्वर में बोली, "अर्जुन...आनंद! सचमुच तुम दोनों ही हो। या मैं सपना देख रही हूं।"

अर्जुन उसके दोनों हाथ पकड़कर चूमता रहा। आनंद ने उसके पास जाकर, वह मणि उसके सुपुर्द कर दी।

अर्जुन ने राजा को एक बार फिर धन्यवाद दिया। उन्हें अपने पिता के राज्य में आने का निमंत्रण भी दिया। फिर वे सभी घर वापसी की लंबी यात्रा पर निकल पड़े। जंगलों से गुजरते, पर्वतों को लांघते, वे बढ़ते रहे। राजकुमारी की आंखें अभी भी स्वप्निल थीं। आह भरते हुए उसने कहा, "मेरे लिए यह सब एक सपने की तरह है। वह सपना जिसे मैं कब से देखती रही हूं।"

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल
मुंद गईं फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।

मोती-चंद्र के फूल

बहुत दिन पहले की बात है। एक दयालु एवं महान राजा था। उसकी सात सुंदर रानियां थीं। वह एक सुनहले महल में रहता था। मोती एवं पन्ना से जड़ा वह महल दिन रात चमकता था।

दुनियां की सारी बुद्धिमानी उस राजा के पास थी। कुबेर के खजाने की तरह उसका खजाना अनमोल रत्नों से भरा होता। उसका अस्तबल शानदार जंगी घोड़ों एवं बलशाली हाथियों के लिए प्रसिद्ध था। उसके पास वफादार सैनिकों की एक विशाल सेना थी। राज्य में योग्य एवं बुद्धिमान राजनेता थे। और जनता संतुष्ट एवं खुश थी। कोई राजा, भला और क्या चाहता?

परंतु इतना सब रहते हुए भी राजा की स्थिति दयनीय थी। कहने को तो उसकी सात सुंदर रानियां थीं, पर बच्चा एक भी नहीं। यही गम राजा को सालता रहता था। रानियां एवं प्रजा भी दुःखी थी। उनसे राजा का गम देखा नहीं जाता।

एक दिन पौ फटते ही सातो रानियां नदी में स्नान करने निकलीं। सितारे कब के डूब चुके थे। सवेरा अपनी आंखें मलते हुए उषा किरण के स्वागत में आकाश का द्वार, पूर्व में खोल रहा था। नदी तट पर पहुंचते ही रानियों ने देखा कि एक इंद्रधनुषी कुहासा मंडराते हुए उनकी ओर आ रहा है। ऐसा लगता था जैसे एक रेशमी परदा हवा के साथ लहरा रहा हो। कुहासे से धीरे-धीरे मोतियों-से बूंद बरसने लगे। फिर उसमें से एक ठिगना बूढ़ा प्रकट हुआ। उसकी चांद से बनी रूपहली दाढ़ी फहराती हुई नदी के पानी तक जा पहुंची। अब तो रानियों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।

प्रातः बेला की मंद-मंद हवा-सी आवाज में उस बूढ़े ने सबसे बड़ी रानी से कहा, "यह जड़ी-बूटी लो। इसे पीसकर लेई बना लेना। उसे सात बराबर हिस्सों में बांट लेना ताकि हरेक को एक हिस्सा मिले। फिर उसे गुलाब के अर्क में मिलाकर, भगवान का ध्यान कर पी लेना। तुम में से प्रत्येक एक सुंदर राजकुमार

को जन्म दोगी।'' इतना कहकर वह बूढ़ा ओस की बूंद की तरह गायब हो गया। सातों रानियां शीघ्र ही महल वापस लौट चलीं। उनका चेहरा खुशी से चमक रहा था।

महल पहुंचते ही सबसे बड़ी रानी ने सबसे छोटी दो रानियों से कहा, ''जल्दी से मंदिर जाकर फूल एवं फल चढ़ा आओ। तब तक हम जादुई जड़ी-बूटी को पीसकर लेई बनाते हैं। तुम दोनों के वापस आने पर उसे बराबर-बराबर बांटकर भगवान से प्रार्थना करेंगे कि हम सबको एक-एक संतान हो।''

सबसे छोटी दोनों रानियां शीघ्र ही मंदिर से वापस आईं। वे खुशी से फूली न समा रही थीं। पर उनकी खुशी शीघ्र ही दुःख में बदल गई। बड़ी रानियों ने मिलकर जादुई जड़ी बांट ली थी। उन दोनों के लिए कुछ भी नहीं बचा था।

सबसे छोटी रानी तो फूट-फूटकर रो पड़ी। पर उससे बड़ी ने ढाढस बंधाते हुए कहा, ''बहन, अपने आंसू पोछ लो। आओ, हम संगमर्मर के उस सिल को धोते हैं जिस पर जड़ी को पीसा गया है। फिर उस 'धावन' को गुलाब के अर्क में मिलाकर प्रार्थना करते हुए पी लेंगे।''

नौ पूर्णमासी एवं अमावस्या के बाद पांचों बड़ी रानियों ने एक-एक लड़कों को जन्म दिया। उनकी सुंदरता देखते ही बनती थी। राजा की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। उसने उन रानियों को उपहार में ढेर सारे स्वर्णाभूषण दिए। पूरे राज्य में गरीबों को भोज दिया गया। सोने-चांदी के सिक्के लुटवाए गए। चारों ओर खुशी एवं संगीत का माहौल था। लोग खुशी से नाच-गा रहे थे। उनका राजा अब बहुत सुखी था।

''पर सबसे छोटी दोनों रानियों का क्या हुआ...?'' बेचारी रानियां! उनमें से एक ने बंदर को जन्म दिया। तो दूसरे ने उल्लू को। क्षुब्ध एवं लज्जित राजा ने अपने दो विश्वासपात्र सेवकों को आदेश दिया कि वे उन दोनों रानियों को अभागे बच्चों के साथ महल से दूर घने जंगल में छोड़ आएं।

समय के साथ महल में पले ये राजकुमार सुंदर एवं बहादुर बने। उन्होंने अड़ियल घोड़ों को लगाम देने की कला पाई। तलवारबाजी में निपुणता प्राप्त की। सरपट भागते हिरण को एक तीर से धराशायी करने में भी उन्हें महारत हासिल थी।

उधर बीहड़ में बंदर एवं उल्लू भी बड़े हो रहे थे। जानवरों की संगत में उन्होंने भी दहाड़ना, चिंघाड़ना, गुर्राना और हुआं-हुआं करना सीख लिया। दिन भर

वे शीतल, हरे बागों में खेलते, सूरज ढलते ही थके-मांदे वापस आते और गहरी नींद में सो जाते। बंदर अपनी मां की गोद में और उल्लू अपनी मां की बांह पर।

एक दिन पांचों राजकुमार सेवकों के साथ शिकार के लिए जंगल गए। वहां सूर्य की किरणें पेड़ों की झुरमुटों से छनकर धरती पर प्रकाश एवं छाया का मनोरम दृश्य बना रहे थे। पत्तियां इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं। इतने में सबसे बड़े राजकुमार को भयभीत होकर भागता एक हिरण दिख गया। तुरंत उसने तीर निकाल निशाना साध लिया।

तभी पेड़ के ऊपर से सहमी हुई एक आवाज आई, "हे दयालु राजकुमार! हम प्रार्थना करते हैं, हमारे निर्दोष मित्र को नहीं मारो।"

चौंककर राजकुमार ने ऊपर देखा जहां एक बंदर एवं एक उल्लू बैठे थे। उनकी आंखें भर आई थीं। अचंभित राजकुमार ने अपने सेवक से पूछा, "क्या यह संभव है? भला कोई जंगली जानवर मनुष्यों की तरह बोल सकता है।" इस पर सेवक ने नजरें झुकाए हुए कहा, "इस दुनियां में कुछ भी संभव है, राजकुमार! यह बंदर एवं उल्लू भी आपके पिता की संतान हैं।"

"क्या?" गुस्से में चीख पड़ा राजकुमार। "तुम्हारा मतलब है कि ये नीच जंगली जानवर मेरे भाई हैं? मैं, उच्च कुल का एक राजकुमार, अभी प्रतिज्ञा करता हूं कि उनका वध किए बिना महल नहीं जाऊंगा।" फिर अन्य राजकुमारों की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, "भाइयो, आओ। हम इन दो जंगली जानवरों का वध कर दें, जो संभवतः हमारे ही भाई हैं।"

किंतु तब तक बंदर एवं उल्लू गायब हो चुके थे। राजकुमारों एवं सेवकों ने उन्हें बहुत ढूंढा पर व्यर्थ :

जहां-जहां गई उनकी नजर,
डाल-डाल, और पेड़-पेड़ पर।
कोना-कोना छान मारा, और,
छूटी न एक गुफा, न एक सरोवर।
इधर देखा, उधर देखा,
ऊपर देखा, नीचे देखा,
पर दोनों की कोई न थी रूप-रेखा।

रात होते ही घोड़ों को बेतहाशा भगाते हुए पांचों राजकुमार वापस महल आए।

उधर बंदर एवं उल्लू भी अपनी झोपड़ी

पहुंचे। परंतु उस रात जब उनकी मांएं सो गईं तो वे झोपड़ी से बाहर निकल आए। एक लंबी चुप्पी तोड़ते हुए बंदर ने कहा, "ऐ भाई, यह तो पता चल गया कि हम भी उच्च कुल में जन्मे राजकुमार हैं!"

एक दिन नगाड़े की जोरदार आवाज से जंगल की शांति भंग हो गई। एक अज्ञात राज्य से आए कुछ संदेशवाहक सूचित कर रहे थे कि एक विशिष्ट राजकुमारी को वर की तलाश है। राजकुमारी की आंखें कमल की तरह सुंदर एवं बाल बादलों की तरह काले हैं। पर संदेशवाहकों का कहना था कि वह उसी बहादुर राजकुमार से विवाह करेगी जो उसे ढूंढ निकालेगा और उसके बालों में से मोती-चंद्र का फूल चुरा सकेगा।

हालांकि किसी को भी न तो राजकुमारी का पता था और न ही उसके राज्य का। पर हरेक राज्य का प्रत्येक राजकुमार उसे ढूंढ निकालने चल पड़ा।

हमारे पांचों राजकुमार भी कहां पीछे छूटने वाले थे। सुनहले नाव में चांदी का पाल लगाकर राजकुमारी की तलाश में निकल पड़े।

इस विचित्र खोज की बात बंदर के कानों तक पहुंची। फुसफुसाते हुए उसने भाई से कहा, "अब, जब हम जान चुके हैं कि हम भी उच्च कुल में जन्मे राजकुमार हैं, क्यों न हम भी अज्ञात देश की राजकुमारी की खोज में चलें।" इस तरह बंदर एवं उल्लू भी नारियल की खोपड़ी को अपनी नाव बनाकर उसमें सवार होकर चल पड़े। वे रास्ते में खुशी से गाते रहे :

लो, चले हम भी, मैं और मेरा प्यारा भाई,
ऊपर आसमान है, नीचे सागर की गहराई।
अनजान देश में राजकुमारी है एक अनजाना,
फूल चुराकर उसके बालों का, उसे है अपनाना।
बढ़ते चलेंगे हम, मैं और मेरा प्यारा भाई,
जीएं-मरें या फिर कुछ भी हो कठिनाई।

सुनहले नाव में तीस दिन एवं तीस रात की समुद्री यात्रा के बाद पांचों राजकुमार एक निर्जन टापू पर पहुंचे। वहां चारों ओर सूर्य की चमक तो थी, पर उजाला एवं गर्मी लेश मात्र भी नहीं थी। मीलों दूर तक धान के खेत थे पर दाना एक भी नहीं। बड़े-बड़े पेड़ थे पर उनमें फूलों-फलों का नामोनिशान नहीं था।

यह छल-कपट का टापू था। यहां तीन दुष्ट चुड़ैलें रहती थीं। पहली चुड़ैल के माथे पर बीचोंबीच एक आंख थी। तेजी से गोल-गोल घूमते हुए आंख से नीला-हरा अंगार निकल रहा था। दूसरी चुड़ैल के नाक के ऊपर की ओर मुड़े थे मानो जुड़वां चिमनियां हो। फूं-फूं की आवाज के साथ उनसे बैगनी धुंआ निकल रहा था। तीसरी चुड़ैल के सिर के पीछे एक विशाल कान था। वह किसी विशाल पंखे की तरह डोल रहा था, फड़फड़ा रहा था। उससे एक भीषण तूफान चल रहा था।
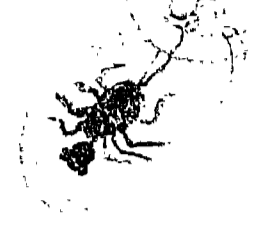
उन चुड़ौलों की नजर जैसे ही नाव में सवार पांच राजकुमारों पर पड़ी, उन्होंने अपने आंख, नाक एवं कान खोल दिए। उनसे अंगारे बरसने लगे, धुआं निकलने लगा। तूफान उठ खड़ा हुआ। पूरे आसमान में लपटें फैल गईं। हवा में जहरीला बैगनी धुंआ भर गया। समुद्र में हलचल मचा था। उसमें ज्वार के साथ झाग भर आया। पांचों राजकुमारों एवं सुनहले नाव को निगलने के लिए भीषण लहरें उठने लगीं।

कुछ देर बाद नारियल की खोपड़ी के नाव में सवार बंदर एवं उल्लू दिख पड़े। उन्हें देखते ही तीनों बड़ी चुड़ैलों की हंसी छूट गई। बंदर अपने पंजे से एवं उल्लू अपने पंखों से पानी काटते बहादुरों की तरह बढ़ जा रहे थे। इस दृश्य को देख चुड़ैलों की हंसी रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। उन्होंने निरा मूर्ख, निर्दोष एवं अहितकर जंतुओं को आगे जाने दिया।

अचानक नारियल की खोपड़ी वाली उनकी नाव एक समुद्रताल की ओर बह गई। वहां पानी बिल्कुल ठहरा हुआ था। उसकी गहराई रहस्यपूर्ण थी। इसीलिए बंदर ने नाव रोककर कहा, "अरे भाई, लगता है हम अपनी मंजिल, उस अनजान देश के समीप हैं। तुम यहीं ऊपर रुककर रखवाली करो। मैं गहरे रहस्यमयी पानी के अंदर गोता लगाता हूं। और देखता हूं कि वहां क्या है।"

इस प्रकार बंदर अथाह समुद्रताल में नीचे डूबता चला गया। अंदर ठंड बढ़ती जा रही थी। उसका खून जमने लगा था। उसे लगता कि उसकी कुल्फी जम जाएगी। अंदर का घुप्प अंधेरा एवं शांति उसे भयभीत करने लगी थी। उसने सपने में .. नहीं सोचा था कि वह इस तरह अकेला पड़ जाएगा, खो जाएगा। फिर अचानक उसने खुद को कांच के एक हरे पर्वत से घिरा पाया। देखते-देखते एक जोरदार लहर ने उसे जादुई पर्वत के ऊपर से बहाकर एक जादुई बागीचे में गिरा

दिया।

वहां हरे-भरे एक पेड़ के नीचे फूलों की सेज पर एक सुंदर कन्या लेटी थी। वह एक सुनहली चिड़िया से बात कर रही थी। उसके बालों में मोती-चंद्र का फूल देखते ही बंदर समझ गया कि अनजान देश की राजकुमारी वही है। वह चुपचाप, कांपते पंजे से, दम साधे राजकुमारी की ओर बढ़ने लगा। फिर एक झटके से राजकुमारी के बाल से मोती-चंद्र का वह फूल हासिल कर लिया। इतने में सुनहली चिड़िया ने :

बदहवास हो अपने पंख फड़फड़ाए।
चिल्लाई, "राजकुमारी, कहां गए,
बालों में गुंथे फूल तुम्हारे?"

चौंककर राजकुमारी ने सिर में अपना हाथ

फेरा और झट से पीछे मुड़कर देखा। वहां अपने कांपते पंजे में फूल थामे खड़ा था बंदर। राजकुमारी उसे देखते ही डर से चीख पड़ी। दूसरी ओर मुड़कर उसने अपना चेहरा दोनों हाथों में छिपा लिया। फिर सुबकने लगी। लेकिन भयभीत चिड़िया गाती रही :

मत रो, मत रो ऐ अच्छी राजकुमारी,
वचन तेरा जो टूटा, तू भी जाएगी मारी।

चिड़िया के दर्द भरे गीत सुन राजकुमारी की बहनें फूलों के बाग के पार से रोते हवा के संग वहां आ पहुंची। मोती-चंद्र के उस फूल को एक बंदर के रोएंदार पंजे में देख दुःख से उनका दिल बैठ गया और वे जार-जार रोने लगीं।

अचंभित बंदर वहां खड़ा रहा। उसके माथे पर बल पड़ रहे थे। दिल धौंकनी की तरह चल रहा था। अचानक एक बात बिजली की तरह उसके जेहन में कौंध गई, "मैंने भी तो सात समुद्र लांघने का दुस्साहस किया है। जल की अथाह गहराइयों में डुबकी लगाने का खतरा मोल लिया है। फिर, इनाम की दावेदारी में कैसा डर?"

अब बंदर का डर जाता रहा। पूंछ को हवा में लहराते वह उछलकर राजकुमारी के समक्ष जा पहुंचा। उसके काले घने बाल को सहलाते हुए कहा :

फूलों-सी सुंदर,
गीतों-सी सुरीली, ऐ राजकुमारी, छबीली।
बताओ, तेरे हैं और कौन?

इस पर आंसुओं को पोंछते हुए राजकुमारी ने धीमे स्वर में कहा :

छह बहनों वाली मैं, मेरा न कोई भाई,
कभी मैं थी लाडली माता-पिता की,
अब, मैं बस तेरी, मेरा न सगा न कोई।

अब बंदर और करीब आकर उसकी झील-सी गहरी आंखों में झांकते हुए फुसफुसाया :

कमलनयनी, प्रिय राजकुमारी!
पास आओ, मेरी दुल्हन बन जाओ।

राजकुमारी कुछ जवाब देती उससे पहले ही सबसे बड़ी बहन चिल्ला उठी :

नहीं! नहीं! नहीं!
वह जा सकती नहीं!

भला हो या बुरा, हम पर है शाप पड़ा
सुंदर सातो बहनें हम,
समुद्रराज के मानते कहने हम।
बिना उसकी मर्जी के वह
जा सकती नहीं, नहीं! नहीं!
कहीं नहीं, कहीं नहीं!

फिर एक कुटिल मुस्कान लिए उसने बंदर से कहा, "मेरे पीछे आओ। मैं तुम्हें समुद्रराज की गुफा दिखाती हूं।" डर से बंदर का दिल बैठने लगा। पर वह उस राजकुमारी के पीछे चल पड़ा। पथरीली, चट्टानी राहों से होकर दरारों से निकलकर वे एक भयानक, भूरे रंग की गुफा के पास पहुंचे। वहां मूंगा का एक खड़ा चट्टान था। उसके अंदर एक संकरा मार्ग जा रहा था। यही भव्य मूंगा की गुफा का मार्ग था। उसी की ओर इंगित करते हुए वह राजकुमारी बोली, "मूंगे के उसी विशाल गुफा में सात समुद्र के राजा का निवास है।" यह कहकर राजकुमारी ने विदा ली और हवा में लुप्त हो गई।

वह उत्साहित बंदर जैसे ही गुफा में पहुंचा उसके पांव फिसले और वह धड़ाम से गिरा। सहसा गुफा का द्वार बंद हो गया। अंदर घुप्प अंधेरा हो गया। बेचारा अकेला बंदर हांफता हुआ रोशनी के लिए प्रार्थना करने लगा। उसके शरीर की एक-एक हड्डी, एक-एक जोड़ दुःख रहा था। और बंदर को बचने की उम्मीद नहीं लग रही थी।

पर उसी क्षण एक अचरज घटित हुआ। ऐसा लगा कि सूर्योदय की किरणें मूंगे की गुफा को बेधती हुई अंदर आ रही हों। रोशनी देख बंदर की आंखें चमक उठीं। उसने गुफा के बाहर एक नाटा बूढ़ा देखा। उसकी बड़ी सफेद दाढ़ी चमक रही थी। मानो काले बादल में बिजली चमक रही हो। प्रातःकाल की शांत हवा से स्वर में उसने बंदर से कहा :

"मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें मंजिल तक पहुंचा दूंगा।"

यह सब एक स्वप्न की तरह लग रहा था। पर बिल्कुल सच था। स्तब्ध बंदर उसी बूढ़े के पीछे चल दिया। जीर्ण-शीर्ण छत वाली उस गुफा से निकलकर, कांटेदार जंगल होते हुए वे एक जादुई बागीचे में पहुंचे। वहीं फूलों वाले एक पेड़ के नीचे बैठकर छह बड़ी राजकुमारियां बंदर की दुर्दशा पर हंस रही थीं। पर सबसे

छोटी राजकुमारी एकांत में बंदर की सुरक्षा के लिए प्रार्थना कर रही थी। उसके हाथ में कमल के फूलों की कलियों की एक माला थी।

उस बूढ़े नाटे आदमी के पैर जैसे ही बागीचे में पड़े, समुद्र में लहरें हिलोरें लेने लगीं। लहरों में ही पांचो खोए राजकुमार अपने सुनहले नाव में सवार दिख गए। नारियल की खोपड़ी वाले नाव में बैठा उल्लू भी दृष्टिगोचर हुआ। अब बादल की भांति उड़ता हुआ वह बूढ़ा अथाह जलराशि पारकर उन राजकुमारों एवं उल्लू को वापस ले आया। फिर उसने बंदर एवं उल्लू को अपनी बाहों में भर जादुई शक्ति जगाने के लिए ध्यानमग्न हो गया। देखते-देखते दोनों जंगली जानवर खूबसूरत राजकुमार में परिवर्तित हो गए। उनका चेहरा सौम्य था। उनकी सुंदरता देखते ही बनती थी।

अब रहस्योद्घाटन करते हुए उस बूढ़े ने कहा, "तुम सात राजकुमारों का जन्म जादुई वरदान से हुआ था। और इन सात राजकुमारियों का जन्म भी तुम लोगों की रानियां बनने के लिए ही हुआ है। पर किस्मत ने एक अजीब खेल दिखाया। दोनों छोटे राजकुमारों को जानवर बना दिया, ताकि वे इन सातों अभिशप्त राजकुमारियों को शापमुक्त करा सकें। पर अब जादू टूट चुका है। इसलिए खुशियां मनाओ। परंतु पहले दोनों निर्वासित रानियों को जंगल से वापस ले आओ। तब सुंदर दुलहनों के साथ अपने पिता के राज्य में वापस चले जाओ।"

यह कहकर प्रातःकालीन ओस की बूंद की तरह वह बूढ़ा गायब हो गया। सातों राजकुमार अपनी-अपनी दुलहनों के साथ सुनहले नाव में बैठकर चांदी का चप्पू चलाते सात समुद्र पार से वापस आ गये।

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल
मुंद गईं फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।

मोर के पंख

बहुत पहले की बात है। गगनचुंबी पर्वतों से घिरी घाटी में एक प्राचीन नगर था। विश्व का यह सुंदरतम नगर, धन-संपदा में भी बेजोड़ था। इस घाटी में एक नदी बहती थी। उसकी चमक आसमान में बिजली की चमक के समान थी। यह नदी लहराते हुए कमल के फूल से भरे झील में गिरती थी। ऐसा दृश्य बनता मानो पन्नों का द्वीप एक रूपहले बादल पर इतरा रहा हो।

नदी के पार एक विशाल भवन था। उसमें एक धनी व्यापारी अपनी तीन सुंदर बेटियों के साथ रहता था। व्यापारी की तीनो बेटियां इतनी सुंदर एवं सुशील थीं कि वह उन्हें बहुत प्यार करता था। उनके लिए दुनियां की सारी खुशी जुटाता—खेलने की सुनहली गुड़िया, जिसकी पन्ना-सी आंखें खुलतीं-बंद होतीं; मनमोहक गीत गाने वाली जादुई चिड़िया; और फिर सपनों वाली नाव जो उन्हें परियों की रहस्यमय दुनियां की सैर कराती।

वैसे तो व्यापारी अपनी बेटियों से सचमुच बहुत प्यार करता पर उसे खुद से कहीं ज्यादा लगाव था। और अपने आपसे भी अधिक प्यार उसे अपनी दौलत से था।

एक दिन व्यापारी ने अपनी बेटियों को बुलाकर पूछा, ''प्यारी बेटियो, मुझे बताओ तुमलोग किसके भाग्य से यहां दुनियां का सारा सुख भोग रही हो।''

इस पर सबसे बड़ी लड़की ने कहा, ''पूज्य पिताजी, मैं आपके भाग्य से ही ऐसी सुंदर जिंदगी गुजार रही हूं।''

दूसरे ने पिता का माथा चूमते हुए जवाब दिया, ''मेरे दयालु पिताजी आपके भाग्य से ही मेरी जिंदगी खुशी से निहाल है।''

पर तीसरी लड़की ने व्यापारी की आंखों में झांकते हुए कहा, ''पिताजी, मैं तो अपने भाग्य के बदौलत जी रही हूं।''

यह सुनते ही व्यापारी गुस्से से बिफरते हुए बोला, ''एहसानफरामोश! तुम्हें

आज ही, न केवल मेरा घर छोड़ना होगा बल्कि वे सारे कीमती उपहार भी त्यागने होंगे जो मैंने तुझे दिए। फिर मैं देखता हूं तुम कैसे अपने भाग्य के भरोसे रहती हो।''

बेचारी छोटी लड़की ने अपने आंसू पोछते हुए निवेदन किया, ''पिताजी, मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगी। पर मेरी एक विनती है। कृपाकर मुझे सूई-धागा वाला डब्बा ले जाने दीजिए।'' व्यापारी ने उसकी यह इच्छा पूरी कर दी। और उस लड़की को नगर से दूर पर्वतों के पार जंगल में भेज दिया।

पर जंगल से तो उसे पहली नजर में ही लगाव हो गया। कल-कल कर गाती नदी के साथ झूमते बड़े-बड़े घने, हरे पेड़ उसके मन को भा गए। काई से ढंकी चट्टानों की दरारों में सितारों की तरह गुलचांदनी का फूल चमक रहा था। वहीं बैगनी फूल इस तरह खिले थे मानो लजा रहे हों। नीलकंठ के उड़ते ही उसे लगा कि आसमान में बिजली चमक पड़ी है। फिर सम्मोहित हो वह लड़की रंग-बिरंगी तितलियों के पीछे चलती गई। पर जैसे ही उसने कठफोड़वा के चोंच की लयबद्ध टक-टक की आवाज सुनी उसने तो नाचना शुरू कर दिया। परंतु जैसे ही सूर्यास्त की लाली मद्धम पड़ने लगी और अंधेरा बढ़ने लगा, उसे घर की याद सताने लगी। उसके अपने पिता एवं बहनें सब वहीं थीं। अपना खूबसूरत नगर बार-बार उसकी आंखों के सामने घूम जाता। जंगल की अजीब शांति अब उसे काटने लगी थी। उसकी सारी खुशियां अंधेरे में खो गई थी। और वह एक विशाल हरे पेड़ के नीचे बैठकर फूट-फूटकर रोने लगी।

छोटी लड़की को इस तरह रोती देखकर वह विशाल वृक्ष दुःख से हिलने लगा। उसे जंगल की भयानक रात का पता था। सो उसने फुस-फुसाकर कहा, ''ऐ प्यारी बच्ची, कुछ देर में ही जंगली जानवर अपनी मांद से निकलकर शिकार की तलाश में घूमेंगे। वे देखते ही तुम्हें निगल लेंगे। पर घबराओ नहीं। मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा। तुम जैसे ही मेरे तना को खुलते देखो, उसमें अंदर घुस जाओ। फिर मैं तुम्हें चारों तरफ से घेर लूंगा। और तुम रात भर सुरक्षित रहोगी।''

उसी क्षण तना खुला। लड़की अंदर समा गई। फिर तना उसके चारों ओर घिर गया।

अब जंगल में भूखे जानवर शिकार सूंघ रहे थे। मानव के लहू की गंध से बौराये वे उस पेड़ के इर्द-गिर्द चक्कर काटते रहे। वे दहाड़ते-गुर्राते एवं हुआं-हुआं करते रहे। पेड़ की तना पर जोर-जोर से पंजा मारकर उसकी छाल उधेड़ते रहे।

धीरे-धीरे पेड़ की तना में खांचा बन गया। उन्होंने उसकी शाखाएं तोड़ डालीं। पत्तियों को नोंच डाला एवं फलों को कुचल डाला। परंतु सूर्य की पहली किरण देखते-देखते जंगल में सब कुछ शांत हो चुका था। जानवर अपनी मांद में चले गए।

अब दयालु पेड़ ने लड़की से कहा, "सुनो, सूरज आसमान में चमक रहा है। जंगल में एक नया सवेरा हो चुका है। अब तुम निश्चिंत होकर बाहर आ जाओ।" बाहर आते ही उस लड़की ने पेड़ की दुर्दशा देखी। शाखाविहीन वह बेचारा पेड़ नुचे हुए पत्तों एवं फलों के टूट जाने के बाद बिल्कुल नग्न लग रहा था। इस पर दुःखी होती हुई लड़की ने कहा, "हे दयालु पेड़! मुझे खतरनाक जानवरों से बचाने के लिए आपने कितने कष्ट उठाए। मैं शोणित से लथ-पथ आपके तने पर गीली मिट्टी का लेप लगा देती हूं। इससे आपको राहत मिलेगी एवं घाव भर जाएंगे।"

लड़की गीली मिट्टी का मलहम स्नेहपूर्ण पेड़ के घावों पर लगाने लगी। कुछ देर में पेड़ ने उसे धन्यवाद देते हुए कहा, "मेरे घाव भर चुके हैं। मेरा दर्द अब जाता रहा। आओ, मेरे बगल के पेड़ का फल खाओ। और मेरी बात ध्यान से सुनो। इस जंगल के बीचोंबीच निर्मल जल वाला एक तालाब है। उसमें हजारों कमल खिले हैं। प्रति दिन एक मुट्ठी कमल का बीज चुनकर उसे तालाब के इर्द-गिर्द बिखेर देना। और शाम होते ही मेरे पास वापस आ जाना।"

पेड़ की बात का अर्थ लड़की नहीं समझ सकी। पर कारण जाने बिना ही वह तालाब के समीप गई। एक मुट्ठी कमल का बीज लिया और उसे वहीं चारों ओर बिखेर दिया। शाम ढलते-ढलते वह अपने घर, तना के अंदर वापस आ गई।

अगले दिन सवेरे वह लड़की फिर तालाब के पास गई। रास्ते में नीले-हरे मयूर के पंख बिखरे चमक रहे थे। दरअसल उस स्वादिष्ट बीज को खाने वहां हजारों शानदार मोर आए थे। उनमें बीज के लिए छीना-झपटी हुई। उन्होंने एक दूसरे पर चोंच मारी और पंख नोंच डाले। उनके जाते-जाते चमकते पंखों का एक मार्ग-सा बन गया था।

खुशी से उत्तेजित लड़की उन पंखों को चुनकर पेड़ की ओर दौड़ पड़ी। पेड़ भी खुश हुआ। झूमते हुए उसने कहा, "मेरी प्यारी बच्ची, अब इन पंखों को अपने सूई-धागा से सिलकर पंखा बना लो। तुम्हारे पास जब ऐसे सौ पंखे तैयार हो जाएं तो जंगल से बाहर जाकर गुजरते व्यापारियों को उन्हें बेच देना।"

अब वह लड़की प्रति-दिन तालाब के पास जाती एवं मुट्ठीभर बीज चुनकर

उन्हें आसपास बिखेर देती। फिर मोर के पंखों को चुनती और उनका गुच्छा लेकर वापस आ जाती। धीरे-धीरे उसके पास ढेर सारे पंख जमा हो गए। लड़की ने उनसे सैकड़ों उत्कृष्ट पंखे बनाए और व्यापारियों को बेचने चल पड़ी।

उन पंखों को अपने सामने करीने से सजाकर वह सारा दिन बैठी रही। अचानक उसकी नजर दूर छाई धुंध पर पड़ी। दूर-दूर तक फैले उस निर्जन रेतीली भूमि पर धूल का गुबार उड़ते देखा। शीघ्र ही ऊंटों का एक कारवां दृष्टिगोचर हुआ। धूल उड़ाते हुए यह जंगल के किनारे पहुंचा। वहां पहुंचते ही सभी ऊंट घुटनों के बल बैठकर नदी से पानी पीने लगे। और सुस्ताने लगे। उनके पांव थक गए थे। इतने में शरीर पर से धूल झाड़ता एक व्यापारी आगे आया और पूछा, ''ऐ सुंदर लड़की! तुम्हारे ये पंखे तो अद्‌भुत हैं। क्या तुम इन्हें बेचोगी? मैं इनके बदले तुम्हें लाल रेशम का एक गट्ठर एवं फीरोजा एवं मोतियों से बना एक हार दूंगा।'' लड़की यही तो चाहती थी। पंखों को बेचकर वह भागी-भागी पेड़ के पास पहुंची।

दया से भरा पेड़, उन सामानों को देखकर बोल पड़ा, ''मेरी बच्ची, अब इस लाल रेशम से तुम अपने लिए एक लहंगा बना लो। उसे पहनकर तुम फीरोजा एवं मोती का वह हार गले में पहन लेना। तुम जंगल की रानी बन

जाओगी। तब मोर के ढेर सारे पंख जमा करना। उनसे हजारों वैसे ही पंखे बनाना। फिर जंगल के किनारे कारवां में जा रहे सौदागरों को ये पंखे बेच देना।''

उस लड़की ने हजारों पंखे बनाए, पहले से ज्यादा सुंदर। उन्हें जंगल के किनारे ले गई। एक बार फिर धूल का गुबार दिखा। और उसमें से निकलकर एक सौदागर उसके पास आया और कहने लगा, ''हे सुंदरी, मैं तुम्हारे लिए एक अच्छी खबर लाया हूं। मैंने तुम्हारे सब पंखे राजा को बेच दिए। वह वैसे ही सुंदर हजार पंखे और चाहता है।''

लड़की एक क्षण कुछ सोचती रही। फिर आंखों में चमक लिए उसने उत्तर दिया, ''अपने राजा से कह देना यदि वह ऐसे हजार पंखे चाहता है तो खुद आकर ले जाए।''

''मूर्ख लड़की'' आगबबूला होते हुए सौदागर ने कहा, ''तुम्हें पता नहीं निर्जन मरुस्थल पार करने का यह सफर लंबा और दुष्कर है। और आज तक किसी राजा ने इस वीरान मरुभूमि को पार नहीं किया है।''

''फिर भी, यदि तुम्हारा राजा पंखा खरीदना चाहता है तो उसे यहीं आना होगा''—यह कहते-कहते पंखों को समेटकर लड़की वापस जंगल में भाग गई।

कई दिन बीत गए। कारवां की वापसी का समय आ गया। लड़की ने अपने हाथ से बना लाल रेशम का लहंगा पहन लिया। ऊपर, गले में फीरोजा एवं मोतियों की माला भी पहन ली। फिर जंगल के किनारे अपने पंखों को करीने से सजाकर बैठ गई। फिर वही धूल का गुबार उड़ता हुआ नजर आया। लेकिन इस बार उसमें से प्रकट होने वाला और कोई नहीं बल्कि राजा ही था।

राजा को पहली नजर में सुंदरी से प्यार हो गया। उसकी सुंदरता आंखों में भरते हुए राजा ने कहा, ''सुंदर, अति सुंदर। इन हज़ार पंखों के बदले तुम क्या लेना पसंद करोगी?''

शर्माती हुई लड़की ने जवाब दिया, ''मैं आपकी रानी बनूंगी?'' इस पर राजा ने कहा, ''तब तुम मरुस्थल के पार मेरे राज्य में चलो। मैं तुमसे विवाह कर तुम्हें अपनी रानी बनाऊंगा।''

''पर मैं तो जंगल की हूं और यहीं रहूंगी। यदि तुम विवाह कर मुझे रानी बनाना चाहते हो तो तुम्हें यहीं मेरे लिए एक महल बनवाना होगा। और तुम्हें भी उसी में रहना होगा'' उस लड़की ने कहा।

राजा उस लड़की के प्यार में इतना डूब चुका था कि उसने तुरंत जंगल में, अपने एवं होने वाली रानी के लिए, शानदार महल बनाने का आदेश दिया।
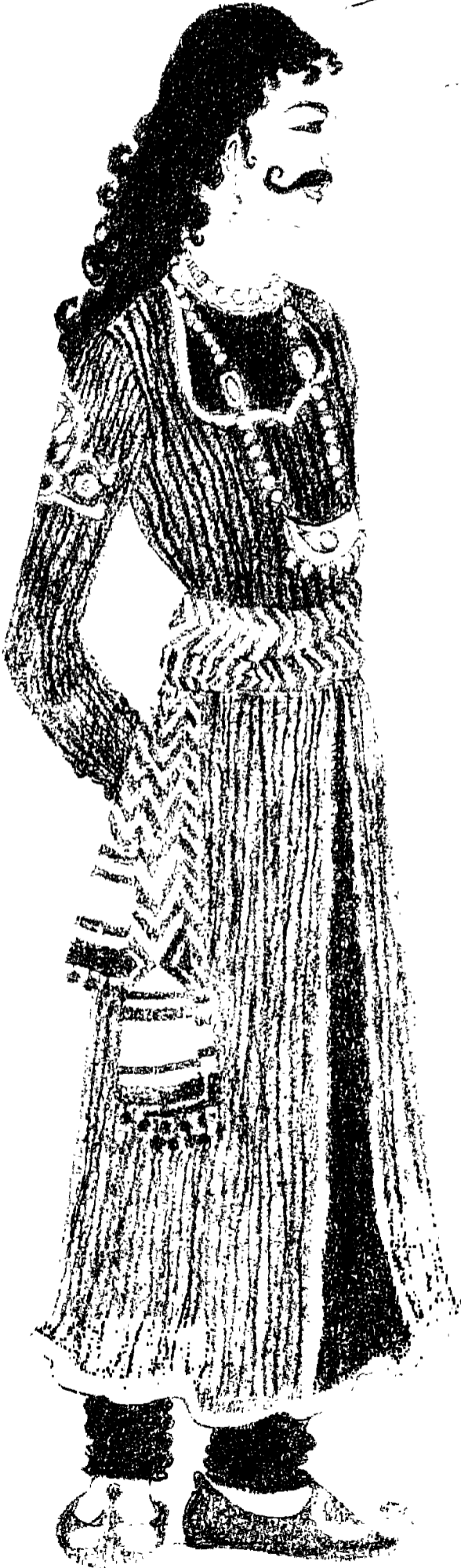
आसपास के गांवों एवं शहरों के सैकड़ों लोगों को काम पर लगाया गया। जंगल की सफाई की गई। हजारों पेड़ काटे गए। किंतु उस ममतामयी पेड़ को किसी ने छुआ तक नहीं। उसी ने तो अब तक लड़की को सुरक्षा एवं प्यार दिया था। उसके चारों ओर हरे पत्थरों का विशाल महल देखते-देखते बन गया।

प्रेम में आनंदविभोर राजा ने उस लड़की से विवाह किया। उसके बाद राजा ने अपना सारा धन एवं अनमोल खजाना लड़की को सौंप दिया। फिर अपनी रानी को लेकर जंगल में बने महल की ओर चल पड़ा। यह देख ममतामयी पेड़ खुशी से झूम उठा। सुनहरे मार्ग पर चुनिंदा फूलों को बरसाकर उन दोनों को आशीर्वाद दिया।

बरसों बाद एक दिन रानी खिड़की से बाहर महल के उद्यान में झांक रही थी। उसकी

नजर गुलाबबाग में पानी पटाते एक बूढ़े पर पड़ी। फटे-पुराने वस्त्र पहने उस बूढ़े का चेहरा स्वाभिमानी था एवं वह कुलीन दिखता था। उसे देखते ही रानो को अपने पिता के वचन की याद आ गई। असमंजस में पड़ी रानी ने पास ही खड़े राजा से कहा "मेरे गुलाबों को पानी पटाता वह बूढ़ा तो काफी परिचित लगता है। उसकी शक्ल हू-ब-हू मेरे पिताजी की तरह है। पर यथार्थ यह है कि मेरे पिताजी एक संपन्न व्यवसायी हैं और एक राजसी भवन में रहते हैं। पर खैर, क्यों न हम उस बूढ़े को महल में बुलवाकर पूछें कि वह कौन है और कहां से आया है।"

बूढ़े को महल में आने का आदेश दिया गया। वह कांपते हुए महल के अंदर पहुंचा। अब तक उसे रानी की बातों की भनक नहीं थी। आशंका एवं डर से कांपता वह राजा के भवन में पहुंचा। झुककर उसने राजा का अभिवादन किया। जैसे ही उसने रानी को देखा वह चौंक गया और उसकी रुलाई फूट पड़ी। उसने बेटी को पहचान लिया था। सुबकते हुए उसने कहा, "मेरी बच्ची, सबसे छोटी बच्ची, तुम्हें घर से बाहर निकालने का पछतावा जो मुझे हुआ है उसका तुम अनुमान नहीं कर सकती। धन एवं दुनियावी वस्तुओं ने मुझे घमंड में अंधा बना दिया था।"

राजा भौंचक्का खड़ा सब देखता रहा। पर रानी ने कहा, "ये वाकई मेरे पिताजी हैं। यद्यपि इन्होंने मुझे घर से बाहर, दूर जंगल में भेज दिया, पर मैं इन्हें आज भी पहले की तरह ही प्यार करती हूं।"

रानी के दिल के घाव हरे हो आए। बीते दिनों की याद ने उसे मायूस कर दिया। बोलते वक्त उसे एक-एक शब्द बर्फ की भांति भारी लग रहा था। उसने पिता से पूछा, "आपका यह दुर्दिन कैसे आया कि आज आप मेरे दरवाजे पर खड़े हैं?"

कुछ पलों तक माहौल में चुप्पी छाई रही। सब कुछ बोझिल लग रहा था। अथाह वेदना एवं शर्म में डूबा बूढ़ा मानो कुछ कहने के लिए शब्द तलाश रहा हो। एक-आध लंबी सांस लेते हुए उसने अपनी व्यथा सुनाई, "मेरी प्यारी बच्ची, मैंने अपनी सारी धन-संपत्ति खो दी। मैं दरिद्र हो गया। फिर लज्जावश उस नगर से दूर जाकर, जंगल में रात-दिन परिश्रम कर एक-आध आना कमाने लगा।"

यह सुनते-सुनते रानी का दिल भर आया। डबडबाई आंखों से अपने पिता की ओर देखते हुए उसने पूछा, "पर, मेरी प्यारी बहनें कहां हैं?"

"उनकी शादी अमीर व्यापारियों से हो गई। और अब उन्हें मुझ असहाय एवं दरिद्र को अपना पिता मानने में संकोच होता है" उस बूढ़े का उत्तर अथाह दुःख में डूबा हुआ था।

परंतु रानी ने सांत्वना देते हुए कहा, "मेरे पूज्य पिताजी, अब आपके पास पहले से कहीं ज्यादा धन होगा। आप मेरे साथ ही इस महल में आत्मसम्मान एवं आदरपूर्वक रहेंगे।"

रानी स्नेहपूर्वक अपने पिता को बांहों का सहारा देते हुए राज अतिथि गृह में ले गई। रास्ते में बूढ़े ने एक आह भरते हुए कहा, "बेटी, तुम बिल्कुल सही थी। कोई किसी अन्य के भाग्य से नहीं जीवन यापन करता है। हरेक आदमी का अपना नसीब होता है। अब मैं जानता हूं कि प्रेम, दुनिया की तमाम धन-दौलत से भी नहीं खरीदा जा सकता है।"

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल
मुंद गई फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।

बोलती चिड़िया–हिरामन

एक जंगल के किनारे टूटे हुए फूस के घर में एक बहेलिया अपनी पत्नी के साथ रहता था। मौसम कोई भी होता, सर्दी, गरमी या बरसात, बेचारा बहेलिया प्रतिदिन चिड़ियों की तलाश में इस जंगल से उस जंगल में भटकता था। और कुछ चिड़ियों को पकड़कर उन्हें बाजार में बेच देता। पर जो पैसे मिलते, उससे उनका घर चलना मुश्किल होता। परिणामतः वे सदैव भुखमरी से तंग रहते।

एक रात जब बहेलिया झोपड़ी में वापस आया तो उसकी पत्नी ने कहा, "प्रिये, तुम्हें पता है, हमारी बदहाली का कारण क्या है? दरअसल तुम, पकड़े गए सभी चिड़ियों को बेच देते हो। शायद उनमें से कुछ को पकाकर खाने से हमारा भाग्य बदल जाए। और हमारी तंगहाली भी जाती रहे। इसलिए कल तुम एक भी चिड़िया नहीं बेचोगे। मैं तुम्हारे लिए भात एवं चिड़ियों का मांस पकाऊंगी। फिर हम देखेंगे कि हमारा भाग्य पलटता है या नहीं।"

बहेलिया अपनी पत्नी की बात सहर्ष मान गया। अगले दिन वह सवेरे जंगल चला गया और पूरा दिन मारा-मारा घूमता रहा। दुर्भाग्यवश उसे एक भी चिड़िया न तो आसमान में दिखाई दी और न ही पेड़ों पर बैठी। इस प्रकार प्रतीक्षा में दिन निकल गया। शाम होने को आई। लेकिन एक भी चिड़िया पेड़ों की फुनगी पर बने घोंसले में वापस नहीं आई।

बहेलिया निराश एवं थका-मांदा वापस झोपड़ी की ओर चल दिया। अचानक उसकी नजर ताड़ के पेड़ पर बैठी एक अकेली चिड़िया पर गई। चिड़िया गोधूलि वेला के सपनों के सुरीले गीत गा रही थी। बहेलिया ने उसे तुरंत पकड़ लिया। उसे घर ले जाकर पत्नी को उसका मांस पकाने के लिए कहा।

छोटी सी भयभीत चिड़िया को अपने हाथ में लेकर उसके पंखों को सहलाते हुए बहेलिये की पत्नी ने चकित होकर कहा, "यह चिड़िया तो अद्‌भुत है। इसके पंख ऐसे चमक रहे हैं जैसे सूरज की रोशनी में बादल। इसके केसरिया
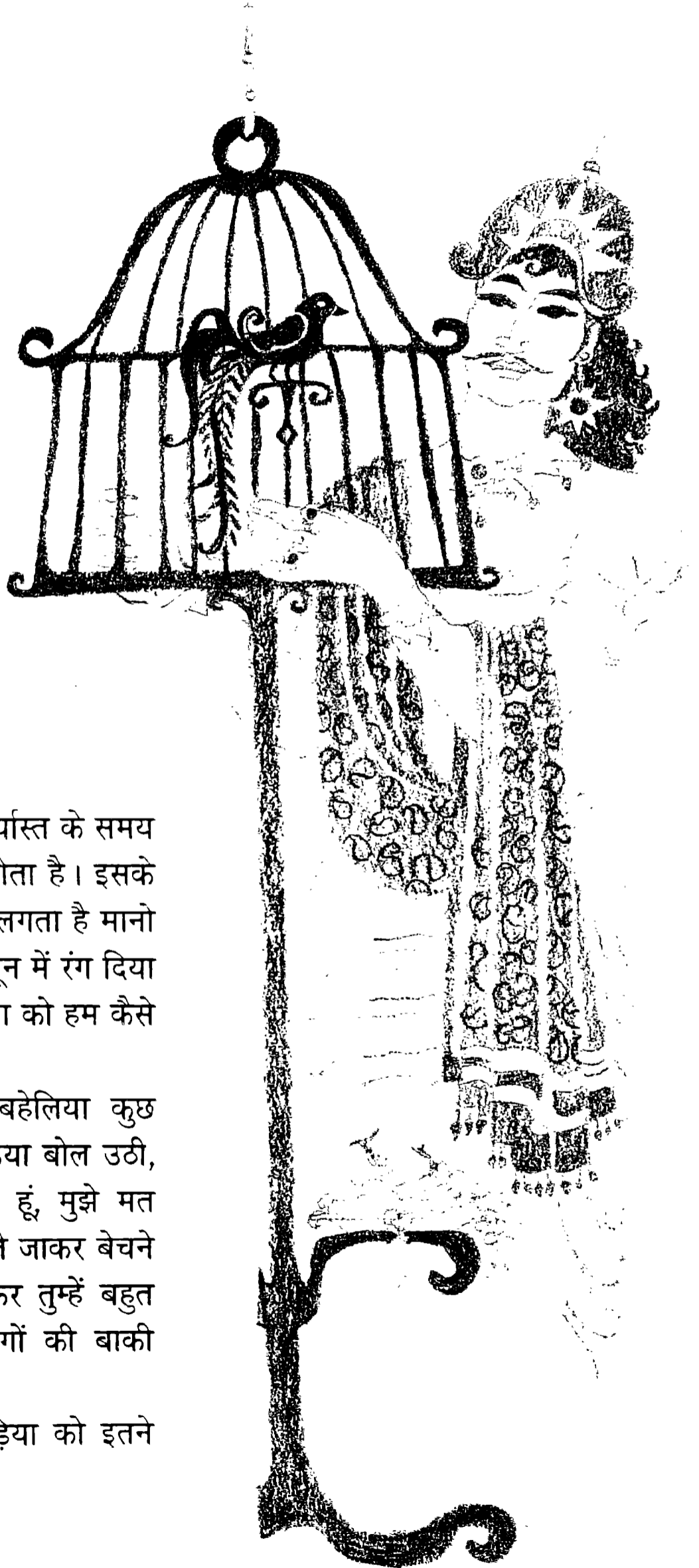
वक्षस्थल को देखकर तो सूर्यास्त के समय का आकाश का आभास होता है। इसके छोटे-छोटे पैरों को देखकर लगता है मानो किसी ने अत्यधिक लाल खून में रंग दिया हो। भला, इस सुंदर चिड़िया को हम कैसे मार कर खा सकते हैं।"

इससे पहले कि बहेलिया कुछ बोलता, वह छोटी-सी चिड़िया बोल उठी, "हे मां, मैं विनती करती हूं, मुझे मत मारो। मुझे राजा के पास ले जाकर बेचने की बात करो। मुझे बेचकर तुम्हें बहुत धन मिलेगा। फिर तुमलोगों की बाकी जिंदगी मौज में कटेगी।"

छोटी सी इस चिड़िया को इतने

स्पष्ट एवं जोरदार आवाज में बोलते सुनकर बहेलिया एवं उसकी पत्नी अचंभित थी। वे उस चिड़िया को टकटकी लगाए देखते रहे। अब उसकी पत्नी ने पूछा, "हे विचित्र चिड़िया है, हम राजा से तुम्हारी क्या कीमत मांगेंगे?"

"वह मुझ पर छोड़ दीजिए", चिड़िया ने जवाब दिया। फिर उसने कहा, "मुझे बेचने के लिए राजा के पास ले तो चलिए। जैसे ही वह मेरी कीमत पूछेंगे तो कहिएगा—राजन, चिड़िया अपनी कीमत खुद कहेगी।"

अगले दिन बहेलिया एवं उसकी पत्नी चिड़िया के साथ राजा के पास पहुंची और उसे बेचने की बात कही। राजा तो चिड़िया की खूबसूरती पर मर मिटा। उसे खरीदने की इच्छा जाहिर करते हुए उसने कहा, "इस सुंदर चिड़िया की क्या कीमत चाहते हो?"

बहेलिया ने कहा, "हे, महान राजा! चिड़िया खुद अपनी कीमत बताएगी।"

"क्या?" चौंक पड़ा राजा। उसने पूछा, "तुम्हारा मतलब कि चिड़िया खुद अपनी कीमत बताएगी?"

"हां, हजूर! चिड़िया से उसकी कीमत पूछ कर तो देखिए। यह जरूर बताएगी" यह कहकर बहेलिया चुप हो गया।

राजा ने मजाक में ही उस चिड़िया से पूछ डाला, "अच्छा, सुंदर चिड़िया, तुम अपना नाम और दाम बताओ।"

इस पर चिड़िया का उत्तर था, "मेरा नाम हिरामन है। मैं चिड़ियों के ऐसे नस्ल से संबंधित हूं जिसके बहुत कम सदस्य हैं। और मेरी कीमत सोने के एक हजार सिक्के हैं।"

एक चिड़िया को इस तरह बोलते सुनकर राजा दंग रह गया। पर वह इससे अधिक क्षुब्ध, चिड़िया की कीमत सुनकर था। अब राजा ने पूछा, "हिरामन, तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हारी कीमत अत्यधिक है।"

पर हिरामन ने कहा, "महाराज, ऐसा मत सोचिए। मैं आपके बहुत काम आ सकती हूं।"

इस पर राजा की हंसी छूट पड़ी। फिर उसने पूछा, "हिरामन, बताओ तो सही कि किस तरह तुम मेरे बड़े काम आ सकती हो।"

हिरामन का बुद्धिमतापूर्ण जवाब था, "समय आने पर महाराज खुद समझ जाएंगे।"

एक तो बोलती चिड़िया, वह भी इतनी बुद्धिमतापूर्ण ढंग से...! राजा तो उसे प्राप्त करने के लिए मचल गया। उसने शाही खजांची को आदेश दिया कि वह बहेलिये को सोने के एक हजार सिक्के तुरंत दे दे। फिर उस अद्भुत चिड़िया के लिए सोने का एक विशेष पिंजरा बनाने का आदेश दिया गया।

उस राजा की चार सुंदर रानियां थीं। पर उनमें आपस में एक दूसरे के बहुत लिए घृणा थी। और वे सुबह से रात तक आपस में लड़ती रहतीं। राजा इससे दुःखी था। लड़ाई रोकने का कोई उपाय उसे नहीं दिख रहा था। पर जब से हिरामन महल में आई, राजा ने किसी अन्य की सुध छोड़ दी। अपने झगड़ालु रानियों को भूल गया। सारा समय बुद्धिमान चिड़िया के साथ ही बिताता।

हिरामन भी नाच-गाकर राजा का दिल बहलाती। राजा से बातें करती। और राज-काज के मामले में सलाह देती। राजा जब भी उदास होता वह विभिन्न देवी-देवताओं के हजारों नाम जपा करती। वह भजन भी गाती। धीरे-धीरे राजा और हिरामन की अटूट जोड़ी बन गई।

रानियों का राजा के इस अनूठे प्रेम पर जलना स्वाभाविक था उन्होंने हिरामन को मारने की ठान ली। जिंदगी में पहली बार वे इकट्ठे हुए। सबसे बड़ी रानी ने अन्य रानियों के साथ षड्यंत्र करते हुए कहा, "राजा के शिकार पर जाते ही हम उस चिड़िया से पूछेंगे कि हममें से सबसे कुरूप कौन है। चिड़िया जिसे सबसे कुरूप कहेगी वह गरदन मरोड़कर तुरंत उसे मार डालेगी।"

बसंत आया। जंगल में चिड़ियां सुरीली आवाज में गा रही थीं। एक दिन राजा मित्रों के साथ शिकार पर गया था। उसी समय चारों रानियां रत्नजड़ित भवन में गई जहां अपने सोने के पिंजरे में वह चिड़िया रहती थी। फिर बड़ी रानी ने उससे कहा, "हे बुद्धिमान चिड़िया, तुम्हारे निष्पक्ष न्याय के संबंध में हमने बहुत सुना है। कृपया बताओ कि हममें से सबसे सुंदर और सबसे कुरूप कौन है।"

इस पर चिड़िया तपाक से बोली, "मैं विवेकपूर्ण निर्णय कैसे कर सकती हूं। मैं तो इस पिंजड़े में बंद हूं। यदि आपलोगों को सही निर्णय चाहिए तो मुझे इस पिंजरे से निकालिए। उसके बाद ही मैं सबको बारीकी से देख-परख सकूंगी और फिर सही निर्णय दूंगी।" रानियों ने उस भवन के सभी दरवाजों एवं खिड़कियों को बंद कर दिया ताकि चिड़िया उड़कर बाहर न भाग जाए। परंतु हिरामन की नजर उस भवन के एक जल-निकास छिद्र पर पड़ चुकी थी। वह उससे निकल सकती थी। अब सबसे बड़ी रानी ने पिंजरे का दरवाजा खोलकर हिरामन को बाहर आने दिया। हिरामन ने एकाग्रता से प्रत्येक रानी को

नख-सिख देखने के बाद कहा, "आप में से किसी की भी सुंदरता सात समुद्र एवं तेरह नदियों के पार रहने वाली राजकुमारी के अंगूठे की तुलना में भी नहीं है।" इस पर रानियां अपने को अपमानित महसूस करने लगीं। चिड़िया ने उनकी सुंदरता का तो मजाक ही बना दिया था। गुस्से में लाल-पीली होती रानियां चिड़िया की गरदन मरोड़ने के लिए लपकी। पर जल-निकासी के छेद से निकलकर चिड़िया फुर्र हो गई। और पास के ही एक लकड़हारा की झोपड़ी में शरण ली।

राजा अगले दिन शिकार से वापस आया। वह हिरामन से मिलने सीधे भव्य भवन में पहुंचा। पर पिंजरा खाली देख वह हताश हो गया। उसने बारी-बारी से सबसे पूछताछ की—रानियों से, नौकरों से, द्वारपालों से और मंत्रियों से भी। पर कोई नहीं बता सका कि वह चिड़िया कब, कहां और कैसे उड़ गई। पूरे नगर में ढिंढोरा पीटा गया। यह मुनादी की गई कि राजा के खोए हुए प्रिय चिड़िया को जो भी पकड़ लाएगा, उसे ईनाम में सोने की सौ मोहरें मिलेंगी।

लकड़हारे की तो किस्मत ही खुल गई। वह चिड़िया को पकड़कर महल की ओर भागा। वहां उसे सोने की सौ मोहरें ईनाम में मिलीं और राजा को सर्वप्रिय हिरामन। उसे अपने हृदय से लगाए अश्रुपूरित आंखें लिए राजा ने पूछा, "हिरामन, मेरे दोस्त, मेरी अनुपस्थिति में तुम मुझे छोड़कर कैसे चले गए।"

इस पर हिरामन ने जवाब दिया, "हे महान राजा! मेरे प्रिय मित्र, मैं भला आपको कैसे धोखा दे सकता हूं। दरअसल आपकी अनुपस्थिति में रानियों ने मुझे मारने की योजना बनाई थी। पर उसका आभास मुझे पहले ही हो गया। इसलिए मैंने उनको फुसलाकर खुद को पिंजरे से मुक्त करवा लिया। फिर जल-निकास के एक छेद से निकलकर भाग गया। और पास के ही एक लकड़हारे की झोपड़ी में शरण ली।"

"लेकिन हिरामन" राजा ने अचंभित होकर पूछा, "रानियां तुम्हें क्यों मारना चाहती हैं?"

इस पर हिरामन ने कहा, "यह एक लंबी कहानी है। पर मैं इसे थोड़े में कहती हूं। दरअसल रानियां मेरे प्रति आपके प्यार से जलती हैं। और मैंने जब यह कह दिया कि उनमें से किसी की सुंदरता सात समुद्र एवं तेरह नदियां पार रहने वाली सुंदर राजकुमारी के अंगूठे के बराबर भी नहीं है तो वे गुस्से से जल-भुन गईं। और मेरी गरदन मरोड़ने दौड़ीं। यह तो मेरी किस्मत अच्छी थी कि मैं बचकर भाग गई।

गुस्से में पागल राजा ने सभी रानियों को दूर रेगिस्तान में भेज दिया। फिर वे कभी वापस नहीं आ सकीं।

कुछ दिनों बाद राजा ने हिरामन को पिंजरे से बाहर निकालकर उसे अपने बांह पर बिठाते हुए पूछा, "हिरामन, क्या तुमने रानियों को कहा था कि उनकी सुंदरता सात समुद्र एवं तेरह नदियां पार रहने वाली सुंदर राजकुमारी के अंगूठे के बराबर भी नहीं है।"

"अवश्य, मैंने ऐसा ही कहा था" हिरामन बोली।

इस पर राजा ने पूछा, "हे, बुद्धिमान हिरामन! क्या तुम्हें उस राजकुमारी तक पहुंचने का पता है?"

"बिल्कुल" बोली चिड़िया, "मैं हुजूर को उस राजकुमारी के दरवाजे तक ले जा सकती हूं। पर आपको वही करना होगा जो मैं कहूंगी।" राजा को शर्त मंजूर थी। फिर हिरामन बोली, "हमें सबसे पहले पंखों वाला घोड़ा पोखिराज खोजना होगा। वह हमें उड़ाकर सात समुद्र एवं तेरह नदियां पार उस सुंदर राजकुमारी के ठीक द्वार पर ले जाएगा।

"पर हमें पंखों वाला घोड़ा मिलेगा कहां?" विस्मित होकर राजा ने पूछा।

हिरामन ने जवाब दिया, "आपके शाही अस्तबल में कई सुंदर घोड़े हैं। हम चलकर देखते हैं, उनमें ही कोई पोखिराज हो।"

शीघ्र ही वे राज-अस्तबल पहुंचे। वहां उन्होंने प्रत्येक घोड़े का बारीकी से निरीक्षण प्रारंभ किया। हिरामन उत्तम प्रजाति के कई सुंदर घोड़ों को नजरअंदाज कर उड़ते हुए एक मरियल छोटे टट्टू के पास रुक गई। और वह खुशी से चिल्ला पड़ी, "मिल गया। हमें यही चाहिए। यह पोखिराज नस्ल का ही है। परंतु इसे छह महीने तक उत्तम अनाज पर पालना होगा। उसके बाद ही यह सुंदर राजकुमारी के महल तक का लंबा एवं दुष्कर सफर तय कर सकेगा।"

राजा ने उस टट्टू को तुरंत एक विशेष अस्तबल में रखवा दिया। वह उसे राज्य में उपलब्ध सर्वोत्तम अनाज खुद खिलाता। कुछ ही दिनों में टट्टू एक विशाल घोड़ा बन गया। उसके पंख निकल आए जिसका फैलाव गरुड़-राज के पंखों से भी अधिक था। हिरामन के अनुसार अब पोखिराज उस यात्रा के लिए तैयार था। उसने राजा से आग्रह किया कि सुनार से कहकर चांदी की एक हजार गुटिका बनवा लें। रास्ते में उनकी आवश्यकता पड़ेगी।

कुछ ही समय में राज के सुनार ने चांदी की गुटिका से भरा एक थैला राजा को सौंप दिया। परंतु यात्रा से पूर्व हिरामन ने राजा को सावधान करते हुए कहा, "हे राजन, कृपया मेरी बात ध्यान से सुनिए। यात्रा से पहले आप सिर्फ एक बार पोखिराज को चाबुक लगाएंगे। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो यह आधे रास्ते में ही रुक जाएगा। हम अपनी मंजिल तक नहीं पहुंच पाएंगे। फिर जब हम राजकुमारी के साथ वापस आ रहे होंगे, आप मात्र एक बार पोखिराज को चाबुक लगाएंगे। ध्यान रहे, यदि आपने एक से अधिक चाबुक लगाया तो हम बीच में ही रह जाएंगे। और फिर कभी आपके राज्य में नहीं पहुंच सकेंगे।

यह सब सुनने के बाद चांदी की गुटिका वाली थैली लेकर राजा पोखिराज पर सवार हो गया। उसकी बांह पर बैठी हिरामन चिड़िया सुरीली आवाज में गा रही थी। राजा ने जैसे ही पंखों वाले घोड़े को प्यार से एक चाबुक लगाया वह बिजली की तरह चमकता हुआ आसमान में उड़ने लगा। सात समुद्र एवं तेरह नदियों को लांघकर वह सीधे राजकुमारी के महल के द्वार पर उतरा। हिरामन ने राजा से कहा कि पोखिराज को वहीं अस्तबल में बांध दें। और राजद्वार के पास एक ऊंचे पेड़ की फुनगी पर चढ़कर उसके झुरमुट में छिप जाएं।

अब हिरामन चोंच में भरकर चांदी की गुटिका एक-एक कर गिराने लगी। पहले पेड़ के इर्द-गिर्द फिर स्फटिक से बने गलियारे और अंत में राजकुमारी के शयन कक्ष के सुनहले द्वार तक। राजकुमारी के कान में गुटिका के गिरने की आवाज गई तो उसने दरवाजा खोला। बाहर बिखरी चांदी की गुटिका चमक रही थी। सहज उत्सुकता में वह उनके पीछे चल पड़ी और पेड़ तक पहुंच गई। उसी पेड़ पर राजा एवं हिरामन छिपे हुए थे।

राजकुमारी को देखते ही राजा धरती पर कूद पड़ा। समय गंवाए बिना उसने राजकुमारी को अपनी बांहों में उठाकर घोड़े पर बिठा दिया। जैसे ही उसने पोखिराज को एक चाबुक लगाया वह आंधियों की तरह चक्कर लगाता आकाश में उड़ चला। 'पर यह क्या!' उसने तो बेसब्री में पोखिराज को एक चाबुक फिर लगा दिया। घोड़ा अचानक एक रेगिस्तान में धड़ाम से गिरा। और फिर चलने का नाम भी नहीं लिया।

हिरामन चीख पड़ी, "क्या कर दिया आपने? क्या मैंने एक से अधिक चाबुक नहीं लगाने की हिदायत नहीं दी थी? अब पोखिराज शक्तिहीन हो गया है और हमें मौत आने तक यहीं रहना होगा।"

उसी दिन रेगिस्तान का राजा शिकार पर निकला था। उसके तीर ने एक

हिरन के हृदय को बेध दिया था। उसका पीछा करते हुए राजा की नजर, रेगिस्तान में बैठे उस राजा, अद्वितीय सुंदरी राजकुमारी एवं घोड़े पर गई। चिड़िया भी वहीं बैठी थी। राजकुमारी की सुंदरता पर मर मिटा रेगिस्तान का राजा, उसे चुराकर अपने महल भाग गया जो वीरान रेगिस्तान के मध्य पन्ना की तरह हरा मरुद्यान में खड़ा चमक रहा था।

राजकुमारी डर से नहीं बोल पा रही थी। सदमा से उसकी रुलाई भी नहीं छूट रही थी। पर उसका अंतर्मन कह रहा था कि बुद्धिमान हिरामन उसे जरूर ढूंढ निकालेगी, बचा लेगी। इसी आशा में वह प्रतिदिन महल के संगमरमर से बने छत पर चिड़ियों के लिए उत्कृष्ट चुग्गा डालती। उसे विश्वास था कि एक दिन अन्य चिड़ियों के साथ हिरामन भी छत पर उतरेगी और रेगिस्तान महल के इस एकाकी जिंदगी से उसे निकाल ले जाएगी।

इस बीच राजा, हिरामन एवं पोखिराज रेगिस्तान में किसी तरह दिन काट रहे थे। अन्न-पानी तो दूर उन्हें नींद भी नहीं नसीब हो पाती। एक दिन कुछ चिड़ियां हिरामन के समीप जाकर बोली, "यहां दाना-पानी के बिना तुम्हारी जिंदगी दयनीय है। पास में ही एक राजकुमारी संगमरमर की छत पर एक विशाल भोज का आयोजन करती है। तुम, क्यों न हमारे साथ उसमें शामिल हो जाती? हम सवेरे हजारों की संख्या में वहां पहुंचते हैं। सारा दिन ताजा दाना एवं स्वादिष्ट बीज चुगते हैं। और शाम ढलते अपने घोसले में वापस आ जाते हैं।"

अगले दिन सवेरे हिरामन भी अन्य चिड़ियों के साथ संगमरमर की उस छत पर उतरी। वहां उनके लिए दाना बिखरा था। रेगिस्तान के राजा द्वारा अपहृत उस राजकुमारी को देख हिरामन चौंक पड़ा। सुनहले अनाज के दाने एवं कमल के बीजों को चुगते हुए वह कुछ सोचता रहा। उसे दरअसल अन्य चिड़ियों के वापस उड़ जाने का इंतजार था। मौका मिलते ही उसने राजकुमारी के कान में फुसफुसाकर कुछ कह दिया। फिर उड़ चली हिरामन, राजा के पास।

उस रात चांद आसमान में चढ़ चुका था। लाखों प्रकाश पुंज की तरह तारे चमक रहे थे। रेगिस्तान के ऊपर ऊपर औंधा, अंधेरा आसमान उनसे उजियारा हो गया था। इतने में दूर कहीं एक उल्लू के घुघुआने की आवाज आई। यह सुनते ही हिरामन अपने पंख झाड़ फड़फड़ाते हुए उड़ गई। दूर बालू के एक टीले पर उसने एक अकेला उल्लू को बैठा देखा। उस बुद्धिमान पक्षी के सम्मान में झुकते

हुए उसने कहा, "हे पक्षियों में सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी! आज रात आपसे मिलकर मैं कृतार्थ हुआ। मैं और मेरा राजा राह भटक चुके हैं और पंखों वाला हमारा घोड़ा पोखिराज शक्ति विहीन हो गया है। वह हमें अपने राज्य तक उड़ाकर नहीं ले जा सकता है। अतः मुझे आपके महत्वपूर्ण सुझाव की नितांत आवश्यकता है। मेरी प्रार्थना है कि आप हमें संकट से निकालिए।" हिरामन को गंभीरता से देखते हुए वृद्ध ज्ञानी उल्लू ने कहा, "तुम वस्तुतः दुर्लभ नस्ल के गुणी पक्षी लगते हो। इसलिए मैं तुम्हें सुझाव देता हूं। जंगल के सीमान्त क्षेत्र में एक गुप्त मार्ग है। पहले उसे ढूंढ निकालो। तुम चतुर एवं इतने छोटे हो कि उसमें घुस सकते हो। यह तुम्हें एक ऐसे अदृश्य नदी के तट पर ले जाएगा जो रेगिस्तान के नीचे चुपचाप बहती है। वहां तुम्हें सैकड़ों बुद्धिमानी भरे जादुई मोती बिखरे मिलेंगे। उनमें से एक, चोंच में दबाकर ले आना। पोखिराज उसे सहर्ष निगल लेगा। जैसे ही मोती उसके हृदय के अंदर जाएगा, वह उड़ने के लिए तैयार हो जाएगा।"

ज्ञानी उल्लू को धन्यवाद देकर हिरामन गुप्त मार्ग की तलाश में उड़ चली। वह एक अंधेरी गुफा में उड़ती रही। उसी में अदृश्य नदी भी बह रही थी। नदी के किनारे हिरामन को अलग पड़ा, चमकता हुआ एक मोती दिख गया। उसे अपनी चोंच में दबाकर वह वापस पोखिराज के पास पहुंची। पोखिराज ने सहर्ष उस मोती को निगल लिया।

शीघ्र ही पोखिराज में अद्भुत परिवर्तन हुआ। उसने अपने जादुई पंख फैलाए। उनमें उड़ने की शक्ति आ गई थी। राजा एवं हिरामन उस पर सवार होकर संगमरमर के उस छत पर उतरे। वहां राजकुमारी उनका इंतजार कर रही थी। हिरामन पहले ही उसे कह गई थी कि वह राजा के साथ उसे लेने आएगी।

राजा तुरंत पोखिराज से उतरा। राजकुमारी को बांहों में भरकर घोड़े पर बिठा दिया। धीरे से सिर्फ एक चाबुक लगाया ही था कि पोखिराज हवा से बातें करने लगा। सात समुद्र एवं तेरह नदियों को पार कर वे अपने राज्य वापस लौटे। इस बीच राजा की बांह पर बैठी हिरामन देवी-देवताओं के असंख्य नाम जपती रही। और भजन गाती रही।

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल

मुंद गई फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।

धूप और छांव

सृष्टि के आरंभ में धरती एवं स्वर्ग दोनों पर देवी-देवताओं का शासन था। वे साफ नीले आकाश से परे हिमाच्छादित ऊंचे पहाड़ों के ऊपर कैलाश में रहते थे। धरती पर रहने वाला हर प्राणी समान रूप से उनकी पूजा करता एवं भक्ति में लीन रहता। राजमहल में रहने वाला संपत्तिवान राजा से लेकर, हाथों में भीख की कटोरी एवं टूटी लाठी पकड़े, झोपड़ी वाला भिखारी तक उनकी पूजा करते।

दुर्भाग्य के देवता शनि एवं सौभाग्य की देवी लक्ष्मी अक्सर कैलाश की ऊंचाइयों से धरती पर झांकते थे। वहां चल रहे सुख एवं दुःख का खेल देखते। उसमें तल्लीन मनुष्यों को हंसते-रोते और प्रार्थना करते देख शनि एवं लक्ष्मी मुस्कराते रहते। दिन ढलते जब मंदिरों की घंटियों की गूंज क्षीण पड़ती तब जाकर यह खेल खत्म होता।

एक दिन जब वे हंसी एवं आंसू का दुनियावी दृश्य देख रहे थे, शनि अहंकारवश लक्ष्मी से बोल पड़े, "मैं आपसे अधिक प्रभावशाली हूं। तब तो इस धरती पर सुख से अधिक दुःख दिखता है।"

परंतु लक्ष्मी ने कहा, "मेरा पद आपके पद से ऊंचा है। जब मृत्युलोक के वासियों पर भाग्य मुस्कराता है तो वे अपना गम भूलकर खुशी से भर जाते हैं।"

इस तरह दोनों में ठन गई,
झगड़ा गंभीर, भयंकर बन गई।
क्रुद्ध शब्दों के तीर चले, टकराए,
धमकियों की लपट, चमककर गरज आए।
आसमान में आग लगी, लपट उठा जंगल-जंगल
शर्म, दुःख से भरे बादलों ने आंसू गिराए देख यह दंगल।"

यह देख स्वर्ग के देवी-देवता घबरा गए। उन्होंने दोनों को मनाते हुए प्रार्थना की, "हे महान शनि देव एवं देवी लक्ष्मी, हमारी प्रार्थना सुनिए। कृपया स्वर्ग की शांति

बनाए रखिए। यदि यहीं अशांति व्याप्त हो गई तो धरती का क्या होगा।"

परंतु स्वर्ग एवं धरती से बेखबर शनि देव एवं देवी लक्ष्मी ने उनकी एक न सुनी।

विपत्ति की इस घड़ी में देवी-देवताओं ने मृत्युलोक के एक ज्ञानी मानव, विवेक से सहायता लेने का निर्णय लिया। विवेक अपने उचित न्याय एवं उपयुक्त निर्णय के लिए जाना जाता था। वे दहकते पहाड़ों एवं जलते आसमान को पीछे छोड़ उल्कापात की तरह धरती पर उतरे। पहले उन्होंने विवेक के ज्ञान को सराहा एवं उसे आशीर्वाद दिया। फिर स्वर्ग में चल रहे झगड़े के बारे में बताया। उसके बाद उन्होंने साफ शब्दों में सहायता मांगते हुए कहा, "हमारी मान-मनुहार एवं प्रार्थना तो बेकार गई। स्वर्ग में हम सभी असहाय हैं। इसलिए, हे महान विवेक! हमारा आपसे अनुरोध है कि अपनी इहलौकिक ज्ञान एवं न्यायोक्ति से स्वर्ग का झगड़ा शांत कीजिए।"

विवेक तुरंत इस कार्य में छिपे खतरे को भांप गया। उसका दिल डर से कांप उठा। वह जानता था कि यदि शनि का पक्ष लेगा तो लक्ष्मी उससे रूठकर सदा के लिए चली जाएगी। दूसरी तरफ लक्ष्मी का पक्ष लेने से उसे क्रुद्ध शनि की वक्र दृष्टि से कोई बचा नहीं पाएगा। इस प्रकार दोनों तरफ खतरा ही था।

विवेक पूरे दिन एवं रात सोचता रहा। अंत में वह इस निर्णय पर पहुंचा कि वह एक शब्द भी नहीं बोलेगा। शनि एवं लक्ष्मी को अपने क्रिया-कलाप से ही अपने अंदर की बात समझने पर मजबूर कर देगा।

उसने दो कुर्सियां—एक सोने की एवं एक चांदी की, बनवाई। दोनों को अपने इर्द-गिर्द रख दिया। शांत गोधूलि वेला में स्वर्ण के चमकते रथ पर सवार शनि देव एवं देवी लक्ष्मी लालिमा भरे आकाश को चीरकर धरती पर उतरे। विवेक ने दोनों का एक समान स्वागत किया। फिर वह लक्ष्मी को सोने की कुर्सी की तरफ ले गया और शनि को चांदी वाली पर बैठने का इशारा किया।

शनि महान के अहं को चोट पहुंची। उनके क्रोध का ठिकाना नहीं रहा। अपने पैर पटकते हुए जाते-जाते वे गरज उठे, "हे निरीह प्राणी, चूंकि तुमने लक्ष्मी के सामने मुझे तुच्छ समझा है, इसलिए मैं सात वर्षों तक तुम पर अपनी कुपित दृष्टि रखूंगा। तुम कहीं भी जाओगे दुःख, साया की तरह तुम्हारे साथ होगा।"

परंतु लक्ष्मी कुछ पल रुकी रही। उन्होंने धीरे से कहा, "डरो मत विवेक, मैं दुःख में तुम्हारी मदद करूंगी।"
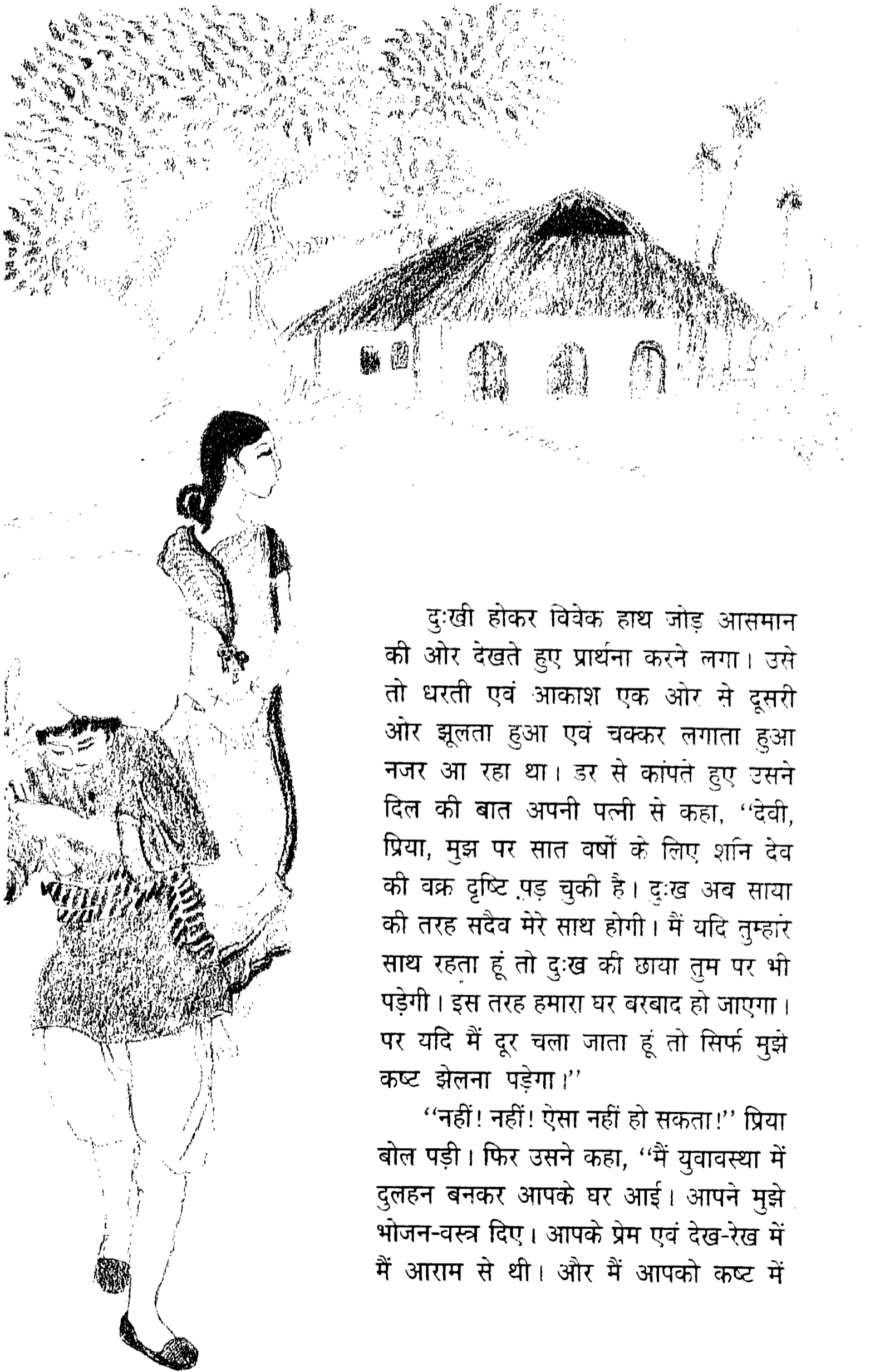
दुःखी होकर विवेक हाथ जोड़ आसमान की ओर देखते हुए प्रार्थना करने लगा। उसे तो धरती एवं आकाश एक ओर से दूसरी ओर झूलता हुआ एवं चक्कर लगाता हुआ नजर आ रहा था। डर से कांपते हुए उसने दिल की बात अपनी पत्नी से कहा, "देवी, प्रिया, मुझ पर सात वर्षों के लिए शनि देव की वक्र दृष्टि पड़ चुकी है। दुःख अब साया की तरह सदैव मेरे साथ होगी। मैं यदि तुम्हारे साथ रहता हूं तो दुःख की छाया तुम पर भी पड़ेगी। इस तरह हमारा घर बरबाद हो जाएगा। पर यदि मैं दूर चला जाता हूं तो सिर्फ मुझे कष्ट झेलना पड़ेगा।"

"नहीं! नहीं! ऐसा नहीं हो सकता!" प्रिया बोल पड़ी। फिर उसने कहा, "मैं युवावस्था में दुलहन बनकर आपके घर आई। आपने मुझे भोजन-वस्त्र दिए। आपके प्रेम एवं देख-रेख में मैं आराम से थी। और मैं आपको कष्ट में

अकेले छोड़ दूं! आप जहां भी जाएंगे, मैं साथ चलूंगी। हम मिलकर दुःख बांट लेंगे।''

प्रिया के मुरझाए हुए चेहरे पर आंसू टपक पड़े। उसने आभूषणों को बिस्तर में बांध लिया। फिर विवेक ने दरवाजा बंद कर ताला लगा दिया। और संकट की घड़ी में साथ देने के लिए देवी लक्ष्मी की प्रार्थना करते हुए दोनों लक्ष्यहीन यात्रा पर निकल पड़े।

सिर पर बिस्तर की गठरी रखकर विवेक आगे चल पड़ा। प्रिया पीछे थी। वह अपने घर की अंतिम झलक पाने के लिए बार-बार पीछे मुड़कर देखती। दुःख में डूबे विवेक एवं प्रिया भयानक जंगल एवं अनजान जगहों को पारकर एक नदी के किनारे पहुंचे। वहां चमकीले रेत पर बैठा एक नाविक सुख-दुःख का एक मधुर गीत गा रहा था।

कितना खुश होता मैं! जब आसमान होता नीला,
प्रेम-गीत चिड़िया गाती, निर्मल, सच्चा और सुरीला।
पंख लगाकर उड़ता, गाता चिड़ियों के संग मेरा दिल,
धूप खिला, चमक रहा है, बसंत की लगी है महफिल।
सपने मेरे उड़कर पहुंचे, जहां खुशियों का संसार चमकता,
मधुमक्खियों का फूलों के लिए जहां प्यार उमड़ता।
परंतु दिन के अंत में आसमान जब धुंधलाता,
चिड़ियां छोड़ जाती मुझे, सपना टूट-टूट कर बिखर जाता।
नीली ये तितलियां, एवं लाल गुलाब,
गिरते...मर जाते! खोकर अपना शबाब।
हर चीज एक दिन मुरझाते, कहते हैं ज्ञानी,
कुछ भी अमर नहीं यहां, सब कुछ आनी-जानी।

विवेक उसके पास जाकर बोला, ''ये भाई नाविक, हमें नाव में बिठाकर नदी पार करवा दो। हम तुम्हें सोने का एक सिक्का देंगे।''

इस पर नाविक ने कहा, ''मैं तो एक बार में सिर्फ एक को ले जा सकता हूं। पर यहां तो तीन हैं, ''आप स्वयं, आपकी पत्नी एवं आपका बिस्तर।''

''फिर बिस्तर एवं मेरी पत्नी को पहले पार करवा दो। तब मुझे ले जाना'', विवेक ने आग्रह किया। परंतु नाविक ने नहीं में सिर हिलाते हुए जवाब दिया, ''मैं पहले बिस्तर ले जाऊंगा, तब आपकी पत्नी को। और अंत में आपको।''

इस पर विवेक राजी हो गया। परंतु, यह क्या ...? नाव नदी के मध्य पहुंचती उससे पहले ही अचानक विचित्र आंधी आई। उसमें न केवल नाव, नाविक एवं बिस्तर गायब हो गया बल्कि नदी का भी कोई निशान नहीं बचा। विवेक एवं प्रिया दूर-दूर तक फैले वीरान रेगिस्तान देखते रहे। वहां जीवन का लेश मात्र नहीं बचा था। पेड़-पौधे एवं चिड़ियां तो दूर घास तक लुप्त हो गया था। 'धक-धक' धड़कते उनके दिल की आवाज मात्र सुनाई दे रही थी। इतने में अचानक विवेक एवं प्रिया के सामने जादुई कालीन की तरह फूलों का एक मार्ग बन गया। वे देवी लक्ष्मी का गुणगान करते हुए उस पर चल पड़े।

दोनों सूर्य-विहीन दिन एवं सितारे-विहीन रात में चलते रहे। उन्हें नहीं पता था कि उनकी यात्रा कब और कहां खत्म होगी। परंतु अचानक वे लकड़हारों के एक गांव में पहुंच गए। वहां उन्होंने पेड़ की टूटी डालियों से एक झोपड़ी बनाकर शीघ्र ही उसमें सो गए। अगली सुबह लकड़हारों के कुल के सरदार की नजर अपरिचित नई झोपड़ी पर गई। वह हाथ में कुल्हाड़ी लेकर उधर भागा।

वहां पहुंचकर वह चिल्ला पड़ा, "हमारे गांव में अजनबी! तुरंत हमारा गांव छोड़ दो वरना मैं तुम्हें मार दूंगा।"

परंतु जैसे ही सरदार की नजर प्रिया के सौम्य चेहरे पर एवं विवेक के प्रभावशाली व्यक्तित्व पर पड़ी उसने अपनी कुल्हाड़ी गिरा दी। और अपने कुल में उनका स्वागत किया।

कुछ दिन में विवेक अन्य लकड़हारों की तरह लकड़ी काटना सीख गया। परंतु उसमें एक खासियत थी। जहां अन्य लकड़हारे सभी प्रकार की लकड़ियां काटते, विवेक सिर्फ बेशकीमती चंदन की। चंदन की लकड़ी के कुछ टुकड़ों को बांह में दबाकर वह दौड़कर बाजार चला जाता। इससे उसकी कमर भी कभी नहीं झुकी। उन्हें बेचकर हर बार वह सोने का एक सिक्का लेकर वापस प्रिया के पास आता। कुछ ही दिनों में टहनियों से बनी उनकी झोपड़ी ईंट एवं लकड़ी के एक मकान में बदल चुका था। प्रिया के चेहरे पर प्रसन्नता लौट आई थी। विवेक खुश था।

परंतु गांव के अन्य लकड़हारे विवेक की कार्य-कुशलता तथा ईंट एवं लकड़ी के बने उसके मकान से जलने लगे। और एक रात जब वह वापस आ रहा था तो उन्होंने उसे खूब पीटा। फिर दोनों को गांव से भगा दिया।

विवेक एवं प्रिया सुनसान अंधेरी रात में नाचते जुगनुओं के प्रकाश में भटकते रहे। दुःख से उनके आंसू बह आए। धीरे-धीरे अंधेरा मिट गया एवं सुनहला प्रकाश

फैल गया। अब वे धागा कातने एवं बुनने वाले जुलाहों के गांव में पहुंच चुके थे।

एक जुलाहे की बेटी होने के नाते प्रिया की अंगुलियां सूत कातने में दक्ष थीं। उसके द्वारा काते गए सूत इतने महीन एवं कोमल होते मानो हवा से बने हों। और इस सूत के एक छोटे से लच्छे के लिए बाजार में उसे सोने का एक सिक्का मिलता। एक-एक सिक्का जमा कर उसके पास सौ सिक्के हो गए। उन्हें धागे में पिरोकर उसने एक सुंदर हार बना लिया। फिर उसे अपने राजहंस से सुंदर गले में पहन लिया।

प्रिया की गरदन में सोने के सिक्कों का हार देखकर जुलाहों की पत्नियों की आंखें फटी रह गईं। उन्होंने ईर्ष्यावश एक दूसरे से कहा, "हम पूरे दिन बैठकर मोटे, मजबूत धागा की कई गांठ कात लेते हैं, फिर भी चांदी का ही एक सिक्का कमा पाते हैं। और प्रिया प्रतिदिन थोड़े से कमजोर, तंतुमय धागे कातकर, गले में सोने के सिक्कों का हार लटकाए घूम रही है।"

एक दिन गांव की महिलाओं के साथ प्रिया नदी किनारे गई। वहां खड़ा एक नाविक उसकी लावण्यमयी सुंदरता पर आसक्त हो गया। उसने तत्काल प्रिया की पतली कमर में बांह डालकर उसे नाव में बिठा लिया। और देखते-देखते नौ दो ग्यारह हो गया। प्रिया मदद के लिए चिल्लाती रही। पर ईर्ष्यालु महिलाओं ने आंखें फेर लीं। प्रिया को नाविक की दया पर छोड़ दिया।

नाविक द्वारा प्रिया के अपहरण की बात विवेक के कानों में गई। उस पर तो गम का पहाड़ टूट पड़ा। वह सारा दिन एवं पूरी रात नदी तट पर खाक छानता रहा। उसके पांव थककर चूर हो गए। और वह एक पेड़ के नीचे गिर गया। पता नहीं, कब उसे नींद आ गई।

सुबह सूर्य की किरण ने उसे नींद से जगाया। ठंडी हवा उसे सुकून पहुंचा रही थी। आंखें खोलते ही विवेक ने एक चितकबरे गाय को सामने खड़ा पाया। गाय ने विवेक को जी भरकर दूध पीने को दिया। जैसे ही वह प्रिया की तलाश में निकलने वाला था, उसकी नजर सुनहले गोबर पर गई। पास जाकर देखा तो वह चकित रह गया। गोबर बेशक सोना ही था।

उसने तुरंत सुनहले गोबर को उठाकर उसे ईंटों के आकार में ढाल लिया। हरेक ईंट पर विवेक ने अपना एवं अपने गांव का नाम खोद दिया। गाय प्रतिदिन आती। विवेक उसकी गोबर समेट, ईंटें बनाता। एक के ऊपर एक सोने की ईंटों का अंबार लग गया। धीरे-धीरे ईंटों का यह ढेर काफी ऊंचा हो गया। अब यह सोने के चमकते पहाड़ की तरह हो गया।

इस बीच, बेचारी प्रिया दुःख से कुम्हला गई थी। वह दुष्ट नाविक से मुक्ति के लिए लक्ष्मी की प्रार्थना करती रही। लक्ष्मी ने उसकी प्रार्थना सुन ली। उसके शरीर पर फोड़े निकल आए। चेहरा पीला एवं बदसूरत हो गया। इससे झल्लाकर, नाविक ने प्रिया को घसीटकर नाव के निचले अंदरूनी भाग में अन्य सामानों के साथ बंद कर दिया।

कई बंदरगाहों पर घूमकर अपना सारा माल बेचकर नाविक गांव वापस चल पड़ा। उसकी नाव आराम से बढ़ रही थी। अचानक उसकी नजर दूर, नदी तट पर, खड़े सोने के चमकते पहाड़ पर अटक गई। वह बेसब्री से नाव खेता हुआ वीरान तट पर पहुंचा। विवेक को देखते ही उसकी गर्दन पकड़कर नाव के अंदरूनी भाग में धकेल दिया। वहीं तो प्रिया भी कैद थी।

विवेक एवं प्रिया की जब नजरें मिलीं तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। वे चुपचाप एक-दूसरे से गले मिले। नाविक के भय से वे कुछ बोल नहीं पा रहे थे।

लालच में अंधे, नाविक ने हांफते-हांफते सोने की ईंटें अपनी नाव में लाद लिया। फिर तेजी से नाव खेने लगा। वापसी का सफर लंबा था। और नाविक को अकेलापन खलने लगा। उसने दरवाजा खोल कर विवेक को बाहर बुलाया। फिर उससे कहा, "आओ, मेरे साथ खाओ, पीओ। हम चौपड़ का खेल खेलेंगे।"

एक के बाद दूसरा खेल जारी रहा। विवेक हर बाजी जीतता रहा। और नाविक गुस्से में दांत पीसता। अंत में क्रोधित होकर उसने विवेक को नदी के भंवर में फेंक दिया। हवा के तेज झोंके से पानी की लहर तेज हो गई थी। वह विवेक के शरीर को उछाल-पटक रही थी। उसकी सांस टूट रही थी। उसका साहस जाता रहा। और पानी की तेज धार उसे बहाकर दूर ले गई।

अगले दिन एक बूढ़ी महिला लकड़ी चुनने सुनसान तट पर गई। वहां

उसने एक अधमरे नंगे व्यक्ति को रेत पर लेटा पाया। वह उसे अपने झोपड़ी में ले गई। उसके शरीर को गरमी पहुंचाने के लिए अलाव जलाया। और उसे एक गिलास गर्म दूध पीने के लिए दिया।

विवेक शीघ्र ही होश में आ गया। जैसे ही उसने आंखें खोली, उसकी नजर ममता भरी दो बूढ़ी आंखों पर गई। जो उसे प्यार से निहार रही थी। विवेक की जिंदगी की दुःखदायी कथा सुनकर

उस बुढ़िया के चेहरे पर गम के बादल छा गए। वह चुपचाप अपने बगीचे में चली गई। वहां मुट्ठी भर चुनिंदा फूलों को तोड़कर राजमहल की ओर दौड़ पड़ी।

फूलों का शौकीन राजा उन फूलों को देखकर खुशी से झूम उठा। उसने पूछा, "तुमने ऐसे दुर्लभ फूल कहां पाए? तुम्हें इसके लिए मुंहमांगी कीमत मिलेगी।"

परंतु बुढ़िया घुटनों के बल बैठ, हाथ जोड़ प्रार्थना करते हुए बोली, "हे महान राजा! मुझे सोना-चांदी नहीं चाहिए। मुझ पर बस एक कृपा कीजिए। दरअसल मेरी झोपड़ी में एक कुलीन, ज्ञानी पुरुष आया है। उसकी पत्नी खो गई है। उसके पास एक पैसा नहीं है। और उसका घर बहुत दूर है। इसलिए मैं आपसे विनती करती हूं कि उसे अपना सेवक बना लीजिए।" राजा ने तुरंत विवेक को बुलवाया। उसे उस नदी से गुजरने वाले हरेक नाव से मालगुजारी वसूल करने की नौकरी पर लगा दिया।

विवेक पूरी तत्परता से काम में जुट गया। एक भी नाव उपयुक्त मालगुजारी दिए बिना वहां से नहीं गुजर पाती। परंतु दिन के अंत में, जब सूरज नदी के तट पर ढलने लगता, तो विवेक को प्रिया की याद सताने लगती।

एक रात नदी के तट पर विवेक अकेला लेटा था। शांत बहते नदी की कलकल ध्वनि उसके कानों में आ रही थी। अचानक मछलियों एवं मेंढकों ने पानी में हलचल पैदा कर दिया। पानी में बन रहे चांद की छाया डोलने लगी थी। अचानक उसने लकड़ी के चरमराने की आवाज सुनी। वह उछलकर खड़ा हो गया। और वीरान पड़े तट पर लालटेन लिए टहलने लगा। नदी में एक छाया चलती नजर आ रही थी। शीघ्र ही धुंधलके में उसे एक नाव दिख गया।

"ठहरो! कौन जा रहा है?" रात की शांति भंग करते हुए विवेक चीख पड़ा। आवाज सुनकर महल के रक्षक टॉर्च जलाए, हाथों में तलवार लिए दौड़ पड़े। विवेक नाव को रोकते हुए चिल्ला पड़ा, "नाविक को बंदी बना लो। उसने मेरी पत्नी एवं सोने की ईंटें चुराई है।" फिर तेज धड़कते दिल से नाव की ओर लपका। ताला तोड़कर उसने प्रिया को बाहर निकाला। प्रिया के फोड़े गायब हो चुके थे। वह पुनः नए खिले फूल की तरह सुंदर बन गई थी।

इधर रक्षकों ने उस नाविक को कैद कर लिया था। नाव की तलाशी ली गई। अंदर सोने की ईंटें लदी हुई थीं, जिन पर विवेक एवं उसके गांव का नाम खुदा था।

खुशी की इस घड़ी में प्रिया एवं विवेक अपना दुःख भूल गए। सात साल

लंबी दुःख की अवधि बीत गई थी। उन पर शनि का प्रकोप खत्म हो चुका था। एक दूसरे का हाथ पकड़े दोनों राजा के पास गए और फिर उस बुढ़िया की झोपड़ी में। उन्होंने सहायता एवं दया के लिए दोनों को धन्यवाद दिया। फिर उसी नाव में बैठकर, सोने की ईंटों के साथ खुशी-खुशी वापस अपने गांव पहुंचे।

इस तरह यह साबित हुआ कि शनि एवं लक्ष्मी दोनों का पद समान है। उनकी शक्ति बराबर है। और इस तरह स्वर्ग का झगड़ा खत्म हुआ। यह निश्चित हुआ कि गम का अंधेरा एक दिन दूर होता है। तब नई खुशियां जीवन में उजाला लाती है।

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल
मुंद गईं फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।

दालिम कुमार–अनार वाला राजकुमार

बहुत पहले की बात है। एक राजा था। उसकी दो पत्नियां थीं। पर उनमें से किसी की संतान नहीं थी। राजा को एक पुत्र की बहुत लालसा थी। अपनी मृत्यु के बाद उसे कोई उत्तराधिकारी चाहिए था जो उसके राज्य को संभालता।

दोनों रानियों का अलग-अलग महल था। उन्हें प्रसन्न रखने के लिए सैकड़ों सखियां साथ रहती थीं। वे रानियों के लिए नाचती-गाती एवं कहानियां सुनातीं। अनगिनत सेवक रात-दिन उनकी सेवा में जुटे रहते। महल के चारों ओर बड़े-बड़े पेड़ों से घिरी ऊंची चारदीवारी थी। आम जनता का, महल के अंदर आना तो दूर, झांकना भी दुष्कर था।

पर एक दिन किसी तरह एक बूढ़ा फटीचर भिखारी, छोटी रानी के महल में घुस गया। वहां उसने एक कटोरी भात मांगी। किंतु रानी की सखियों ने यह कहकर उसे भगा दिया कि उनके पास देने के लिए भात का एक दाना भी नहीं है।

भूखा एवं थका भिखारी खाना मांगने बड़ी रानी के महल में गया। रानी स्वयं बाहर आई। उसे खाना एवं पानी दिया। फिर महल के ही एक फूल के पेड़ के नीचे आराम करने के लिए कहा। भोजनोपरांत भिखारी ने वहां आराम किया। उसके बाद रानी को धन्यवाद एवं आशीर्वाद देकर वह चल पड़ा। परंतु चलते-चलते उसने पूछा, "हे दयालु रानी! आपके कितने बच्चे हैं?"

"एक भी नहीं", इतना कहकर रानी उदास हो गई। तब भिखारी ने उसे साफ पत्ते में लिपटा एक जादुई सरसफल दिया। और कहा, "इस फल को पीसकर अनार के फूल के रस में मिलाकर भगवान का ध्यान कर पी लीजिएगा। नौ पूर्णमासी के बाद आप एक अद्वितीय सुंदर बालक को जन्म देंगी। उसका वर्ण अनार के फूल की तरह होगा। और आप उसका नाम 'दालिम कुमार' रखिएगा। याद रहे इसके जान के पीछे शत्रु लोग पड़े रहेंगे। पर मैं आपको एक गुप्त बात

बताता हूं जिसे आप राजा से भी नहीं कहिएगा। आपके बच्चे की जान महल के तालाब में रहने वाली एक रूपहले मछली के दिल में रहेगी। उस मछली के हृदय के मध्य में एक छोटे सुनहले डिब्बे के अंदर सोने का एक हार है। उसमें ही आपके बेटे की जान होगी।''

भिखारी बाहर निकला ही था कि यह खबर चारों तरफ फैल गई कि बड़ी रानी एक बच्चे की मां बनेंगी। यह सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। वह शीघ्र ही अपने खजाने में गया। वहां सबसे अधिक कीमती आभूषण चुनकर रानी को भेंट कर दिया।

समय पूर्ण होने पर भिखमंगे के कथनानुसार रानी ने एक अद्‌भुत सुंदर बालक को जन्म दिया। उसका रंग दाड़िम के फूल की तरह सौम्य था। और उसका नाम पड़ा 'दालिम कुमार'। खुशी के मारे राजा की बांछें खिल गईं। नवजात राजकुमार को बांहों में भरे वह उस दिन की कल्पना करने लगा जिस दिन वह बालक राजा बनता। रत्नजड़ित राजमुकुट पहनकर विशाल राज-काज संभालता। पूरे राज्य में खुशियां मनाने का आदेश दिया गया। महल का द्वार अमीर-गरीब सब के लिए खोल दिया गया। बड़ी संख्या में लोग छोटे राजकुमार को देखने आते एवं उसे आर्शीवाद देते।

समय के साथ बढ़ते हुए दालिम कुमार एक सुंदर एवं प्रसन्नचित्त किशोर बन गया। उसके साथ खेलने के लिए कई दोस्त थे। पर, उसे महल के बागीचे में टहलते रंग-बिरंगे कबूतरों के साथ खेलना सबसे अच्छा लगता। वह उनकी गरदन में गुप्त संदेश बांधकर उन्हें अपने मित्रों के पास भेज देता। फिर, जवाब के संग, उनके वापस आने की प्रतीक्षा करता। परंतु कभी-कभी ये कबूतर उड़कर छोटी रानी के महल में पहुंच जाते थे। उनके पीछे भागता हुआ दालिम कुमार भी वहां पहुंच जाता।

एक दिन दालिम कुमार का प्रिय उजला कबूतर उड़कर छोटी रानी के महल में पहुंच गया। वह उसे पकड़ने भागा। पर रानी की सखियों ने उसे पहले ही पकड़ कर पिंजरे में कैद कर लिया था। राजकुमार ने कबूतर को छोड़ देने के लिए रानी से निवेदन किया। रानी ने कबूतर तो छोड़ दिया पर उसे आगे से सावधान रहने को कहा। उसने धमकी दी कि भविष्य में यदि कबूतर उसके बागीचे में दिखाई
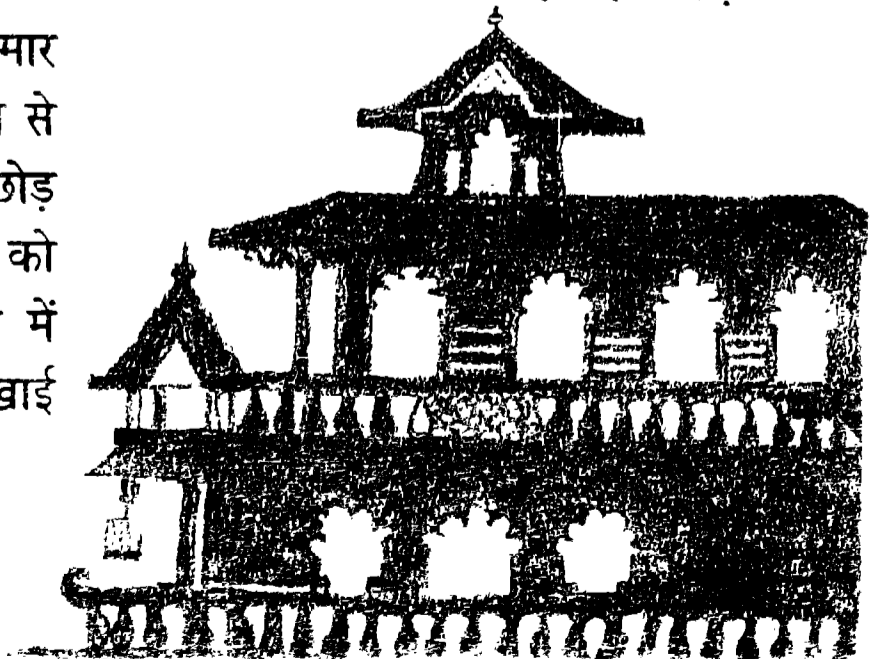
दिया तो उसे मारकर कौवों को खिला दिया जाएगा। दालिम कुमार ने रानी को धन्यवाद दिया। फिर उसके गले से लगकर वादा किया कि आगे ऐसा कभी नहीं होगा।

अब दालिम कुमार छोटी रानी को भी अपनी मां की तरह प्यार करने लगा। परंतु छोटी रानी को उससे घृणा थी। दरअसल उसके जन्म के बाद से ही राजा सिर्फ बड़ी रानी एवं दालिम कुमार का ध्यान रखते। छोटी रानी खुद को तिरस्कृत एवं परित्यक्त महसूस करने लगी थी। इतना ही नहीं, उसने गुप्तचरी में माहिर अपनी एक सखी से उस भिखारी की कहानी भी सुन चुकी थी। उसे पता था कि वह भिखारी खाना मांगने पहले उसी के महल में आया था। फिर वहां से निराश होकर वह बड़ी रानी के महल में गया जहां उसे खिलाया गया। बदले में उसने पत्तों में लिपटा एक जादुई सरसफल बड़ी रानी को दिया। उसने एक ऐसे बच्चे के जन्म की बात भी बताई जिसका प्राण उसके शरीर से बाहर होगा। पर वह सखी यह नहीं सुन सकी कि बच्चे का प्राण कहां होगा।

अगले दिन फिर दुर्भाग्यवश दालिम कुमार का कबूतर छोटी रानी के महल में जा पहुंचा। किंतु इस बार रानी ने उसे वापस करने से साफ मना कर दिया। वह मुस्कराते हुए बोली, "मैं तुम्हें कबूतर तब तक नहीं वापस दूंगी जब तक तुम मुझे एक बात नहीं बताओगे।"

"क्या बात...मां?" राजकुमार ने निश्छलता से पूछा।

इस पर रानी बोली, "कोई खास बात नहीं, मेरे लाल! मैं बस यह जानना चाहती हूं कि तुम्हारा प्राण कहां सुरक्षित है।"

"वह भला कहां हो सकता है, मेरे दिल के सिवा..." आश्चर्य से चौंक पड़ा राजकुमार।

परंतु रानी ने कहा, "मेरे भोले बच्चे! शायद तुम्हें नहीं पता है। तुम्हारी मां अवश्य जानती होगी।"

"परंतु, मेरी मां, मैंने आज तक ऐसा नहीं सुना है", यह कहते-कहते दालिम कुमार की आंखों में आंसू भर आए।

फिर रानी ने उससे कहा, "यदि तुम यह बात अपनी मां से पूछकर मुझे बताओगे तो मैं तुम्हारा कबूतर वापस दे दूंगी। हां, तुम्हें वादा भी करना होगा कि मां को नहीं बताओगे कि मैंने यह पूछा है। राजकुमार यह वादा कर अपने कबूतर के संग सहर्ष अपने महल पहुंच गया।

परंतु अगले दिन भी कबूतर छोटी रानी के बागीचे में जा पहुंचा। उसके

पीछे दालिम कुमार जब वहां पहुंचा तो रानी ने प्रश्न किया, "तुम्हारी मां ने क्या बताया, मेरे लाल?"

इस पर छोटे राजकुमार ने पश्चात्ताप करते हुए कहा, "मुझे माफ कर दीजिए मां। अपना कबूतर वापस मिलने पर मैं इतना खुश हुआ कि आपके प्रश्न का खयाल ही नहीं रहा। कृपया मेरा कबूतर दे दीजिए। मैं वादा करता हूं कि मां से पूछकर आपको जरूर बताऊंगा।"

उस दिन कबूतर के साथ खेलने के बाद दालिम कुमार वापस अपनी मां के पास पहुंचा। वहां उसने मां से पूछा, "मां, मां! मेरे प्राण कहां हैं, मां?"

"क्या मतलब, मेरे लाल? क्यों पूछ रहे हो ऐसा विचित्र सवाल?" घबराई हुई रानी ने पूछा। वह तो बिल्कुल सहम गई थी। दालिम

कुमार याचना भरी आंखों से मां की ओर देखते हुए फिर से पूछा, "पर मां, मैंने तो सुना है कि आप मेरे प्राण का रहस्य जानती हैं। बताइए ना, वह कहां सुरक्षित है।"

रानी को तो मानो सांप सूंघ गया। वह अवाक् रह गई। उसे इस बात की हैरानी थी कि जिस राज को उसने राजा से भी छिपा लिया था, वह राजकुमार को किसने बताया। पहले तो उसने राज बताने से साफ मना कर दिया। परंतु राजकुमार कहां मानने वाला था। वह रोता रहा। उसने तो खाना-पीना भी छोड़ दिया। अंत में रानी ने हारकर अब तक छिपे इस राज को दालिम कुमार के सामने प्रकट कर दिया।

दालिम कुमार उसी दिन छोटी रानी के महल में पहुंचा और अपनी मां द्वारा बताए गए राज उसे बता दिया। छोटी रानी रहस्य समझते ही राजकुमार को जान से मारने की ठान ली। उसने तुरंत राजा को संदेश भेजा कि वह बहुत बीमार है। और वैद्य के अनुसार महल के तालाब के अंदर रहनेवाली रूपहली मछली का दिल खाने से ही उसकी बीमारी खत्म हो सकती है। राजा ने तुरंत मछुआरा को बुलवाया। मछुआरे ने पहली बार ही जाल फेंका था कि वह मछली फंस गई। उसे शीघ्र छोटी रानी के पास भेज दिया गया।

इधर, जैसे ही मछली पकड़ी गई दालिम कुमार की तबीयत बिगड़ गई। उसके काटे जाने पर वह गिरकर धराशायी हो गया। यह बुरी खबर जैसे ही बड़ी रानी के कानों में गई वह दुःख से बेहोश हो गई। राजा यह मानने के लिए तैयार नहीं था कि उसकी आंखों का तारा मर चुका है। उसने पार्थिव शरीर को ग्रीष्मकालीन महल में ऐसे रखवा दिया मानो दर्शनार्थियों के लिए रखा हो। वहां राजकुमार की सुविधा के लिए हर संभव इंतजाम किया गया। परंतु उस महल में दालिम कुमार के सबसे अच्छे दोस्त नंद के अलावा कोई नहीं जा सकता था। उसी के पास महल की चाबी रहती थी।

इस बीच मछली के हृदय से निकला सोने का डिब्बा छोटी रानी के कब्जे में आ गया। उसने शीघ्र ही सोने के हार को उसमें से निकाल अपने गले में डाल लिया। वह दिन भर उसे पहने रही। परंतु रात में बाहर निकालकर उसे अपने तकिए के नीचे छिपा दिया ताकि उसकी चोरी न हो जाए।

उसी रात दालिम कुमार का मित्र नंद ग्रीष्मकालीन महल में पहुंचा। दरवाजा खोलते ही उसकी नजर सुनहले भवन में टहलते उजली छाया पर गई।

पहले तो वह सकते में आ गया। उसे लगा कि कोई भूत है। परंतु नजदीक जाने पर तो वह दंग रह गया। वह भूत नहीं, खुद दालिम कुमार था। बिल्कुल हाड़-मांस का बना, दालिम कुमार।

"दालिम कुमार, क्या तुम सचमुच जीवित हो, या, मैं कोई भूत देख रहा हूं? कृपया बताओ। मैं चकरा गया हूं। घबरा गया हूं," चौंक कर नंद ने सवाल किया।

इस पर दालिम कुमार ने अजीब बात बताई। उसने कहा, "नंद, मैं दिन भर शव बना रहता हूं। पर रात आते ही मेरी जिंदगी लौट आती है। मैं तो खुद चकरा गया हूं। पता नहीं चलता कि मैं जीवित हूं या मर गया।"

नंद उस महल में हरेक रात जाने लगा। वहां दालिम कुमार उसके स्वागत में जीवित एवं जगा रहता। वे साथ-साथ खाते-पीते और खेलते थे। परंतु दालिम कुमार की जिंदगी उनके लिए पहेली बनी रही।

एक रात जब दालिम कुमार एवं नंद चौपड़ के खेल में मग्न थे, दरवाजे के ठोकने की धीमी आवाज आई। नंद तो उछल पड़ा। उसने जैसे ही दरवाजा खोला। एक अत्यंत रमणीय युवती अंदर आई।

दालिम कुमार ने पूछा, "सुंदरी, तुम कौन हो? जाड़े की इस ठंडी रात में यहां क्यों आई हो?"

"मेरा नाम नैना है। मैं एक प्रसिद्ध ज्योतिषी की बेटी हूं। मेरे पिता की भविष्यवाणी है कि मेरा विवाह एक मृत राजकुमार से होगा। अब चूंकि मैं विवाह योग्य हो गई हूं। अतएव मैं अपने घर एवं गांव से भाग आई हूं। मैं अपने ऊपर आने वाले विपत्ति से बचना चाहती हूं।" यह कहते-कहते उस सुंदरी की आंखें भर आईं।

"भाग्य के लेखे से कोई नहीं बच सकता", चकित राजकुमार बोल पड़ा। उसने कहा, "मैं ही मृत राजकुमार हूं। तुम मेरी दुलहन बनोगी?"

सुंदरी यह सुनकर दंग रह गई। उसने प्रश्न किया, "परंतु आप तो जीवित हैं। मुझसे बातें कर रहे हैं। फिर, आप मृत राजकुमार कैसे हो सकते हैं, जिससे मेरा विवाह होना तय है।"

"अंदर आओ। मैं तुम्हें अपनी कहानी सुनाता हूं। फिर तुम्हें सब पता चल जाएगा", यह कहते हुए राजकुमार उसे महल के अंदर ले गया।

दालिम कुमार पूरी रात आपबीती सुनाता रहा। और वह सुंदरी चुपचाप गंभीरतापूर्वक सुनती रही। परंतु, सूर्योदय होते ही राजकुमार तो मानो सदा के लिए

सो गया। संगमर्मर की मूर्ति की तरह ठंडा पड़ा उसका शरीर बिल्कुल निर्जीव हो गया था। अकेली नैना दिन भर डर के मारे रोती रही। रात होते ही दालिम कुमार पुनः जीवित हो गया। उन्होंने एक साथ खाना खाया और रात भर बातें करते रहे। परंतु रात का अंधेरा छंटते ही राजकुमार पुनः निर्जीव हो जाता। इस तरह दोनों जिंदगी एवं मौत के बीच लुकाछिपी के इस खेल को सात वर्षों तक देखते रहे। इस बीच नैना ने दो सुंदर बालकों को जन्म दिया। वे देखने में बिल्कुल अपने पिता की तरह थे।

नैना सात वर्षों की इस लंबी अवधि को धैर्यपूर्वक काट गई। लेकिन अब दालिम कुमार की जिंदगी में चल रही लुकाछिपी से वह तंग आ गई थी। उसे अपने बच्चों के भविष्य की चिंता भी सता रही थी। इसलिए एक दिन जब नंद वहां पहुंचा तो नैना ने उसे एकांत में पूछा, ''हे नंद भैया, दालिम कुमार की इस अजीब जीवन शैली को हमें कब तक देखना पड़ेगा। इस रहस्यमय संकट से निकलने का कोई उपाय नहीं है क्या?''

दुःखी नंद ने जवाब दिया, ''नैना बहन, मैं तुम्हारी मनोदशा समझ सकता हूं। मैंने इस रहस्यमयी समस्या पर गंभीरता से सोचा है। और अपनी समझ से हम इस समस्या का हल निकाल सकते है। लेकिन तुम्हें वह सब करना होगा जो मैं कहूंगा। इसलिए तुम एक स्त्री-नाई का वेश बनाकर अपने बच्चों के साथ महल में जाओ। वहां दोनों रानियों की सेवा में जुट जाओ। तब हम देखते हैं कि आगे क्या होता है।''

नैना को पहले से ही पता था कि दालिम कुमार की जिंदगी सोने के उस हार में थी जो सुनहले मछली के दिल में छिपे एक डिब्बी में था। दालिम कुमार ने उसके सामने अपनी मां द्वारा बताया गया राज खोल दिया था। इस बीच काफी गहराई से सोचने के बाद नंद इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि वही हार छोटी रानी के गले में दिन भर रहता था। रात में वह उसे उतार देती थी। शायद यही वजह थी कि दिन भर दालिम कुमार निर्जीव होता तथा रात में जैसे ही छोटी रानी हार उतारती वह सजीव हो उठता।

अगले दिन नंद ने स्त्री-नाई के उपयोग में आने वाले औजारों का एक डिब्बा नैना को दिया। नैना वेश बदलकर अपने दोनों लड़कों के साथ महल में गई। पहले वह बड़ी रानी के पास पहुंची और उनके बाल धोने एवं पैर रंगने की अनुमति मांगी। परंतु बालकों को देखकर रानी की आंखें भर आईं। दोनों लड़के हू-ब-हू बचपन के दालिम कुमार की तरह दिखते थे।
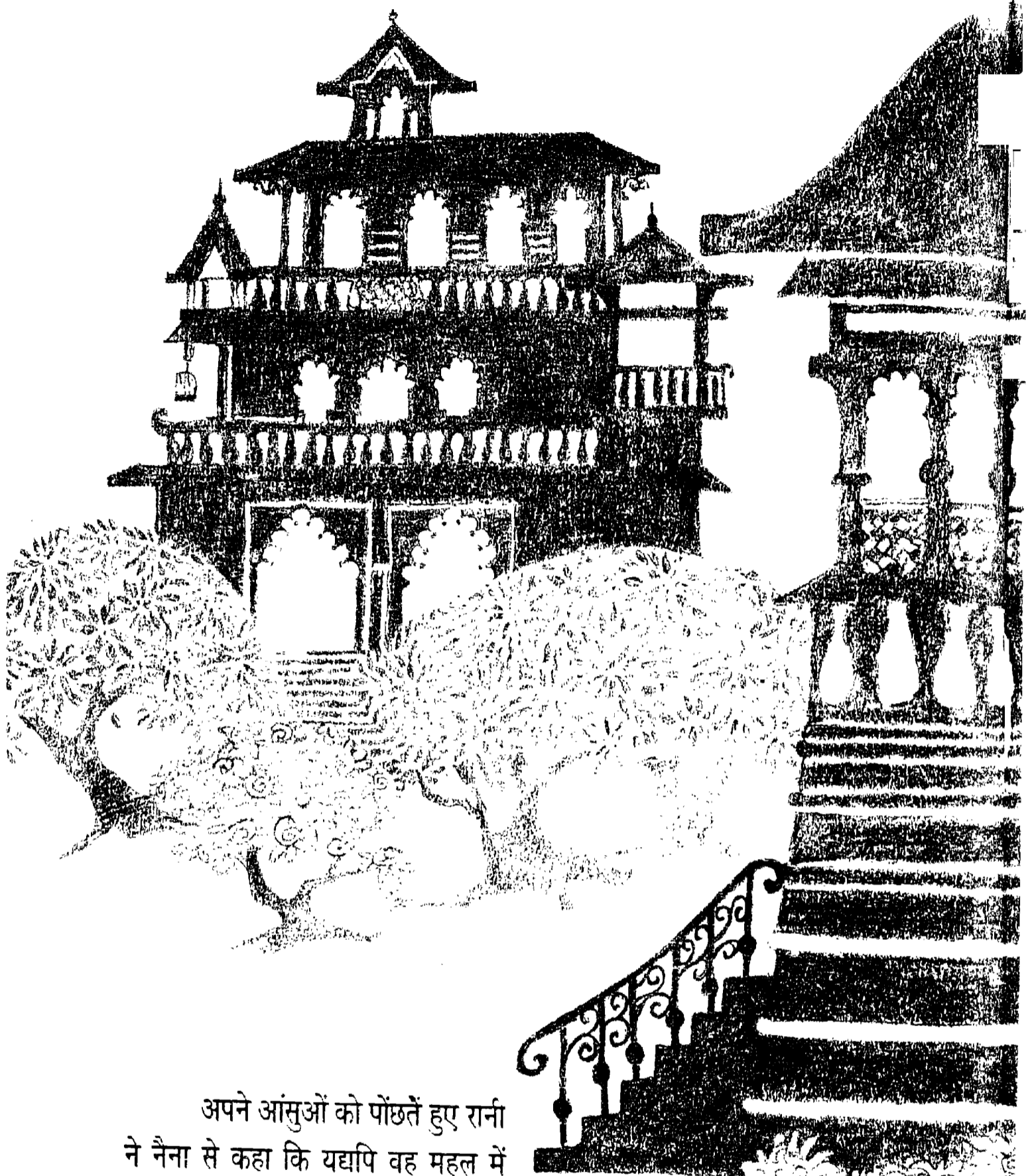
अपने आंसुओं को पोंछते हुए रानी ने नैना से कहा कि यद्यपि वह महल में रहती है पर अपने पुत्र की मृत्यु के बाद स्त्रियोचित शृंगार से परहेज करती है। वह अब एक संन्यासिन की जिंदगी बिता रही है। फिर उसने दोनों बालकों को प्यार से सहलाया एवं चूमा और खाना एवं पैसा देकर विदा कर दिया।

नैना अब छोटी रानी के महल में गई। वहां भी उसने रानी से बाल धोने एवं पैर रंगने की अनुमति मांगी। नैना

रानी की सेवा में जुटी ही थी कि उसका छोटा लड़का चमकते हार को रानी की गरदन से झटक कर निकाल लिया। नैना ने लाख कोशिश की कि लड़का हार वापस कर दे, परंतु बेकार। लड़का रो-रोकर बेसुध हो गया परंतु हार वापस नहीं दिया। रानी को लड़के पर दया आ गई, उसने नैना से कहा, "बच्चे को अब मत रुलाओ, पहले से ही उसका गला बैठा जा रहा है। उसे वह हार घर ले जाने दो। उसके सो जाने के बाद हार वापस कर जाना।" दरअसल रानी हार के लिए बिल्कुल निश्चिंत थी। उसने तो दालिम कुमार को कब का मरा मान लिया था।

नैना मुस्कराते हुए अपने बच्चों एवं सुनहले हार के साथ वापस दौड़ पड़ी। खुशी से उसके पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे।

ठीक उसी पल, सूर्योदय के उजाले ने दालिम कुमार की आंखें खोली। वह उठ बैठा और चारों तरफ चौंधियाई आंखों से देखने लगा। ऐसा लगता था मानो किसी अंधे को अचानक आंखों में रोशनी मिल गई हो। नैना कुछ ही क्षणों में दौड़ती हुई वहां पहुंची। उसने सुनहला हार राजकुमार के गले में डाल दिया। फिर उसने राजकुमार को यह भी बताया कि किस तरह उसके बच्चे ने रानी की गरदन से हार झटक लिया था।

अब दालिम कुमार की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसने अपनी पत्नी को गले से लगाया और बच्चों को चूमता हुआ कहने लगा, "जीवित एवं जाग्रतावस्था में साथ बिताए रातों ने हमें चांद एवं तारों की सुंदरता दिखाई। अब हम दिन का उजालापन एवं रात का सौंदर्य निश्चिंत एवं निर्भीक होकर देखेंगे।"

इस बीच वही भिखारी महल में फिर पहुंचा और उसने बड़ी रानी से कहा, "हे रानी मां, दालिम कुमार कभी मरा नहीं था। वह आज भी जीवित है। आप राजा के साथ ग्रीष्मकालीन महल में जाइए और दालिम कुमार, उसकी पत्नी एवं उनके बच्चों को वापस अपने महल में, अपने लोगों के बीच ले आइए।"

भिखारी को महल में घुसते हुए छोटी रानी के गुप्तचरों ने देख लिया था। रानी के साथ उसकी बातचीत सुनी जा चुकी थी। और इन सबका ब्यौरा छोटी रानी तक पहुंचा दिया गया था। छोटी रानी तो मारे डर के कांपने लगी थी। उसे जरा भी शक नहीं रहा कि उसकी पोल खुलने वाली है। और उसे किए गए करतूतों की सजा मिलेगी। वह भय एवं गुस्से से पागल महल के तालाब की ओर बेतहाशा भागी। उसने जैसे ही पानी में छलांग लगाई, भूखी मछलियों का झुंड उस पर टूट पड़ा। देखते-देखते उसका नामो-निशान मिट गया।

अगला दिन बहुत सुहावना था। अदृश्य दैवीय अंगुलियों ने आकाश में सतरंगी इंद्रधनुषी फैलाया। ओस की बूंदें फूलों की सुगंध में लिपट पूरे वातावरण को सुवासित कर रही थी। कुल मिलाकर माहौल में एक अजीब सम्मोहन व्याप्त था। महल के द्वार पर स्वागत करने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी थी। राजा एवं रानी अपने लाडले पुत्र दालिम कुमार, उसकी सुंदर पत्नी एवं उनके छोटे-छोटे दोनों बच्चों के साथ अपने राज्य वापस आ गए थे।

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल
मुंद गईं फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।

माथे पर चांद वाला लड़का

बहुत पहले की बात है। एक संपन्न नगर में एक गरीब बुढ़िया रहती थी। वह इधर-उधर घूम-घूमकर फटे-पुराने कपड़े एवं टूटा-फूटा सामान चुनती थी। उसका जीवन निर्वाह करने का एकमात्र जरिया यही था। इससे किसी तरह उसकी भूख शांत हो पाती थी।

बुढ़िया की एक अद्भुत सुंदर बेटी थी। उसके सौम्य चेहरे पर सुख-दुःख, आनंद-व्यथा, हंसी एवं आंसू की महीन लकीरें साफ झलक जाती थीं। परंतु उसके नसीब में गरीबी एवं भूख लिखा था। हां, उसके पास से गुजरने वाला हर व्यक्ति उसकी सुंदरता पर मोहित हुए बिना नहीं रह पाता। वह चाहे स्वर्ण देकर सुंदरता खरीदनेवाला राजा हो या, फिर प्यार भरी अंगुलियों से सहलाकर गीली मिट्टी को आकार देनेवाला, उसे सुंदर बनानेवाला साधारण कुम्हार हो।

अपूर्व सुंदरता की बदौलत उसकी दोस्ती तीन युवतियों से हो गई। वे सभी प्रतिष्ठा एवं हैसियत में उससे कहीं ऊंची थीं। उनमें से एक प्रधानमंत्री की बेटी थी तो दूसरी एक धनी व्यवसायी की। तीसरी राजपुरोहित की बेटी थी।

एक दिन महल के निकट ही एक झील में तीनों सखियां उस बुढ़िया की बेटी के साथ स्नान कर रही थीं। झील के ठंडे पानी में आनंदित होकर उनमें से प्रत्येक ने अपनी-अपनी विशेष प्रतिभा का बख़ान शुरू कर दिया।

प्रधानमंत्री की बेटी ने कहा, "सुनो सखियो, मुझसे विवाह करनेवाला व्यक्ति खुश रहेगा। उसे मेरे लिए कभी वस्त्र नहीं खरीदना पड़ेगा क्योंकि जो वस्त्र मैं पहनती हूं वह न तो कभी मैला होगा और न ही पुराना होकर फटेगा।"

व्यवसायी की बेटी ने कहा, "मुझसे विवाह करनेवाला व्यक्ति भी सदैव खुश रहेगा क्योंकि खाना पकाने के लिए जिस ईंधन का इस्तेमाल मैं करूंगी वह जलकर राख नहीं होगा। उसका उपयोग एक के बाद दूसरे दिन और इस तरह सालों-साल किया जा सकता है।"

"मेरा पति भी कोई भाग्यशाली ही होगा", राजपुरोहित की बेटी ने कहा। "मैं जो चावल पकाऊंगी वह कभी बासी नहीं होगा। और न ही खत्म होगा। हमारे खाने के बाद भी बर्तन भरा रहेगा", राजपुरोहित की बेटी ने गर्व से कहा।

अंत में गरीब बुढ़िया की बेटी बोली, "मुझसे विवाह करने वाला व्यक्ति भी नसीब वाला होगा। मैं जुड़वां बच्चों को जन्म दूंगी। एक लड़का होगा, एक लड़की। लड़की दिव्य सुंदरी होगी और लड़के के माथे पर चांद एवं उसके हाथों की तलहत्थी पर तारे होंगे।"

उन लड़कियों ने बोलना शुरू ही किया था कि राजा अपने विशाल सफेद घोड़े पर सवार उधर से गुजरा। उसने रुककर उनकी बातें सुन ली। वह मन ही मन बोला, "जिस लड़की के कपड़े मैले नहीं होते और न ही पुराने होकर फटते हैं वह जाए भाड़ में। मैं तो अपनी पत्नी को सोने के धागे से बुना एवं रत्नों से सजा अनगिनत पोशाक दे सकता हूं। उन्हें देखकर यहां की हर कुंवारियां ईष्यालु हो जाएंगी। मुझे तो उस लड़की में भी दिलचस्पी नहीं है जिसका ईंधन कभी जलकर राख नहीं होगा। मेरे शाही रसोईघर में तो इतना ईंधन है जो पूरी दुनिया को जला सकती है। मैं तीसरी कुंवारी की भी परवाह नहीं करता। मेरे शाही अन्नागार में इतना अन्न है जिससे पूरी दुनिया के राजाओं एवं समस्त जनता को खिलाया जा सकता है। परंतु चौथी लड़की! उसकी सुंदरता तो स्वर्ग की देवियों से बढ़कर है। वह एक दिव्य पुत्री को जन्म देगी। उसका एक बेटा भी होगा जिसके माथे पर चांद एवं तलहत्थी पर तारे अंकित होंगे। मैं ऐसी ही लड़की चाहता हूं। उसी से विवाह करूंगा।"

हालांकि राजा की चार रानियां थीं, पर किसी ने एक भी बच्चे का जन्म नहीं दिया था। इससे मंत्रीगण परेशान रहते थे। उनके अनुसार बिना उत्तराधिकारी का राजा, बिल्कुल ताप एवं रोशनी विहीन सूर्य की तरह था। इसलिए उन्होंने राजा को अनुनय-विनय से पांचवीं शादी के लिए राजी कर लिया। हो, न हो, पांचवीं रानी के भाग्य में लड़का होता जो राजा के विशाल राज्य को संभालता। और सुनहली राजगद्दी पर बैठता।

राजा का दिल भी बुढ़िया की सुंदर बेटी पर आ गया था। उसने अपने सेवकों को उस लड़की का परिवार एवं पता-ठिकाना मालूम करने के लिए भेजा। वापस आकर सेवकों ने दुःखी होते हुए कहा कि वह सुंदर लड़की तो निम्न कुल

की है। उसकी मां टूटा-फूटा एवं रद्दी चुनने वाली एक गरीब बुढ़िया है।

इस पर क्रुद्ध प्रधानमंत्री हठात् बोल पड़ा, "राजा भला कैसे निम्न कुल की उस लड़की से विवाह कर सकते हैं जो किसी तरह राजघराने के काबिल नहीं है?"

परंतु राजा ने कहा, "कोई बात नहीं है। मैं केवल उसी से विवाह करना चाहता हूं।"

उसी दिन राजा ने बुढ़िया को बुलावा भेजा। राजा के संदेशवाहकों को अपनी झोपड़ी के बाहर खड़े देख बुढ़िया डर से थर-थर कांपने लगी। उसने सोचा, शायद महल के इर्द-गिर्द वर्जित क्षेत्र में घूमने की सजा होगी। परंतु डर से कांपती हुई बुढ़िया संदेशवाहकों के पीछे चल पड़ी। उन्होंने बुढ़िया को राजा के व्यक्तिगत कक्ष में ले जाकर छोड़ दिया।

वहां राजा ने उससे पूछा, "क्या यह सच है कि तुम्हारी एक बेटी है जो प्रेम एवं सुंदरता की देवी से कहीं अधिक सुंदर है? और उसकी मित्रता मेरे प्रधानमंत्री एवं राजपुरोहित की बेटियों से है।"

गरीब बुढ़िया का शरीर डर से थर-थर करने लगा। उसके होंठ कांप रहे थे। और दिल बैठा जा रहा था। वह राजा के चरणों पर गिरकर दया की भीख मांगने लगी।

राजा ने झुककर उसे जमीन पर से उठाते हुए कहा, "हे भद्र महिला, मैं आपकी बेटी से विवाह कर उसे अपनी रानी बनाना चाहता हूं।"

गरीब बुढ़िया तो सुन्न पड़ गई थी। राजा को देखती उसकी आंखें आश्चर्य से फटी रह गई। वह तो बिल्कुल अवाक रह गई थी मानो बोलने के लिए उसके पास शब्द ही नहीं हों। परंतु उसके दिल की बेचैनी दूर करते हुए राजा दयाभाव से बोला, "अपने अंदर समाए भय एवं दुःख को दूर कीजिए। मैं वाकई आपकी बेटी से विवाह कर उसे अपनी रानी बनाना चाहता हूं।"

शीघ्र ही पूरे राज्य में यह खबर फैल गई कि राजा निम्न कुल की एक दिव्य सुंदरी से विवाह करने वाले हैं। यह सुनते ही चारों रानियों का दिमाग झन्ना गया। सबसे बड़ी रानी ने गुस्से से आगबबूला होते हुए पूछा, "हे सहृदय राजा, यह कैसा पागलपन आप पर सवार हो गया है? आप एक ऐसी लड़की से विवाह करना चाहते हैं जो हमारे नौकरानी होने के लायक भी नहीं है। और हमें उसे बराबरी का दर्जा देना होगा।" परंतु राजा अपने निर्णय पर अटल था।

अगले दिन ही राज-ज्योतिषी को बुलवाकर एक शुभ दिन निश्चित किया

गया। और इस तरह रद्दी चुनने वाली बुढ़िया की बेटी का विवाह राजा से हो गया। वह राजा की पांचवीं एवं सर्वप्रिय रानी बन गई।

उनके प्रेम की गहराई को शब्दों में बखान करना संभव नहीं है, क्योंकि दिल की भाषा सिर्फ वे समझ सकते हैं जो प्यार करते एवं पाते हैं। इस प्रकार, सपनों के पंख पर सवार, समय उड़ने लगा। एक दिन राजा ने रानी से कहा, "प्रिये, एक राजा के कर्तव्य का पालन करने के लिए मुझे आपसे कुछ दिन अलग रहना होगा। मुझे इस विशाल राज्य के अन्य भागों की देखभाल भी करनी होगी। तुम इन दिनों गर्भवती हो और मैं बच्चे के जन्म के समय तुम्हारे नजदीक रहना पसंद करूंगा। दरअसल राजमहल का षड्यंत्र तुम्हारी समझ से परे है। इसलिए मैं तुम्हें यह सुनहला घंटी देता हूं। जैसे ही बच्चा जन्म लेने वाला हो, तुम इसे एक बार बजा देना, मैं पलक झपकते ही तुम्हारे नजदीक पहुंच जाऊंगा। परंतु ध्यान रहे, यह घंटी ठीक उसी पल बजाना जब बच्चा जन्म लेने वाला हो। एक क्षण पहले भी नहीं।

चारों रानियों ने चुपके से राजा की बात सुन ली थी। राजा के जाते ही वे छोटी रानी के कक्ष में आ धमकीं।

सबसे बड़ी रानी ने आते ही पूछा, "तुमने ऐसी सुंदर घंटी कहां से ली? इसे अपने बिस्तर के पास क्यों लटका रखी है?"

निर्दोष छोटी रानी का जवाब था, "राजा ने यह घंटी मुझे दी है। उन्होंने कहा है कि जब हमारा बच्चा जन्म लेने वाला हो तब इसे बजाना। उन्होंने यह भी कहा कि वे कहीं भी हों, घंटी की आवाज सुनकर पलक झपकते ही मेरे बगल में होंगे।"

"असंभव!" उनमें से एक रानी ने कहा। फिर उसने जोड़ देते हुए कहा, "राजा ने मजाक किया होगा। वे भला कैसे मीलों दूर से इसकी आवाज सुन सकते हैं? और, फिर पलक झपकते वे तुम्हारे निकट आ जाएंगे! अभी घंटी बजाकर देखो, तुम्हें पता चल जाएगा कि राजा ने झूठ कहा था या सच।"

पहले तो छोटी रानी घंटी बजाने से आनाकानी करती रही। परंतु अन्य रानियों ने उसे अंततः फुसला ही लिया। छोटी होने के लिहाज से पवित्र आत्मा वाली रानी ने धीरे से घंटी बजा ही दी। उस समय राजा अपने नियंत्रण में पड़ने वाले किसी अन्य राज्य की राजधानी के मार्ग में था। परंतु घंटी की आवाज सुनते ही वह पीछे मुड़ा और कुछ पलों में रानी के कक्ष में प्रकट हो गया। वहां छोटी रानी को अपने सहेलियों के संग मजे से बातें करते देख वह चौंक गया। उसने सीधे सवाल किया, "क्या मैंने नहीं कहा था कि ठीक प्रसव के वक्त घंटी बजाना, एक पल भी पहले नहीं?"

"बिल्कुल, मेरे स्वामी, आपने कहा था। मैंने यह जांचना चाहा कि आपने जो कहा वह सत्य है।" छोटी रानी ने यह नहीं कहा कि बड़ी रानियों ने ऐसा करने को उकसाया था।

यह सुनकर दुःखी होते हुए राजा ने पूछा, "प्रिये, तुम्हें मेरी बात पर शक कैसे हुआ? क्या तुम्हें मेरे प्रेम की गहराई में संदेह है?" परंतु जैसे ही राजा की नजर रानी के गालों पर लुढ़कते आंसुओं पर गई उसने अपने गुलुबंद से उसे पोंछ दिया, फिर रानी को गले लगाते हुए उसने कहा, "अब तो तुम्हें यकीन हो गया है कि जो मैंने कहा वह सच है। इसलिए ध्यान रखना कि प्रसव से पूर्व घंटी नहीं बजे।"

राजा के बिना छोटी रानी को एक-एक दिन भारी लग रहा था। इस बीच

एक भयंकर तूफानी रात में एक बार फिर चारों रानियां उसके कक्ष में आ धमकीं। सबसे बड़ी रानी ने गंभीरता से कहा, "बच्चा के जन्म की घड़ी नजदीक आ रही है। पिछली बार तो घंटी की आवाज राजा तक गई थी क्योंकि वे महल से अधिक दूर नहीं थे। और हवा भी शांत थी। परंतु अभी तो वर्षा एवं आंधी का समय है। इसलिए मुझे डर है कि कहीं घंटी की आवाज राजा के कानों तक नहीं पहुंचे। तुम एक बार फिर घंटी बजाकर देख लो कि इसकी आवाज राजा के कानों तक पहुंचती है या नहीं, ताकि तुम दोनों के चिरप्रतीक्षित बच्चे के जन्म के समय वे तुम्हारे समीप रहें।"

छोटी रानी ने काफी देर तक इसका विरोध किया। परंतु बड़ी रानियां उस पर हावी हो गईं। और हारकर, छोटी रानी ने घंटी बजा ही दी। राजा उस समय राजधानी में अपने दरबार में फरियाद सुन रहा था। घंटी की आवाज सुनते ही उसने दरबार बर्खास्त कर दिया और तत्क्षण रानी के कक्ष में प्रकट हो गया। इस बार राजा अपने आपे से बाहर हो गया। गुस्से से बिफरते हुए उसने कहा, "तुमने फिर मेरे प्रेम एवं वचन पर शक किया है। अब मैं तुम्हें भाग्य भरोसे छोड़ता हूं। आवश्यकता पड़ने पर भी यदि तुम घंटी बजाओगी, मैं नहीं आऊंगा। भले ही तुम जोर-जोर से घंटी बजाती रह जाओ।"

रानी ने इससे पहले राजा का गुस्सा नहीं देखा था। वह हताश होकर रोने लगी। फिर उसने कहा, "हे स्वामी! मुझे माफ कर दीजिए। मेरे बच्चे का जन्म अब शीघ्र ही होने वाला है। और मैं आश्वस्त होना चाहती हूं कि उस क्षण घंटी की आवाज हमारे बीच के फासले को पार कर आप तक पहुंचे।" परंतु इस बार भी उसने राजा को यह नहीं बताया कि बड़ी रानियों की जिद्द पर उसने घंटी बजाई थी। औरा राजा बिना कुछ बोले वहां से चला गया।

अंततः शुभ घड़ी आ ही गई। छोटी रानी बार-बार घंटी बजाती रही। हर चोट के साथ आवाज तेज होती गई। घंटी की गूंज पूरे राज्य में ही नहीं वरन जंगल के पार भी सुनाई दे रही थी। परंतु दुर्भाग्यवश, राजा वापस नहीं आया।

अब बड़ी रानियों को विश्वास हो गया कि राजा नहीं आएंगे। उन्होंने महल के धाई को बुलवाया और उसे सोने की मोहरों वाली थैली देकर नवजात शिशु को खत्म करने के लिए कह दिया। इतना ही नहीं उस बच्चे की जगह राजा के खास कुत्ते के नवजात बच्चों की जोड़ी रखने के लिए भी कह दिया। शीघ्र ही रानी ने जुड़वां बच्चों को जन्म दिया। उनमें एक लड़का था और दूसरी लड़की। लड़की काफी सुंदर थी। और लड़के के माथे पर छोटा सा चांद एवं हथेलियों पर तारे थे। परंतु हताश रानी के समक्ष उस धाय ने नवजात पिल्लों की एक जोड़ी रख दी और कहा उसने इन्हें ही जन्म दिया है।

राजा अगले दिन ही वापस आ गया क्योंकि क्रोध में होने के बावजूद उसे याद था कि रानी के जुड़वां बच्चों का जन्म होने वाला है। उनमें एक सुंदर लड़की और दूसरा माथे पर चांद एवं हथेलियों पर तारे वाला लड़का होगा। परंतु जब पिल्लों को उसके समक्ष पेश किया गया और मनगढ़ंत बातें बताई गईं तो उसके होश उड़ गए।

अब तो राजा के दुःख का ठिकाना नहीं रहा। लज्जा से वह मरा जा रहा था। भावावेश में उसने आदेश दिया कि छोटी रानी के राजसी परिधानों एवं आभूषणों को उतारकर उसे बाजार में कौवों को उड़ाते-भगाते रहने के काम पर लगा दिया जाए। इस बीच, रात के अंधेरे में महल की धाई ने नवजात बच्चों को एक टोकरी में रखकर घास-फूस से ढंक दिया। और उस टोकरी को गांव के बाहर एक कुम्हार की झोपड़ी के द्वार पर रख दिया।

सुबह में पौ फटने से पहले ही एक नवजात शिशु के रोने की आवाज से कुम्हार की पत्नी की आंखें खुल गईं। वह बिना कुछ सोचे-समझे झोपड़ी से बाहर निकली। दरवाजे पर टोकरी में दो सुंदर नवजात शिशुओं को इकट्ठे पाकर वह आश्चर्यचकित रह गई। पहले तो वह उन्हें आश्चर्य एवं ममता भरी आंखों से निहारती रही। फिर उन्हें सहेजकर अंदर ले गई और कुम्हार को उठा दिया। और खुशी से बोल पड़ी, "हमारा अपना बच्चा नहीं है। लेकिन देवताओं ने हमारे लिए एक सुंदर लड़की एवं एक लड़का भेज दिया है। इस लड़के के माथे पर तो चांद है और हथेलियों पर तारे हैं।" कुम्हार और उसकी पत्नी तो खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। छोटी लड़की दिन-ब-दिन सुंदर हो रही थी। और लड़के के माथे का चांद निखर रहा था। कुछ ही दिनों में जुड़वां भाई-बहन कुम्हार की आंखों के तारे बन चुके थे। पर गांव के लोग उनसे जलने लगे थे। कुम्हार की पत्नी पूरी रात जागकर छोटी बच्ची के लिए रंग-बिरंगी पोशाक एवं लड़के के लिए इंद्रधनुषी रंगों
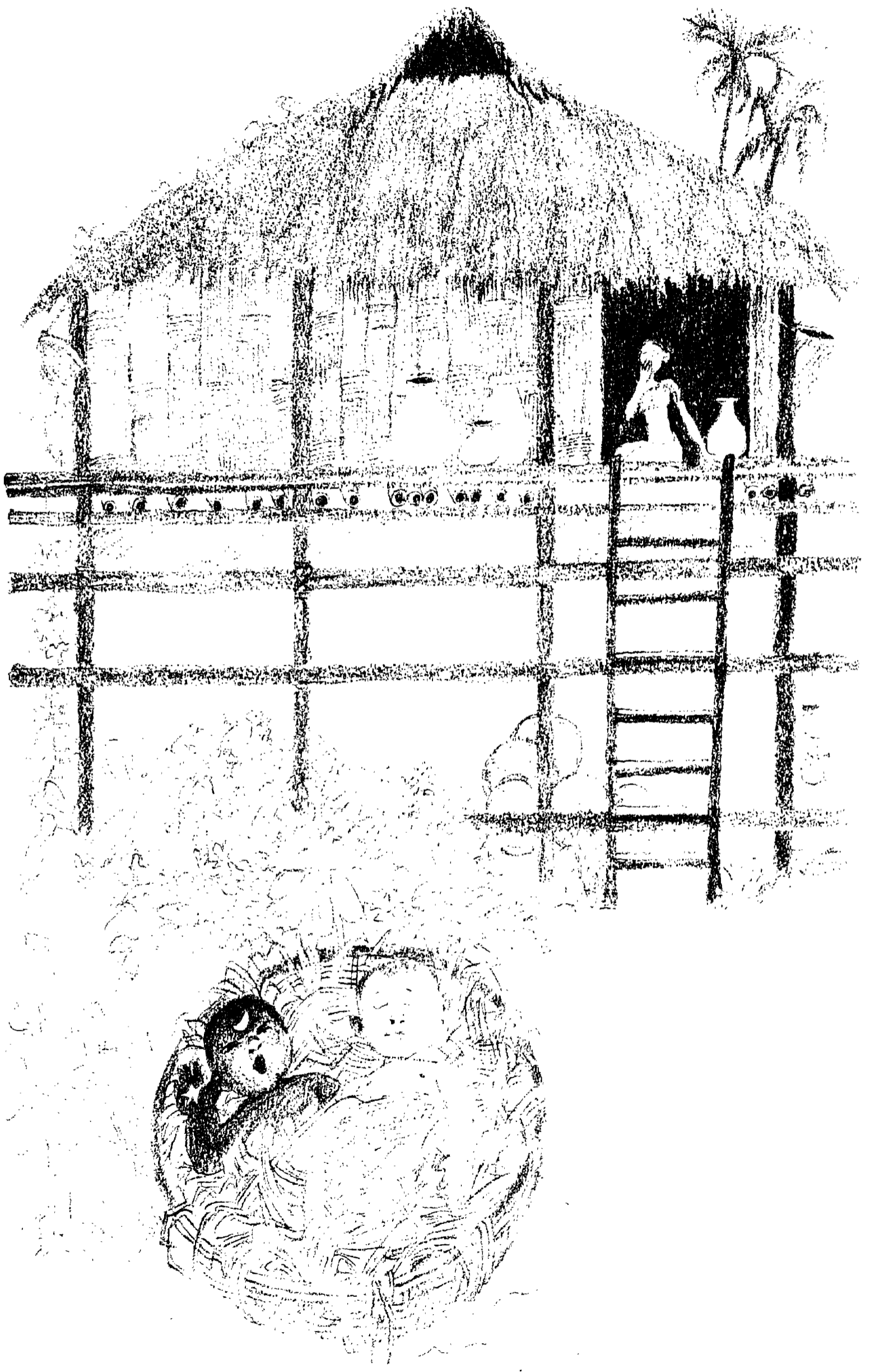
की पगड़ी बनाती। वह लड़के के माथे पर निखरते चांद को गांव वालों की ईर्ष्यालु नजर से बचाना चाहती थी।

समय गुजरता रहा। दोनों बच्चों ने माटी को सुंदर और अद्भुत आकार देने की कला सीख ली। उन्हें चाक पर बारीक काम करने में महारत हासिल हो गई। उनके बनाए बरतन खरीदने लोग दूर दराज से भी आते। अब कुम्हार और उसकी पत्नी कमजोर एवं बूढ़े हो चले थे। फिर एक के बाद एक, दोनों का देहांत हो गया।

भाई-बहन दोनों ने मिलकर कड़ी मेहनत करके एक-एक सिक्का जोड़ा। उनके पास जब एक हजार सिक्का जमा हो गया तो उन्होंने उससे गांव में एक छोटा सा घर खरीद लिया। फिर जंगल में घूमने के शौकीन उस लड़के ने एक घोड़ा और तीर-धनुष भी खरीद लिया। शाम को काम खत्म कर वह अक्सर शिकार पर निकल जाता था।

दीपों का पर्व आया। गांव में खुशी की लहर थी। सुंदर दीयों को खरीदने के लिए लोगों की भीड़ बाजार में उमड़ पड़ी। सौभाग्य की देवी लक्ष्मी के स्वागत में हरेक व्यक्ति अपने घर को उन दीयों से रौशन करने के लिए उतावले थे। लक्ष्मी उनके लिए सुख-शांति का संदेश लाती। त्योहार के दिन लाखों दीये जगमगा उठे। उनके एक-एक घर, गली-नुक्कड़ और समूचा गांव रौशन हो गया। ऐसा प्रतीत होता था मानो यह गांव परियों की जादुई नगरी बन गया हो।

उसी दिन चीथड़ों में लिपटी एक असहाय महिला जवान हो चली उस लड़की की दुकान पर सिर्फ एक दीया मांगने आई। लड़की ने चौंककर उससे पूछा, "सिर्फ एक दीया! आज के दिन तो घरों को रौशन करने के लिए सैकड़ों दीयों की जरूरत पड़ती है। आपको भी लक्ष्मी के स्वागत की ऐसी ही तैयारी करनी चाहिए ताकि देवी लक्ष्मी पधारकर आपको आशीर्वाद दे सके।"

इस पर उस निरीह महिला ने आह भरते हुए कहा, "मेरा तो कोई घर-द्वार नहीं है। मैं तो उस विशाल वृक्ष की जड़ में दीया जलाऊंगी जो मुझे सूर्य की तेज धूप और बरसात के पानी से बचाता है।"

लड़की ने सिर उठाकर ऊपर देखा। उस महिला की सुंदर काली आंखों में दुःख की रेखा स्पष्ट झलक रही थी। लड़की ने उदास होते हुए कहा, "आपकी बातों से मेरा दिल भर आया है। मैं अपने भाई के साथ पास के एक घर में रहती हूं। हमने अपना माता-पिता खो दिया है और एक सूनापन महसूस कर रहे हैं।

क्या आप हमारे साथ रहेंगी?'' वह महिला दिल थामे सब कुछ सुनती रही। फिर उसने अपने आंसू पोंछ लिए और लड़की के साथ चल पड़ी।

दोनों भाई-बहनों के लिए तो वह महिला मानो लक्ष्मी का अवतार थीं। उनका घर प्रेम एवं प्रकाश से भर गया। उन दोनों की जिंदगी से खालीपन जाता रहा। शीघ्र ही उनके बीच मां-बच्चों का एक अटूट बंधन बन गया।

पूरी रात जगकर गांव के लोगों ने मां लक्ष्मी की प्रार्थना की और आने वाले वर्षों में सुख-शांति की कामना करते रहे। इस प्रकार रात के जगे लोग सुबह देर तक सोते रहे। परंतु माथे पर चंद्र वाला वह लड़का इंद्रधनुषी रंगों वाली पगड़ी बांधकर घोड़े पर सवार जंगल की ओर चला गया।

जंगल में कलकल करती एक सरिता के किनारे एक पेड़ के नीचे वह लेटा रहा। वह पेड़ इस तरह झुका हुआ था मानो निर्मल धारा को स्पर्श करने के लिए आतुर हो। वह लड़का शांत जंगल की गहराई को दिल में उतारने के लिए आंखें मूंद कर लेटा रहा। फूलों की खुशबू उसकी सांसों में समा रही थी। सुबह की शांत हवा उसके कानों में गा रही थी। उसे लग रहा था जैसे पूरे जंगल की शांति और सुंदरता उसके दिल में उतर रही थी। और वह धीरे-धीरे मीठी नींद की आगोश में डूब गया।

एक उड़ते तीर की सनसनाहट सुनकर अचानक उसका सपना टूट गया। तीर सीधे लड़के की पगड़ी में घुसा और उसे चीरकर गिरा दिया। वह लड़का भौंचक्का देखता रहा। उसके सामने उसके माथे पर नजर गड़ाए एक अपरिचित लंबा आदमी खड़ा था।

लड़के ने क्रोधित होते हुए उससे पूछा, ''आप कौन हैं? आपने हवा में क्यों तीर चलाई? उसी तीर से मेरे माथे पर बंधी पगड़ी फट गई।''

''मैं यहां का राजा हूं। पर तुम कौन हो? कहां रहते हो? और तुम्हारी मां कौन है?'' राजा ने जवाब देते हुए पूछा।

लड़का उठकर खड़ा हो गया। अपनी फटी पगड़ी को देख दुःखी होते हुए उसने कहा, ''मैं एक कुम्हार का बेटा हूं। अपनी जुड़वां बहन एवं मुंहबोली मां के साथ बाजार के समीप एक घर में रहता हूं।''

राजा ने शीघ्र आदेश दिया, ''मुझे अपने घर ले चलो।'' दोनों किसी सोच में मग्न जंगल एवं गांव को पारकर बाजार के निकट उस घर के पास पहुंचे। दरवाजे पर एक सुंदर लड़की थी। अपने भाई के साथ एक अपरिचित व्यक्ति को

देखकर उसने मां को बाहर आने के लिए कहा।

रानी की नजर जैसे ही राजा से मिली दोनों रोमांचित हो गए। रानी के दिल की गहराई से एक आह निकली और उसके छलकते आंसुओं में घुल गई। राजा, रानी एवं दोनों बच्चे कुछ पल के लिए मंत्रमुग्ध हो चुपचाप खड़े रहे। परंतु राजा को उस घर के निकट जाते देख महल की धाई के होश उड़ गए। वह बेतहाशा भागी उनके पास पहुंची। फिर राजा के पैर पर गिरकर उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। उसने सुनहली घंटी को बजाने से लेकर नवजात शिशुओं को मारने के लिए मिले सोने की मोहरों की सारी कहानी सुना दिया। चारों बड़ी रानियों की काली करतूतों पर से पर्दा हट गया था। धाई ने यह भी बताया कि किस तरह दयालु होकर उसने राज परिवार के नवजात बच्चों को एक टोकरी में रखकर कुम्हार के दरवाजे पर छोड़ गई थी।

भाव-विह्वल राजा ने जुड़वां बच्चों को गले से लगा लिया। उसने रानी के हाथों को चूमते हुए कहा, "दुनिया सचमुच रहस्यों से भरी है। और उससे भी निराला है जीवन एवं प्रेम का यह खेल। परंतु सत्य अंततः विजयी होता है। और प्रेम अमर है।" फिर वे सभी बाकी के दिन सुख-शांति से बिताने अपने राज्य की ओर वापस चल पड़े।

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल
मुंद गई फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार
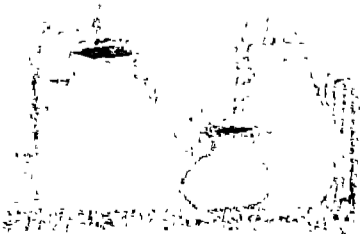
धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।

न्याय की तलवार

सूर्यनगर अपने रत्नजड़ित महलों से सदैव चमकता रहता। उसके अंदर मंदिरों की गगनचुंबी मीनारें सूरज की रोशनी में नहाए बादलों को छूने के लिए लालायित रहते। नगर की सड़कों का फर्श सोने की ईंटों से बना था। दीवारों पर चमकते हीरों की सजावट थी। असंख्य तारों की तरह चमकते ये हीरे रातों को रौशन कर देते थे।

वहां का राजा एवं प्रजा प्रकाश के देवता सूर्य की पूजा करते थे। उन्हें पता था कि सूर्य की जीवनदायी रोशनी के अभाव में न तो धरती पर जीवन संभव था और न ही स्वर्ग में प्रकाश।

राजा के तीन पुत्र एवं लाखों की संख्या में प्रजा थीं। वे सभी राजा को अपनी जान एवं संपत्ति का रक्षक मानते थे। एक दिन राजा के पास पहुंचकर उन्होंने गुहार लगाई, "हे राजन्, शायद आपको पता नहीं है कि आपके विशाल राज्य में चोर एवं डाकुओं का प्रकोप बढ़ गया है। हमारे पास संपत्ति तो है परंतु हमारी जिंदगी एवं धन पूर्णतया असुरक्षित है। इसलिए हमारी विनती है कि चोरों एवं डाकुओं को पकड़वा कर हमारी सुरक्षा का प्रबंध कीजिए।"

राजा ने उनकी बात गंभीरता से सुन ली। परंतु उनके जाने के तुरंत बाद उसने अपने बेटों को बुलवाकर कहा, "हमारे राज्य में चोरों एवं डाकुओं का प्रवेश कैसे संभव हुआ? जबकि राज्य एवं प्रजा की रक्षा के लिए हमारे तीन बलशाली बेटे हैं? मैं तो बूढ़ा हूं और उनसे नहीं लड़ सकता। परंतु मुझे उम्मीद है कि तुमलोग उन्हें पकड़कर सजा दोगे और इस प्रकार उनके आतंक को खत्म करोगे।" तीनों राजकुमार राज्य एवं प्रजा की रक्षा के लिए अब कटिबद्ध थे। नगर के बाहरी सीमा पर एक चौकी बनाकर वे अपने घोड़ों के साथ उसमें रहने लगे। रात के पहले पहर सबसे बड़ा राजकुमार अपने घोड़े पर सवार पूरे नगर का चक्कर लगाता रहा। परंतु उसे किसी चोर-डाकू से पाला नहीं पड़ा और वह वापस चौकी पर आकर गहरी

नींद में सो गया। मध्य रात्रि में मझले राजकुमार की बारी थी। वह घोड़े पर सवार होकर नगर का चप्पा-चप्पा छानता रहा। उसने गलियों एवं नुक्कड़ों में भी चक्कर लगाया, परंतु चोर या डाकू का दरस भी नहीं मिला। वह भी चौकी पर वापस आकर सो गया। मध्य रात्रि के कुछ घंटों बाद सबसे छोटा राजकुमार पहरा देने निकला। वह राजमहल के पास पहुंचते ही ठिठक गया। महल के दरवाजे से बाहर एक दिव्य सुंदरी निकल रही थी।

राजकुमार ने उससे पूछा, "आप कौन हैं? इतनी रात गए आप राजमहल में क्यों आई थीं?"

"मैं राजलक्ष्मी हूं—एक परी। अब तक मैं इस महल की रक्षा कर रही थी। परंतु आज रात राजा की मृत्यु निश्चित है। इसलिए यहां मेरी आवश्यकता नहीं रही। और मैं महल छोड़कर जा रही हूं।" इस पर राजकुमार ने विनती करते हुए कहा, "हे सुंदर परी, राजलक्ष्मी! कृपया यहीं रहकर महल की रक्षा कीजिए। मैं वादा करता हूं कि आज रात राजा की मृत्यु नहीं होने दूंगा।" इस पर राजलक्ष्मी का उत्तर था, "मैं वापस आने का वचन देती हूं। पर यह तभी संभव है यदि आज की रात राजा की मृत्यु नहीं होती है। फिर भी अभी तो मुझे जाना ही होगा।" यह कहते ही वह रात के अंधेरे में विलीन हो गई।

राजकुमार तुरंत राजा के शयनकक्ष में दाखिल हुआ। वहां एक सोने के कोच पर राजा सोया हुआ था। बगल में ही एक अन्य बिस्तर पर उसकी दूसरी रानी सोई थी। मोमबत्ती की मद्धिम रोशनी पूरे कक्ष में फैली थी। उसके धुंधलके प्रकाश में राजकुमार ने राजा के बिस्तर के गिर्द कुंडली मारे एक विशाल सांप को देखा। चौकन्ना होकर उसने अपनी तलवार निकाली और उसे मार डाला। फिर देखते-देखते सांप के छटपटाते शरीर को सैकड़ों टुकड़ों में काट डाला। अब वह निश्चिंत था कि सांप मर चुका है। सारे टुकड़ों को एक तश्तरी में रखकर उसने तश्तरी को राजा के बिस्तर के पास रख दिया। परंतु सांप मारते वक्त उसके खून का एक बूंद रानी के हाथ पर जा गिरा जिसे राजकुमार ने सावधानीपूर्वक अपने रेशमी गुलुबंद से पोछ दिया।

राजकुमार वहां से निकल ही रहा था कि रानी ने अपने नर्म तकिये पर सिर हिलाया और उसकी आंखें खुल गई। कक्ष से बाहर निकलता राजकुमार उसे स्पष्ट दिख गया।

रानी तो बिल्कुल चिल्ला पड़ी, "हे महाराज, मेरे स्वामी! उठिए। जिस छोटे बेटे की आप इतनी तारीफ करते हैं, वह रात में हमारे कक्ष में आया था। और

जाते-जाते तो उसने मेरा हाथ चूम लिया। मैंने उसे देखा है। वह एक नालायक बेटा है, जो पिता के शयनकक्ष में दबे पांव आता है और अपने सौतेली मां का हाथ चूमता है।''

अगले दिन सुबह में राजा ने अपने बड़े बेटे को बुलवाकर पूछा, ''उस व्यक्ति को क्या सजा हो जिसे मैंने अपने मान एवं प्राण का रक्षक माना हो और वह विश्वासघात करे।''

राजकुमार ने सहजता से कहा, ''निस्संदेह उसका सर कलम कर दिया जाए। परंतु इससे पहले आप यह तय कर लें कि वह वाकई दोषी है।''

इस पर चौंककर राजा ने पूछा, ''क्या मतलब है तुम्हारा? क्या वह मेरे विश्वासघात का दोषी नहीं है?''

महाराज यदि सुनना पसंद करेंगे तो मैं एक कहानी सुनाता हूं जिससे मेरे कहने का आशय स्पष्ट हो जाएगा :

''बहुत पहले की बात है। एक सुनार था जिसकी एक सुंदर पत्नी थी। वह न केवल सुंदर थी बल्कि उसमें चिड़ियों एवं जानवरों की भाषा समझने की भी अद्भुत क्षमता थी। परंतु उसके पिता एवं भाई को भी इसकी भनक नहीं थी। एक रात जब वह अपने घर में पति के बगल में लेटी थी तो एक गीदड़ ने हुंआं-हुंआं करते हुए कहा, 'पास से गुजरती नदी में एक लाश बह रही है। यहां

कोई है जो उसकी अंगुली में से हीरे की अंगूठी निकाल ले एवं लाश मुझे खाने के लिए दे दे।'

सुनार की पत्नी गीदड़ की बात सुनते ही बिस्तर से उठकर नदी किनारे पहुंच गई। उसका पति अब तक जगा ही हुआ था। वह एक खास दूरी बनाए अपनी पत्नी का पीछा करने लगा। वह नहीं चाहता था कि उसकी पत्नी समझे कि उसका पीछा किया जा रहा है।

उस महिला ने मृत शरीर को घसीटकर किनारे कर लिया। परंतु लाश के फूल जाने की वजह से वह उसकी अंगुली से अंगूठी नहीं निकाल पा रही थी। इसलिए उसने दांत से काटकर अंगूठी निकाली और लाश को गीदड़ के सामने फेंक दिया।

अपनी पत्नी को लाश की अंगुली काटते देख सुनार तो भय से सिहर उठा। उसे अब पक्का विश्वास हो गया कि उसकी पत्नी डायन है। वापस आकर सुनार ने अपने पिता को आंखों-देखी घटना सुनाई। इस तरह बाप-बेटे दोनों ने उसे एक डायन घोषित कर दिया। सुनार ने कहा, 'पिताजी मैं एक डायन के साथ नहीं रह सकता हूं, भले ही वह सुंदर क्यों न हो। मैं उसे दूर जंगल में ले जाकर वहीं जानवरों के साथ रहने के लिए छोड़ दूंगा।'

अगले दिन सुनार ने अपनी पत्नी को बुलाकर कहा, 'प्रिये, आज मैं तुम्हें मैके ले जाऊंगा। तुमने बहुत दिनों से अपने माता-पिता को नहीं देखा है। वे भी तुम्हें देखने के लिए व्यग्र होंगे।'

उसके मैके का रास्ता घने जंगल के बीच से गुजरता था। वे जैसे ही जंगल से गुजर रहे थे सुनार की पत्नी ने एक सांप की बात सुनी, 'ऐ बटोही, मैं आपका बहुत ही आभारी रहूंगा यदि पास के बिल में टर्राते मेढ़कराज को पकड़कर मुझे निगलने के लिए दे दें। और बदले में उसी बिल को खोदकर अंदर से छिपा खजाना निकाल लें।'

सांप की फुफकार का अर्थ समझते ही सुनार की पत्नी ने मेंढक पकड़कर सांप के सामने फेंक दिया और एक छड़ी से उस बिल की गहरी खुदाई करने लगी। बिल के अंदर स्वर्ण मोहरों एवं अनमोल आभूषणों को देखकर तो वह आश्चर्य चकित रह गई। उसने अपने पति को वहां बुलाया और खजाने की थैली अपने ससुर के पास ले जाने के लिए दे दिया। फिर वह अपने पिता के घर की ओर चल पड़ी।

खजाने की थैली देखकर तो सुनार को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो
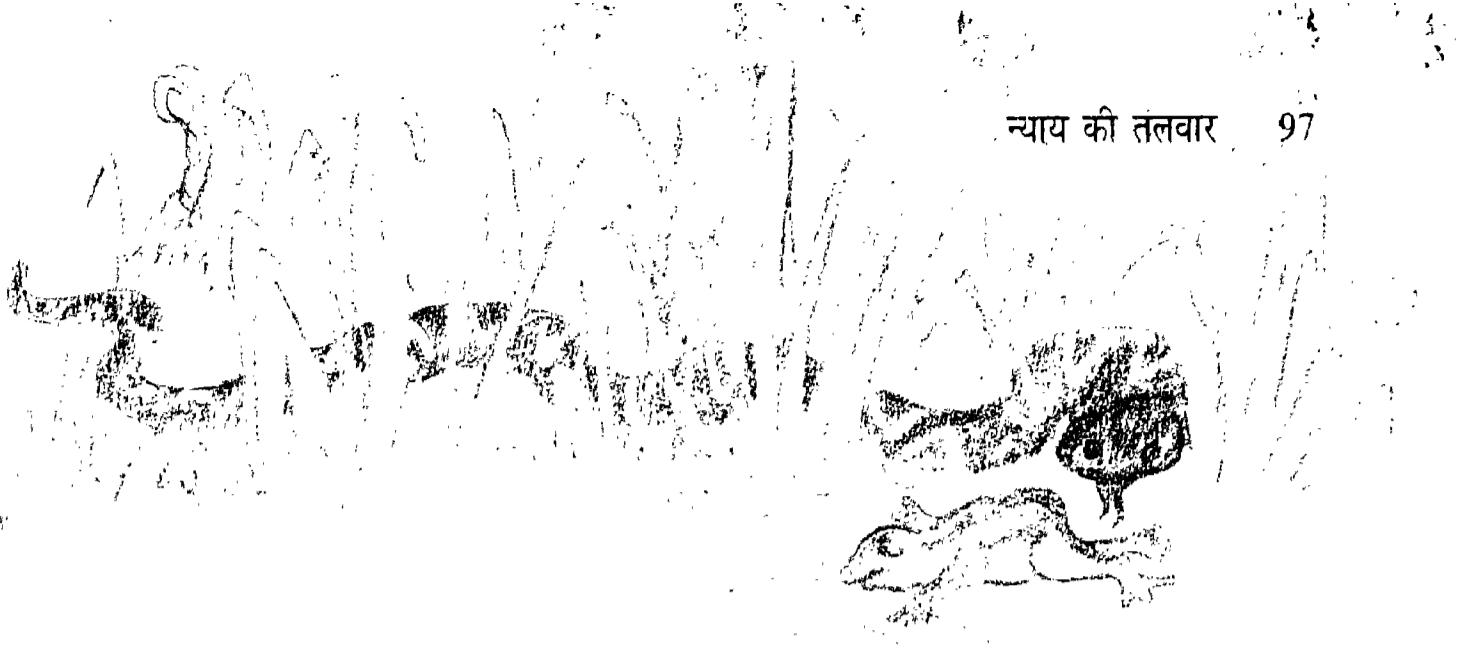
रहा था। एक सुनार होने की वजह से वह उसकी कीमत समझ रहा था। उसने पत्नी से पूछा, 'तुम्हें कैसे पता चला कि खजाना वहां छिपा था?' पत्नी ने राज खोलते हुए कहा, 'कोई नहीं जानता, मेरे माता-पिता भी नहीं, कि मैं पंछियों एवं जानवरों की भाषा समझती हूं। अभी सांप ने फुफकार कर मुझसे कहा था कि मैं मेढकराज को पकड़ कर उसे निगलने के लिए दे दूं और उस बिल के नीचे छिपे खजाने को निकाल लूं।'

यह सुनते ही सुनार की आंखें खुल गईं। उसे एहसास हुआ कि उसकी पत्नी तो दिव्य गुणों वाली है। इसलिए उसने अपनी पत्नी को योजनानुसार जंगल में छोड़ने की बजाय वापस अपने घर ले जाने का मन बना लिया।

घर वापस पहुंचते ही उसने अपनी पत्नी से कहा, 'प्रिये, तुम पिछवाड़े से प्रवेश करो। मैं अगले दरवाजे से अपने पिता की दुकान जाता हूं और तुम्हारे द्वारा प्राप्त खजाने को उन्हें दिखाता हूं।'

परंतु दुर्भाग्यवश अंदर घुसते ही सुनार

की पत्नी के सामने दरवाजे पर उसके ससुर खड़े थे। उसे अकेली वापस आया देख उनका माथा ठनका। अब चूंकि उन्हें पहले से पक्का विश्वास था कि वह एक डायन है सो उन्होंने सोचा कि उनके पुत्र को मारकर वह खा गई। आवेग में आकर उन्होंने हथौड़ा निकाला और दे मारा उसके सिर पर। निर्दोष महिला धड़ाम से धरती पर गिरी और शिथिल पड़ गई।

उसी क्षण खजाने का थैला लिए उसका पति अंदर आया। पर अफसोस! बहुत देर हो चुकी थी। बाप-बेटा दोनों फूट-फूटकर रोते रहे। उन्हें जीवन भर इसका पश्चाताप रहा कि जिस महिला ने उन्हें अनमोल खजाना दिया था, उन्होंने उसी निर्दोष को मार डाला—'इसलिए हे महाराज! किसी को सजा देने या मृत्युदंड देने से पूर्व यह निश्चित कर लीजिए कि वह वस्तुतः अपराधी है।'

अब राजा ने अपने दूसरे बेटे को बुलवाकर वही प्रश्न उससे भी पूछा। मझले राजकुमार का उत्तर था, "महाराज! एक व्यक्ति, जिसे आपने अपने सम्मान एवं जीवन का रक्षक बनाया, यदि विश्वासघात करे तो निस्संदेह उसका सर धड़ से अलग कर दिया जाए। लेकिन ऐसा करने से पहले आप निश्चित कर लें कि वह सही में अपराधी है।"

"तुम क्या कहना चाहते हो," राजा ने पूछा, "क्या वह मेरे विश्वासघात का अपराधी नहीं है?" इस पर राजकुमार ने कहा, "महाराज! यदि आप आज्ञा दें तो मैं एक कहानी सुनाता हूं। उससे मेरे कहने का अर्थ स्पष्ट हो जाएगा :

बहुतों दिन पहले एक राजा था। उसे जंगल में शिकार करने का बहुत शौक था। एक दिन वह अकेले दूर जंगल में निकल गया। वहां उसे प्यास सताने लगी। उसने पानी की तलाश में इधर-उधर, सब तरफ देखा। परंतु आसपास झील-तालाब तो क्या एक छोटी नाली भी नहीं थी। वह व्याकुल होकर एक पेड़ के नीचे बैठ गया। वहां उसने ऊपर से टप, टप की आवाज सुनी। राजा ने सोचा कि पेड़ की शाखाओं से बरसात का पानी टप-टप कर गिर रहा है। उसने एक प्याले में बूंद-बूंद कर उसे इकट्ठा कर लिया। अब वह उसे पीने वाला ही था कि उसका घोड़ा अपने पिछले टांगों पर खड़ा होकर प्याले को गिरा दिया। घोड़ा को खतरे का अहसास पहले से था। परंतु प्यास से परेशान राजा के गुस्से का ठिकाना नहीं रहा। उसने अपनी तलवार निकाली और एक झटके में अपने वफादार घोड़े को मार गिराया। परंतु जैसे ही राजा वहां से चला उसे पेड़ के ऊपर सांप की फुफकार सुनाई पड़ी। ऊपर देखते ही वह तो सन्न रह गया। वहां एक काला

भुजंग था जिसके विषदंत से जहर टपक रहा था। राजा के पास तो बस पछतावा बचा था। उसने तो अपने वफादार घोड़े को मार डाला था। यद्यपि उसी घोड़े ने राजा की जान बचाई थी। राजा वहां खड़ा हृदय पर हाथ रखे रोता रहा। उसे पता था कि इतना वफादार घोड़ा उसे फिर नहीं मिलने वाला है।'

इसलिए यह कहा जाता है कि किसी को सजा देने या मारने से पहले उसके अपराध को भली-भांति जांच लेना चाहिए।''

इसके बाद राजा ने अपने सबसे छोटे बेटे को बुलवाया। और उससे भी वही प्रश्न किया जो अन्य राजकुमारों से उसने पूछा था। तीसरे राजकुमार का भी जवाब था, ''हे महाराज, आपका विश्वास तोड़ने वाले की तो गरदन काट ली जानी चाहिए। परंतु पहले आप सुनिश्चित कर लें कि वह सही में दोषी है या नहीं।''

इस पर राजा ने पूछा, ''क्या कहना चाहते हो तुम? क्या वह मेरे विश्वासघात का दोषी नहीं है?''

अब राजकुमार ने विनीत के स्वर में कहा, ''महाराज, कृपया इस कहानी को सुनिए। इसमें मेरे कहने का तात्पर्य स्पष्ट होता है :

एक राजा था। उसके पास शुक नाम का एक अद्भुत, बोलने वाला तोता था। एक दिन वह उड़कर जंगल पहुंचा और वहां संयोगवश अपने माता-पिता से मिला। वे बहुत दिनों के बाद इकट्ठे हुए थे। इसलिए शुक की मां ने उसे दूर पेड़ की फुनगी पर बने उनके घोंसले में आकर कुछ दिन साथ रहने के लिए कहा। इस पर शुक बहुत खुश हुआ लेकिन उसने कहा कि राजा की अनुमति के बिना वह जा सकता, फिर भी अगली सुबह वह उनके साथ जाने के लिए तैयार रहेगा।

वापस आकर शुक ने राजा से कहा कि वह कुछ दिन अपने माता-पिता के साथ रहना चाहता है। राजा ने आधे मन से उसे जाने की आज्ञा दे दी। परंतु शुक सिर्फ दस दिन वहां रह सकता था, क्योंकि राजा उसे बेहद चाहता था। और शुक की लंबी जुदाई की बात वह सोच भी नहीं सकता था।

अगले दिन सुबह सवेरे शुक अपने माता-पिता के साथ पैतृक घोंसले की ओर उड़ चला। वहां तीनों पंछी एक साथ मजे में थे। वे दोस्तों एवं रिश्तेदारों के बीच भी जाते। लेकिन एक दिन शुक ने कहा, 'मेरे प्रिय मां और पिताजी, अपने घोंसले में आप लोगों के साथ रहने में बहुत मजा आया। लेकिन अब मुझे आपसे विदा लेना होगा क्योंकि राजा ने मुझे सिर्फ दस दिन की अनुमति दी थी। और आज दसवां दिन है।' हालांकि बच्चा से बिछुड़ने का गम शुक के माता-पिता को सताने लगा था, उन्होंने आपस में चोंच सटाकर राजा को एक उपहार देने का निर्णय लिया।

वे मीलों उड़कर फूल से भरे उद्यानों एवं हरे-भरे खेतों के पार पहुंचे। वहां से वे अमरत्व के पेड़ का एक फल ले आए। शुक को वह फल देते हुए उसकी मां ने कहा, 'शुक, इस फल को सावधानी पूर्वक ले जाकर राजा को देना। यह अमरत्व के पेड़ का फल है। राजा यदि इसे खा लेगा तो वह कभी नहीं मरेगा।'

अगले दिन सवेरे जब पंछियों ने प्रातः गीत गाना प्रारंभ किया तो शुक वापस महल की ओर उड़ चला। लेकिन फल के भारी होने की वजह से शुक रास्ते में ही थक गया। और एक पेड़ की शाखा में रैन बसेरा कर लिया। उस फल को कहां रखा जाए, वह नहीं समझ पा रहा था। यदि वह फल को चोंच में दबाकर रखता तो उसे डर था कि नींद आते ही फल गिर जाता। शुक फल रखने की जगह तलाश रहा था कि उसकी नजर पेड़ के तने में बनी एक बिल पर पड़ी। उसने वहीं उस फल को छिपा दिया। लेकिन शुक को इस बात की भनक भी नहीं थी कि वह एक जहरीले सांप का बिल था। सांप फल को देखते ही उस पर लपका और अपने विषदंत गाड़कर पूरे फल को जहरीला बना दिया।
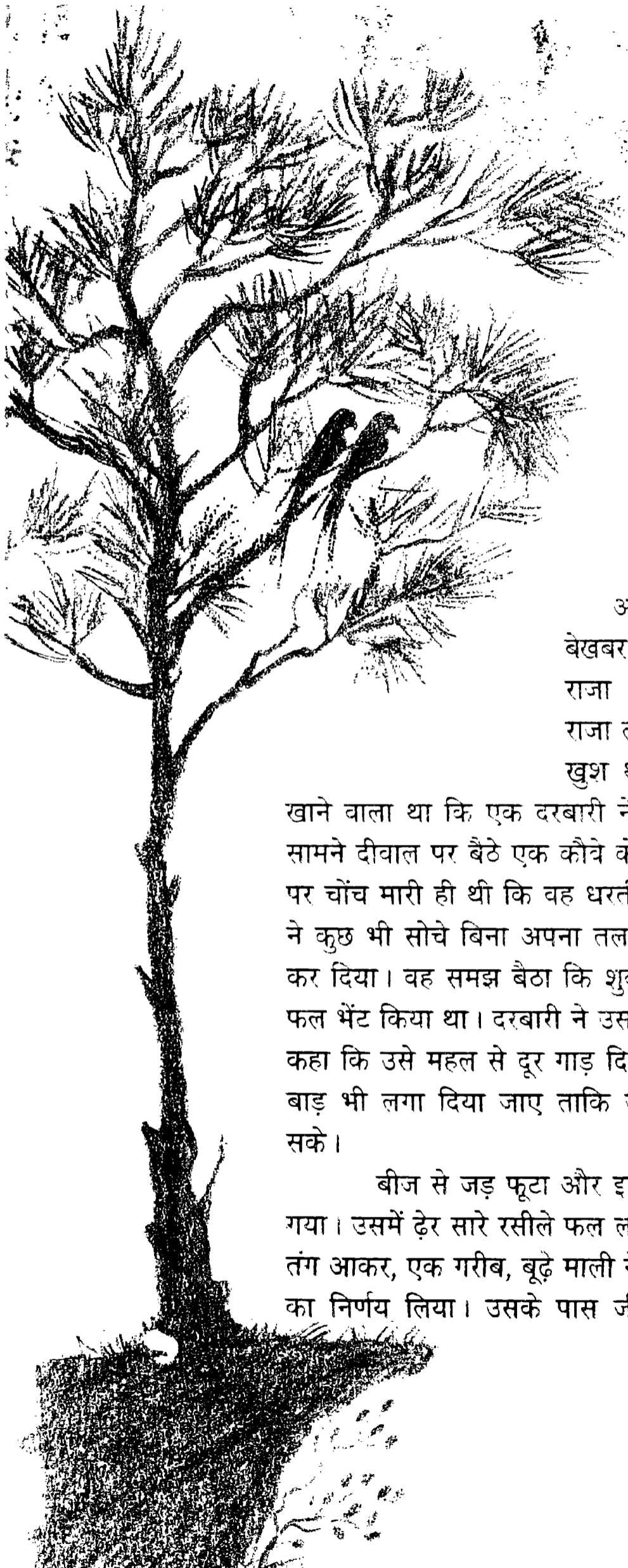
अगले दिन सुबह इन बातों से बेखबर शुक वापस राजमहल पहुंचा। और राजा को वह फल भेंट कर दिया। राजा तो शुक के वापस आने पर बहुत खुश था। वह जैसे ही उस फल को खाने वाला था कि एक दरबारी ने राजा के हाथ से उसे छीनकर सामने दीवाल पर बैठे एक कौवे के पास फेंक दिया। कौवे ने फल पर चोंच मारी ही थी कि वह धरती पर गिरा और मर गया। राजा ने कुछ भी सोचे बिना अपना तलवार निकाला और शुक का वध कर दिया। वह समझ बैठा कि शुक ने उसे मारने के लिए ही यह फल भेंट किया था। दरबारी ने उस फल के बीज माली को देते हुए कहा कि उसे महल से दूर गाड़ दिया जाए। और उसके चारों ओर बाड़ भी लगा दिया जाए ताकि जहरीले फल को कोई नहीं खा सके।

बीज से जड़ फूटा और इस प्रकार एक सुंदर पेड़ खड़ा हो गया। उसमें ढ़ेर सारे रसीले फल लगे। एक दिन बदहाल जिंदगी से तंग आकर, एक गरीब, बूढ़े माली ने उस पेड़ के एक फल को खाने का निर्णय लिया। उसके पास जीने का कोई साधन नहीं था।

इसलिए वह मर जाना चाहता था। उस रात वह एक फल खाकर इस विश्वास से सो गया कि अगला दिन देखने के लिए वह कभी नहीं उठेगा। लेकिन सुबह जब उसकी आंखें खुलीं तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। वह एक तंदुरुस्त जवान आदमी की तरह दिख रहा था और महसूस कर रहा था। उसकी झुर्रियां गायब थीं। उसके भूरे बाल काले हो गए थे। काले कौवे के पंखों से अधिक काले।

उसी दिन शाम को राजा बागीचे में सैर के लिए गया। वहां उसने एक सुंदर नौजवान को पानी पटाते देखा। राजा ने अचंभित होकर उससे पूछा कि वह कौन है। इस पर नौजवान ने कहा, 'महाराज, मैं आपका वही पुराना माली हूं जिसने वर्षों से आपकी सेवा की है। अपनी जिंदगी से तंग आकर मैंने एक निषिद्ध फल खा लिया ताकि इससे छुटकारा मिले। परंतु मुझे अचंभा तो तब हुआ जब जगने पर मैंने खुद को एक तंदुरुस्त नौजवान की तरह पाया।'

इतना सुनते ही राजा दुःख से मूर्च्छित हो गया। उसने तो प्यारे शुक को मार दिया था। वही शुक जो राजा का मनवांछित उपहार—अमरत्व का उपहार, लेकर आया था।"

यह कहानी सुनाने के बाद छोटे राजकुमार ने बात इस प्रकार आगे बढ़ाई, "महाराज, मैंने जो किया है वह अब कबूल करूंगा। रात में पहरा देते समय मैंने महल के दरवाजे से एक दिव्य सुंदरी को बाहर जाते देखा। मैंने उसका परिचय पूछा। उसने कहा कि वह राजलक्ष्मी है—इस महल की रक्षा करने वाली परी। और वह महल छोड़कर जा रही थी क्योंकि उसी रात राजा का देहांत होना लिखा था। मैंने उसे रुक जाने की विनती की और वादा किया कि राजा को मरने से बचा लूंगा। परंतु वह अंतर्धान हो गई। मैं तुरंत आपके कक्ष में पहुंचा। वहां एक विशाल सांप आपके बिस्तर के पास कुंडली मारकर बैठा था। मैंने उसे मार दिया और उसके शरीर के सैकड़ों टुकड़े कर डाला। सांप को मार डालने के बाद मैं निश्चिंत हो गया था। फिर उसके टुकड़ों को सोने की थाल में रखकर आपके बिस्तर के स रख दिया। परंतु सांप पर वार करते समय उसका एक बूंद खून रानी के हाथ पड़ा, जिसे मैंने अपने रेशमी गुलुबंद से पोछ दिया। उसके बाद जैसे ही मैं चलने हुआ कि रानी की आंखें खुल गई और उन्होंने मुझे देख लिया। शायद यही नह है कि महाराज समझते हैं कि मैंने विश्वासघात किया है। और यदि ऐसा है मुझे महाराज अपने तलवार से मार डालें। लेकिन महाराज की तलवार न्याय ो तलवार हो क्योंकि अपराध कभी भी सुकर्म नहीं हो सकता और असत्य की परिणति सत्य में कभी नहीं हो सकती है।"

राजा कृतज्ञ होकर अपने बेटे को गले लगाया। और अपना राज्य सौंपकर उसे मुकुट पहनाते हुए कहा, "मैं तुम्हें अपना राज्य और राजमुकुट सौंपता हूं। परंतु ध्यान रहे कि सूर्यनगर का राजा बनकर तुम्हें मेरे राज्य एवं प्रजा को सुरक्षित रखना होगा। इससे तुम्हारा मान-सम्मान बना रहेगा। तुम जब भी अपनी तलवार का इस्तेमाल करना वह न्याय की तलवार ही हो।"

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल
मुंद गईं फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।